Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन ज्ञान

०३८ [मासिक] मार्च—अ
चैत्र

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वर्गीय श्रीमती सत्या सेठ : कर्मठ सामाजिक कार्यकर्त्ता व भारतीय जनसंघ के मंत्री श्री श्यामसुन्दर सेठी की धर्मपत्नी का अंतिम चित्र जो ६ जनवरी १९८२ को खींचा गया। वे स्वयं भी यह चित्र न देख सकीं और ५-२-८२ को इस लोक से एक क्षण में ही विदा हो गयीं।

—सम्पादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बलिदान की तैयारियां

एक रात : हवालात में

जन-ज्ञान के पाठकों को यह जानकर विस्मय होगा कि प्रशासन ने मुस्लिम तुष्टीकरण के लिए २१ फरवरी की रात्रि को ६ बजे दयानन्द संस्थान की अध्यक्ष पंडिता राकेशरानी को 'इस्लाम क्या है ?' नामक पुस्तक के लेखन व प्रकाशन के अपराध में गिरफ्तार कर लिया और रात भर दरियागंज हवालात में बन्द रखा। पुस्तक की १ हजार प्रतियां भी पुलिस उठा ले गयी।

मुस्लिम क्षेत्रों में पोस्टर-नारे-जलूस द्वारा वातावरण विषाक्त किया जा रहा है। दयानंद संस्थान की रक्षा के लिए सशत्र पुलिस नियुक्त है।

घटनाचक्र तेजी से चल रहा है। मुस्लिम धर्मांधता क्या क्या रंग लाती है ? देखते जाइये।

छपते-छपते : तीसरा अभियोग दायर

दिल्ली—४ मार्च। अभी-अभी ज्ञात हुआ है कि प्रशासन ने पंडिता राकेशरानी पर तीसरा केस क्राइम ब्रांच द्वारा धारा २९५ए के अन्तर्गत दायर किया है। स्वतंत्र भारत में यह सम्भवत: पहला अवसर है जब एक माह में तीन केस किसी धार्मिक महिला पर देशभक्ति के अपराध में चलाए गए हों। सोचिए आपका कर्तव्य !

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस अंक में पढ़िये !

१. बलिदान की तैयारियां : एक रात हवालात में — १
२. प्यार की राह—राकेशरानी — ३
३. उपदेश : मां का — ४
४. सम्पादकीय — ५
५. मैं हृदय मन्दिर से लिख रहा हूं—वेदभिक्षुः — ११
६. धर्ममेघ (वेदोपदेश)—स्व० पं० चमूपति — १५
७. ऐतिहासिक लड़ाई का पहला अध्याय—दिनेश एम. एससी. — १७
८. मुसलमानों द्वारा पं० राकेशरानी के विरुद्ध दिल्ली में लगाये गये पोस्टर — २०
९. सामायिक विचार—सत्यपाल शास्त्री — २५
१०. आप ही के पत्र — २८
११. राज्यपाल : लकड़ी की तलवार—कुमार प्रशान्त — ३३
१२. धन से शान्ति नहीं—स्व० महात्मा आनन्द स्वामी — ३८
१३. आठ करोड़ हरिजनों को मुसलमान बनाने का षड्यन्त्र—कुलदीप नैयर — ४६
१४. देश, धर्म व हिन्दू समाज को आर्यसमाज की देन—दत्तात्रेय वाव्ले — ५[illegible]
१५. उपनिषदों की कथाएं—महात्मा नारायणस्वामी — ५५
१६. हकीकत के बलिदान की गौरव गाथा—चमनलाल क्षत्रिय — ७२
१७. वेदः निर्वचन पद्धति का आदि स्रोत—प्रो० मनुदेव बन्धु — ७५
१८. गीता की समत्वदृष्टि—डा० कृष्णलाल — ७७
१९. मुस्लिम साम्प्रदायिकता का असली चेहरा—जहीर नियाजी — ८१
२०. कुम्भ का प्रसाद—स्व० महात्मा आनन्द स्वामी — ८७
२१. भारत में विदेशी मुस्लिम षड्यन्त्र—कैप्टन देवरत्न आर्य — ९४
२२. टांसिल का इलाज—स्वास्थ्य चर्चा — ९६
२३. प्रश्न हिन्दुओं के अस्तित्वरक्षा का है—डा० राजेश्वर — ९९
२४. वैदिक वर्ण व्यवस्था जात-पांत से नहीं—सुनीता आर्या — १०२
२५. हिन्दू समाज शिकंजे में—प्रो० रामसिंह — १०३
२६. सत्यार्थ प्रकाश का महत्त्व—शिवराजवती आर्य — १०६
२७. दयानन्द संस्थान के विरुद्ध ब्लिट्ज की बौखलाहट—रपट — १०९
२८. समाज सेविका स्व० सत्या सेठ को हिन्दू नेताओं की श्रद्धांजलि — ११२

चश्मा-घड़ी तक उतरवा ली

२१ फरवरी की रात्रि को जब मुझे धोखे से रात्रि में गिरफ्तार कर दरियागंज हवालात में रखा गया तो पुलिस ने मेरी घड़ी तक ले ली। चश्मा भी नहीं दिया।

यह सारा नाटक मुसलमानों की मांग पर—उन के पोस्टर निकालने पर हुआ।

मुझे शैतानसिफ्त औरत लिख कर पोस्टर निकाले गए, किन्तु किसी भी भाई को लज्जा न आयी।

सोचती हूं यह युद्ध अकेले ही लड़ना होगा क्योंकि भाई कायर हैं और नेता अवसरवादी।

क्या कोई हिन्दू किसी मुसलिम महिला का अपमान करे तो उसे मुसलमान सहन करेंगे ?

काश कि हमारे भाइयों में भी जीवन होता।

—राकेशरानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्पादक
राकेशरानी
★
दूरभाष : ५६२६३६
५६४७४१
८०१२११
पता :
करौलबाग,नई दिल्ली-११०००५
वार्षिक शुल्क : २५ रुपए
विदेश में ६ पौंड : विमान से
३ पौंड : समुद्री डाक से
आजीवन : ५०१ रुपये
यह प्रति : २ रु० २५ पैसे
चैत्र संवत् २०३९
वर्ष १३ : अंक ११

प्यार की राह

हम प्यार की राह के पथिक हैं। यही प्यार हमें किसी को भी असत्य की राह पर चलने से रोकने की प्रेरणा करता है।

कोई आत्महत्या कर रहा हो तो उसे रोकना, कोई अज्ञान मार्ग पर चले तो उसे समझाना, कोई मृत्यु को गले लगाए तो उसे हटाना, प्यार के बिना संभव नहीं।

ऋषि दयानन्द प्यार के देवता थे। शहीद लेखराम का हृदय प्यार से भरा था, इसीलिए उन्होंने छुरा खाया पर प्यार बांटते रहे। श्रद्धानन्द का प्यार उन्हें शहीद बना गया।

इस्लाम और ईसाइयत की हमारी आलोचना द्वेष से नहीं, प्यार से प्रेरित है। मनुष्य-मनुष्य बने, यह हमारा लक्ष्य है। हम चाहते हैं कि मानव योनि में रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति धर्म-सत्य-न्याय-नैतिकता की राह पर चले।

इस्लाम की सब से बड़ी दुर्बलता यह है कि वह अपनी आलोचना सहन नहीं करता। विचार भेद का उनके चिन्तन में कोई स्थान है ही नहीं। किन्तु हम तो सदा से ही विचारों में आदान-प्रदान, आलोचना-प्रत्यालोचना को तर्क की संज्ञा देकर विवेक के बल पर बढ़ते आए हैं।

इस्लाम का धर्म ग्रंथ क्या कहता है, यह विवाद से परे है किन्तु इस्लाम का इतिहास तो इस बात की प्रत्यक्ष पुष्टि कर रहा है कि विचार भेद का परिणाम मृत्यु है।

हम मरने को तैयार हैं पर प्यार छोड़ने को तत्पर नहीं। सत्य के लिए प्राण देना भारत की परम्परा रही है, और हमें भी इस के लिए यदि अर्घ्य चढ़ाना पड़ा तो इस से बढ़कर गर्व की बात और क्या होगी!

मेरे भाई! आप अपना कर्त्तव्य सोचिए, हम तो अब राह बदलने को तैयार नहीं।

—राकेशरानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उपदेश : माँ का...

जीओ और जीने दो !

भाइयो और बहनो,

आज शक्तिशाली दूसरे को जीवित नहीं रहने देना चाहता। अपनी बात न मानने पर विरोधी को समाप्त कर देने की प्रवृत्ति उभर रही है। यह सभी आसुरी दर्शन की प्रेरणा से हो रहा है।

वेद धरती पर बसे सभी मानवों को समान समझता है। वह सभी को जियो और जीने दो का दर्शन देता है। वेद कहता है—(विश्वा वसूनि) संसार के सब वैभव हम धारण करें। सब को इन वसुओं का आस्वादन कराएं।

वेद कहता है —

सोम रारन्धि नो हृदि गावो न यवसेष्वा।
मर्य इव स्व ओक्ये॥ १। ९१। १३॥

भावार्थ इस प्रकार है —हे जगदीश्वर ! जैसे गौ आदि पशु अपने खाने योग्य घासादि पदार्थों में उत्साहपूर्वक रमण करते हैं और मनुष्य अपने घरों में आनन्द से रहते हैं। ऐसे ही भगवन् ! आप मेरे हृदय में रमण करें अर्थात् मेरी आत्मा में प्रकाशित होवें, जिससे मैं आपको यथार्थ रूप से जानता हुआ अपने जन्म को सफल बनाऊँ।

प्रभु हृदय में विद्यमान होंगे तो मनुष्य देव बनेगा। प्रभु दूर होंगे तो आसुरी शक्तियां मानस में विराजेंगी। इसीलिए तो कहा है कि—

रहे सदा उस के पास तू,
तुझे सब कुछ स्वयं मिल जाएगा।

प्रभु से मिलना कितना आनन्दप्रद है। कितना मनहर है, इसे वही जान सकता है जो कभी उससे मिला हो। वह देता ही है—लेता है केवल दुर्गुण। उस के पास रहने से अंधकार-अज्ञान समाप्त हो जाता है।

आप कभी उस के समीप बैठे हैं ? प्रभु का नाम लेना और बात है। प्रभु को जानना और बात है पर उसके समीप बैठना कुछ और ही है। वह जीवन है, आनन्द है, प्यार है और है अमृत का भण्डार।

उसके दीप जलेंगे तो मन उभरेगा, हम भी जीने का मार्ग जानेंगे और औरों को भी जीने की राह बताएंगे। आप एक बार उसके पास बैठने का प्रयत्न तो कीजिएगा आप ज्योतिर्मय बन जाएंगे।

—राकेश रानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्पादकीय

हम क्यों लड़ रहे हैं ?

आजादी की लड़ाई के बाद जब भारत मां के टुकड़े हुए तब उसका आधार यह था कि हिन्दू और मुसलमान दो अलग-अलग राष्ट्र हैं और दोनों एक साथ नहीं रह सकते। मुसलमानों ने जहां-जहां उनका बहुमत था, वहां-वहां पाकिस्तान बनाने के लिए आन्दोलन किया, दंगे किये और कांग्रेस के नेताओं ने खून-खराबा रोकने की भावना से पाकिस्तान मान लिया। पाकिस्तान मानने का अर्थ था कि हमने यह स्वीकार कर लिया कि हिन्दू और मुसलमान एक साथ मिलकर नहीं रह सकते।

मुसलमानों का अपना देश पाकिस्तान बन गया तो जो शेष बचा (जिसे भारत कहा जाता है) वह स्वतः हिन्दू देश हो गया। किन्तु हमारे नेताओं की दुर्बल नीति और वोटों की राजनीति ने धीरे-धीरे फिर उन्हीं शक्तियों को बढ़ावा देना आरम्भ किया, जिन्होंने पाकिस्तान को जन्म दिया था।

कौन इनकार कर सकता है कि मुसलमानों ने भारत मां के टुकड़े कराये? कौन झुठला सकता है कि मुसलमानों द्वारा हजारों नहीं लाखों हिन्दुओं का खून बहाया गया था? औरतें, बच्चे, बूढ़े, गरीब, अमीर किसी का भी लिहाज़ न कर जिस तरह से बसे-बसाये घरों को उजाड़ने का शर्मनाक काम मुसलमानों द्वारा हुआ, क्या वह इस बात का प्रमाण नहीं कि मुसलमान कभी भी हिन्दू के साथ मिलकर नहीं रह सकता? पाकिस्तान बनने के बाद, बंगलादेश और पाकिस्तान में क्या कोई भी हिन्दू सम्मानपूर्वक रह सका? इन प्रश्नों का उत्तर क्या हमारे नेता दे सकेंगे? भारत को पाकिस्तान से चार युद्ध लड़ने पड़े। क्या उनमें ९० प्रतिशत भारतीय मुसलमानों का हृदय पाकिस्तान के साथ नहीं था?

क्या पाकिस्तान की हाकी टीम की जीत पर भारतीय मुसलमानों ने मिठाई नहीं बांटी? क्या संजय गांधी के मरने पर अधिकतर मुसलमान खुशी से नाच नहीं उठे थे? क्या १९८० में दिल्ली में मुसलमानों ने तिरंगे झंडे नहीं जलाये? क्या मुरादाबाद में मुसलमानों ने भारत की पुलिस पर आक्रमण नहीं किया? क्या मक्का की मस्जिद में मुसलमानों द्वारा ही उपद्रव करने पर हैदराबाद में हिन्दुओं की दूकानें नहीं फूंकी गयीं? क्या यह सारी स्थिति इस बात की सूचक नहीं कि मुसलमान फिर से एक नया पाकिस्तान बनाने की तैयारी कर रहे हैं? विधि द्वारा निर्मित सरकार को उलटने का षड्यन्त्र कर रहे हैं?

और ऐसा वे सब मजहब के नाम पर कर रहे हैं। इसलिए क्या यह सच्चाई नहीं है कि उनका मजहब ही उन्हें भारत मां के प्रति गद्दारी करने की प्रेरणा दे रहा है? सच कहने पर हमारी सरकार मुसलमानों को खुश करने के लिए

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हमें रात को छापा मारकर डाकुओं की तरह गिरफ्तार कर सकती है, लेकिन क्या सरकार में यह हिम्मत है किसी मुसलमान नेता को इस तरह गिरफ्तार करे? हमारा अपराध केवल इतना है कि हम भारत सरकार, भारत की आजादी, भारत की संस्कृति, धर्म और एकता को बचाने के लिए आवाज उठा रहे हैं। अगर सरकार की दृष्टि में यह अपराध है, तो हम इस अपराध को करते रहेंगे—चाहे इसके लिए एक बार नहीं, दो बार नहीं, हजारों बार भी गिरफ्तार क्यों न होना पड़े।

आज आवश्यकता इस बात की है कि मुसलमान अपने को बदलें और अपने मजहब को अपने घर तक या मस्जिदों में नमाज तक सीमित रखें। इस पर हमें कोई आपत्ति नहीं। लेकिन अगर वे अपने मजहब के नाम पर हिन्दुस्तान में फिर से पुराने इतिहास को दोहराना चाहते हों, तो मुझे कहना है कि भारतवर्ष का हिन्दू अब इसे किसी भी मूल्य पर सहन नहीं करेगा। हमारा पहला लक्ष्य भारत मां की रक्षा है। हमारा अन्तिम लक्ष्य भारत की रक्षा है। हम मुसलमानों की पुरानी चालों को कामयाव नहीं होने देंगे।

इसके लिए जितने भी बलिदान देने पड़ें, हम देंगे। विश्वास है कि देश की ९० प्रतिशत देशभक्त जनता हमारा साथ देगी और वह सांप्रदायिकता का जहर जिसने पाकिस्तान को जन्म दिया था, जड़-मूल से मिटा दिया जायेगा। अब देश के और टुकड़े नहीं होंगे—यह विश्वास ही हमारी विजय का कारण बनेगा।

हमारी स्थिति

२१ फरवरी को दिल्ली में मुसलमानों ने एक पोस्टर लगाया और उसी दिन रात को मेरी गिफ्तारी हुई। जो पोस्टर मुसलमानों ने लगाया था और जो मेरी गिरफ्तारी के बाद लगाया, उन दोनों पोस्टरों के चित्र (रूपान्तर सहित) आप इस अंक में पढ़ेंगे। मुसलमानों की सरगर्मियां जारी हैं और इस समय भी दयानन्द संस्थान की रक्षा के लिए सी० आर० पी० की टुकड़ियां तैनात हैं।

हमें किसी प्रकार का भय नहीं है और जब तक हम जीवित हैं या हममें शक्ति है, हम अपना कार्य करते रहेंगे। किन्तु क्या आपका कोई कर्त्तव्य नहीं बनता? राजधानी की हिन्दू जनता सोई हुई है। हिन्दू नेता भी भाषणों से आगे कुछ करने को तैयार नहीं। ऐसी स्थिति में किया क्या जाये? इस पर आपके सुझाव आमंत्रित हैं। क्या करना चाहिए और आप किस प्रकार हमारी सहायता कर सकते हैं, यह आप स्वयं सोचिए। आपका जो भी निर्णय हो, हम उसी के बल पर आगे बढ़ने का प्रयत्न करेंगे। स्थिति बहुत तेजी से बिगड़ रही है। सांप्रदायिकता का जहर फिर सिर उठा रहा है। चाहिए तो यह था कि जो सरकार हमेशा सांप्रदायिकता का विरोध करने को कहती है, वह इस्लामिस्तानी सांप्रदायिकता को कुचलने में सक्षम होती, किन्तु सम्भवतः सरकार की दृष्टि में सांप्रदायिक केवल हिन्दू हैं, मुसलमान नहीं।

मुसलमानों को दंगे करने की, लड़कियां उठाने की, सरकार को गालियां देने की, हिन्दुओं को मारने की खुली छूट है। और बेचारा हिन्दू केवल रोटी कमाने में अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझता है और हिन्दुओं के नेता हर संकट में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

केवल धनसंग्रह की योजनाएं बनाकर नारे दे सकते हैं, पर काम नहीं कर सकते। जो कार्य दयानन्द संस्थान के सहयोग से हिन्दू रक्षा समिति ने एक वर्ष में किया, वह आपके सामने है। आज भी हम आगे बढ़ने का प्रयत्न कर रहे हैं। हमारा अभियान तो रुकेगा नहीं, लेकिन जो यज्ञ हमने शुरू किया है, क्या आप भी उसमें आहुति देकर लक्ष्य पूर्ति के लिए सहयोग दे सकेंगे? अपना कर्त्तव्य सोचिये और जहरीले सांप्रदायिक सांपों का फुंकारता फन कुचलने के लिए आगे आइये। मृत्यु तो आयेगी ही, किन्तु कायरों की तरह मरने से रणभूमि में मरना क्या अधिक श्रेयस्कर नहीं होगा।

अन्तिम परीक्षा

देश की ही नहीं—अन्तरराष्ट्रीय मुस्लिम शक्तिऔर संगठन हमें समाप्त करने की योजना बना चुके हैं। हत्या तों उनके लिए साधारण बात है। इसके साथ ही जो अभियान हम ने चलाया है, उसे भी समाप्त करने के लिए प्रबल प्रहार हो रहे हैं।

हमारी यह अंतिम परीक्षा है। यह संकट निकल गया तो विजय हमारी ही होगी। इसमें हम हार गए तो फिर उभरना कैसे होगा? जीत या हार आप पर निर्भर है। हम साधन-विहीन हैं पर हमारी साधना आप के समक्ष है। हमारे कार्य आपके समक्ष हैं। दो माह में तीन बार गिरफ्तारी हो चुकी। अभी और क्या-क्या होता है, भगवान् ही जानता है।

जन-ज्ञान के सदस्य सदा हमें आशीर्वाद देते रहे हैं। आज भी मैं आप के सहयोग बल पर ही आगे बढ़ने का संकल्प लेकर चल रही हूं। चिन्ता शत्रुओं की नहीं—चिन्ता उनकी है जो हिन्दुओं के नेता हैं, पर हर संकट में कायरों की तरह वगलें झांकते हैं।

आप सत्य और असत्य में भेद कीजिए। काम अधिक और बातें कम। भूखे रहकर भी अपने को हिन्दू सैनिक समझ जागरण का शंख फूंकें। हम किसी पर आक्रमण नहीं करना चाहते, पर यदि कोई भारत की आजादी, एकता, धर्म और संस्कृति पर प्रहार करेगा तो हम उसे समाप्त करने के लिए अपने प्राणों की आहुति देने में भी पग पीछे नहीं हटायेंगे। सभी समझ लें कि अभी ऐसी शक्ति धरती पर उत्पन्न नहीं हुई, जो हमें मिटा सके।

चुनौती पूरे हिन्दू समाज को

अंतरराष्ट्रीय इस्लामी षड्यन्त्रों की चुनौती हमने स्वीकार की। हमने शंख बजाया और वे रो पड़े। चीख उठे, उन्होंने अब हमें समाप्त करने की घोषणा कर दी है।

हमें समाप्त करने के लिए देशद्रोही तत्त्व तैयारी कर चुके हैं। हम मृत्यु वरण के लिए तैयार हैं—पर क्या भारत के ६० करोड़ देशभक्त, इस चुनौती को अपने ऊपर प्रहार अनुभव करेंगे?

२१ फरवरी से आज ४ मार्च ८२ तक सशस्त्र पुलिस के जवान हमारी रक्षा कर रहे हैं, पर क्या इससे बड़ा कलंक भारत की प्रबुद्ध जनता के लिए और कुछ हो सकता है कि धर्मयुद्ध में बहन की रक्षा के स्थान पर भाई सोते रहें।

बातें करना, भाषण देना, झूठी घोषणाएं करना बहुत सरल है। पर काम करना—तलवार की धार पर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चलना है। हमारे काम का इससे बड़ा प्रमाण और क्या होगा कि विरोधी चिल्ला पड़े हैं।

'इस्लाम क्या है ?' की १००० प्रतियां पुलिस ले गयी। उसमें जो कुछ भी हमने लिखा है क्या यह उसका प्रमाण नहीं कि इस्लाम के अनुयायी तर्क से नहीं तलवार से बात करना जानते हैं।

देश की जनता, शासन, नेता सभी समझ लें कि चुनौती स्वीकार करने का अर्थ मृत्यु या विजय वरण ही होता है। भारत में—अपने भारत में देशद्रोही तत्त्वों को मिटाने का संकल्पय दि अपराध है, तो हमें यह अपराध करने से कोई रोक नहीं सकता।

नगाड़े तो बज उठे हैं, कायर सोते रहें और वीर हमारे साथ आएं। लेखराम-राजपाल-श्रद्धानन्द की परम्परा को एक बार और आगे बढ़ने दो। ओ३म् की लहराती ध्वजा को झुकाने वालों से टकराना हमने स्वीकार किया है—इस विश्वास के साथ कि भारत वसुन्धरा अभी वीरविहीन नहीं हुई है।

विजय के लिए आप को जगा रही हूं, उठा रही हूं। आगे नहीं चल सकते तो पीछे तो आइए !

मेरी पुनः गिरफ्तारी

पहली बार अक्टूबर १९८१ के जन-ज्ञान में प्रकाशित एक कविता के प्रकाशन के अपराध में मुझे गिरफ्तार हुए एक माह बीता भी न था कि २१ फरवरी को लगभग ५ बजे जब मैं वेद-मंदिर से करौलबाग पहुंची तो देह टूट रही थी। एक जगह जाना भी था पर मैंने टेलीफोन पर क्षमा मांग ली। इतने में पटना से कुछ सज्जन आ गए। उनसे बात कर ही रही थी कि करौलबाग थाने के एस. एच. ओ. श्री सरदार बलजीतसिंह जी अपने २-३ सहयोगियों के साथ कार्यालय पहुंचे।

उन्होंने 'इस्लाम क्या है ?' नामक पुस्तक के बारे में चर्चा की और कार्यालय में रखी १००० प्रतियां अपने कब्जे में ले लीं। वे अपने उच्च अधिकारियों से वार्ता करते रहे। समय बीतता गया और तभी बिजली चली गयी। जामा मस्जिद क्षेत्र के एस. एच. ओ. श्री चौ० रछपाल सिंह जी भी आ चुके थे। बाहर वायरलैस के साथ पुलिस की अनेक गाड़ियां थीं। हमारे वकील श्री देवकीनन्दन जी एडवोकेट बार-बार पूछ रहे थे कि क्या आप इन्हें गिरफ्तार करना चाहते हैं ? हर बार यही उत्तर मिलता था कि नहीं, हम केवल जांच कर रहे हैं।

बिजली चली जाने पर पुलिस अधिकारी बोले कि आपसे असिस्टेंट पुलिस कमिश्नर बात करना चाहते हैं। यदि आप थाने में चलने की कृपा करें तो सुविधा रहेगी, क्योंकि यहां बिजली नहीं है। हमने फिर पूछा कि यदि गिरफ्तार करना हो तो सामान ले लें ? लेकिन उन्होंने इनकार किया और कहा कि अभी १५ मिनट में छोड़ जाएंगे।

हम लोग थाने पहुंचे। वहां जाते ही उन्होंने सूचना दी कि आपको गिरफ्तार कर लिया गया है। हमारे बहुत आग्रह पर भी आवश्यक वस्तुएं घर से उठाने की अनुमति नहीं दी गयी। रात भर थाना दरियागंज में हवालात में रखा गया। मेरा चश्मा तक ले लिया गया।

वैसे करौल बाग—जामा मस्जिद दोनों के थाना अध्यक्षों का व्यवहार अत्यन्त भद्र था। पुलिस कर्मचारी भी बहुत नम्र थे। पर शायद ऊपर के आदेश

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के प्रभाव में रात को गिरफ्तार करना उनकी लाचारी थी।

जैसी मुझे सूचना मिली, मुस्लिम क्षेत्रों में मेरे विरुद्ध राकेशरानी मुर्दाबाद, इन्दिरागांधी मुर्दाबाद के नारे लगाए जा रहे थे। अशिष्टता पूर्ण पोस्टर लगे थे, जिनके फोटो इसी अंक में आप देखेंगे।

कैसी विडम्बना है कि जो विधि द्वारा निर्मित सरकार के दुश्मन हैं, सरकार उन के इशारों पर नाच रही है और हम जो भारत की आजादी—जनतन्त्र और शासन के लिए लड़ रहे हैं, हमें अपमानित—तंग—परेशान किया जा रहा है।

स्वतंत्र भारत में संभवतः पहली बार एक धार्मिक क्षेत्र में, धर्म की रक्षा के लिए मुझे एक माह में दो बार गिरफ्तार होने का सौभाग्य मिला। मुस्लिम बन्धु मुझे समाप्त करने के षडयन्त्र में लगे हैं। दिल्ली पुलिस हमारे कार्यालय पर रक्षा के लिए तैनात है। किन्तु प्रश्न उठता है कि क्या भारत भूमि पर वीर पुत्र नहीं रहे? क्या यह युद्ध हमें अकेले ही लड़ना होगा?

किसी मुसलमान-मौलवी को पुलिस इस तरह गिरफ्तार करके तो देखे कि क्या होता है। यहां तो हालत यह है कि हमारे नेता भी—जनता भी कानों में रूई डाले पड़े हैं।

हम तो अपने प्रभु के विश्वास पर लड़ रहे हैं और लड़ेंगे। झुकना या रुकना हमने नहीं सीखा, पर क्या आप का कोई कर्त्तव्य नहीं बनता। कायरों की भांति घरों में छिपने वाले नेताओं को जनता पहचाने और भाषणों व कार्य के अन्तर को समझे, यह समय की मांग है।

मैं अकेली हूं—यह चिन्तन मुझे शक्ति देता है। मरने के लिए भी मैं तैयार हूं। आप इसे भले ही मेरा पागलपन कह लें, पर गुरुदेव देव दयानन्द से मैंने तो निर्भीकता और सत्य का जो पाठ पढ़ा है। अपने पूज्य पिता और सहचर से जो प्रेरणाएं पायी हैं, उन के बल से बली मैं—अडिग रह कर आगे हीं आगे बढ़ने की कामना रख रही हूं।

समय संघर्ष का है, यह संघर्ष हमें करना ही होगा। इस्लाम का वास्तविक रूप हमें सभी तक पहुंचाना होगा। कुरान क्या है। क्या लिखा है उसमें यह बताना होगा। तिरंगे की शक्ति और भारत की आजादी बचाने के लिए भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाने का व्रत लेना होगा।

हमारी कोई राजनैतिक आकांक्षा नहीं। हम तो दूर एकान्त—जंगल में रहकर शाश्वत सत्य के प्रतीक वेद के उपासक हैं। वेद का ज्ञान अमृत फैले और जहरीले मजहबों का जहर मिटे, इस के लिए हम प्राणों की भी आहुति देने को तैयार हैं।

समय नहीं है। बिगुल बज चुका, वे जाग रहे हैं—हमसो रहे हैं, सोते रहिए, पर जब कुछ न बचेगा, तब क्या लाभ होगा जागने का?

यवन—मत-समीक्षा नामक पुस्तक हजारों की संख्या में बांटिए उनके आक्रमण का यही उत्तर है कि हम संगठित हों, और जाग जाएं।

—राकेशरानी

प्रधानमन्त्री व गृहमंत्री
को पत्र लिख विरोध पत्र भेजें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दिल्ली प्रशासन द्वारा दयानन्द संस्थान को अध्यक्ष महान् धार्मिक हिन्दू नेता

पंडिता राकेशरानी की रात्रि में गिरफ्तारी

देश की हिन्दू जनता तीव्र विरोध करती है

शासन सांप्रदायिक शक्तियों को पूरे बल से कुचले

हिन्दू जागो ! देश बचाओ।।

श्री रामगोपाल शालवाले, प्रधान सार्वदेशिक सभा, श्री गोस्वामी गिरधारी लाल, श्री बलराज मधोक, प्रधान अखिल भारतीय जनसंघ, श्री श्याम सुन्दर सेठ, श्री बिशन स्वरूप पटवारी, श्री दयानन्द एडवोकेट अध्यक्ष, नागरिक परिषद् मुरादाबाद, श्री गोविन्द नारायण विजयवर्गीय हैदराबाद, श्री रामचन्द्र अग्रवाल हैदराबाद, श्री सी० रघुनन्दन, हैदराबाद, प्रो० श्री धर्मवीर अजमेर, श्री विद्यानन्द सरस्वती, श्री जगदीश्वरानन्द सरस्वती, श्री प्रो० रामसिंह उपाध्यक्ष, अखिल भारतीय हिन्दू महासभा, श्री विक्रम सावरकर, अध्यक्ष अखिल भारतीय हिन्दू महासभा, श्री ओंकार सिंह एडवोकेट, श्री प्रह्लादसिंह आराधक, सहारनपुर, श्री गौरीशंकर कोठारी, प्रधान राजस्थान हिन्दू महासभा, श्री गणपति आर्य, प्रधान आर्यसमाज बम्बई, श्री जगदीश शरण माहेश्वरी मुरादाबाद, श्री के० सी० मुखर्जी, बंगाल नागरिक समिति, श्री हंसराज गुप्ता, भू० पू० महापौर, दिल्ली, श्री, सूर्यदेव, प्रधान आर्यसमाज दीवान हाल, श्री देवकी नन्दन एडवोकेट, श्री प्रो० रत्नसिंह, गाजियाबाद, श्री राजेश्वर, भागलपुर।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—वेदभिक्षुः

मैं हृदय मन्दिर से लिख रहा हूँ—

सुहाग के गीत और राम नाम सत्य

विवाह के मधुर सपने, सुहाग के मादक गीत, ढोलक की थाप पर गूंज रहे हों, चारों ओर खुशियां, नाच रही हों, हर्षोल्लास मादक स्वर में गूंज रहा हो—और मदमाती चन्द्रकिरणें सुधा-छितरा रही हों···

तभी सुनाई पड़ने लगें **"रामनाम सत्य है"** के बोल, तो आप कैसा अनुभव करेंगे ? कैसे चीख उठेगा आपका मानस ? कितनी पीड़ा होगी आपके आस-पास···सोचकर तो देखिए ।

आजादी की दुलहिन की मेंहदी अभी सूखी भी न थी, बलिदानों से प्राप्त स्वतंत्रता वधु ने सुहाग की सेज पर अभी पांव पसारे भी न थे कि तभी ऐसा लगा कि हमारे सपनों की अरथी उठ गई है । और युद्ध—नरसंहार, सांप्रदायिकता का तांडव देश की आजादी को हड़पने के लिए होने लगा ।

सपने टूट गये पर कर्णधारों की आंखें न खुलीं । दुलहिन का सुहाग रूठ गया और आज भी वह खुशी-हंसी खोकर दिनरात विवशता की चक्की में पिस रही है । भारत की जनता आज भी खुशियों से कोसों दूर है । कौन है वह अपराधी जिसने ३५ वर्ष की आजादी में भी हमारे आंगन में खुशियां नहीं भरने दीं ? कौन है वह, जिसने आज भी लक्षावधि जनता को भूखा सोने पर मजबूर कर रखा है ।

इसका उत्तर है—अपराधी वे नेता हैं जो कुर्सी पर बैठकर स्वार्थ की भट्टी सुलगाते हैं और भूल जाते हैं कि वे जन-जन की सेवा का व्रत लेकर यहां आए हैं ।

सांप्रदायिकता के सांप को जीवित करने वाले, विघटन की प्रवृत्ति के प्रसारक, देश की अखंडता को खंडित करने के अपराधी हमारे राजनैतिक नेता हैं, जिनके अपराधों का प्याला भर चुका है ।

विसंगतियों से भरा इस देश का शासन सत्य और असत्य के विवेक से कोसों दूर है । आज भी करोड़ों व्यक्ति गरीबी की सीमा रेखा से नीचे दिन बिता रहे हैं । मां के भूखे-नंगे-बेबस करोड़ों बेटे आजादी का अर्थ नहीं जानते । वे जी रहे हैं पशुओं की तरह ।

उनकी गरीबी और बेवसी का लाभ उठाकर आज अरब-अमेरिका भारत को पुनः गुलामी के शिकंजे में कसकर—अपने गुलाबी सपने देख रहे हैं । ऐसे में कोई भी तो ऐसा नहीं दिखाई देता जो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्यार से इन सबको गले लगा सके। इन्हें भी कुछ खुशियां दे सके। नगरों की चकाचौंध भारत नहीं है। ग्रामों की जनता ही भारत है।

सांप्रदायिकता का जहर फिर सिर उठा चुका है। विषधर फिर फुंकारने लगा है। शासन में उसका फन कुचलने का दम नहीं। फिर क्या यह जहर एक बार पुनः मां को विभाजन के द्वार पर लाकर खड़ा नहीं कर देगा। यह चिन्ता हमें दिन-रात मथ रही है। हमारा चिन्तन जीवन की पीड़ा के रूप में प्रकट हो रहा है, किन्तु यह देश तो वीर बिहीन-सा लग रहा है। कायर नेता, ढोंगी धर्मध्वजी, समाज सुधारक केवल अपने लिए ज रहे हैं। भारत मां के लिए जीवन अर्पण करने को तो कोई भी तैयार नहीं।

क्या सब कुछ ऐसे ही चलता रहेगा? क्या देशप्रेम की लहर देश-द्रोहियों को समाप्त नहीं कर सकती? क्या नेता फिर से सेवक नहीं बन सकते? मैं तो सुहाग के गीतों को सुनने के लिए मचल रहा हूं पर सुनना पड़ रहा है रामनाम सत्य है। आखिर कब—कब मेरी माँ अपने बेटों पर अभिमान करने की स्थिति में आएगी? कब सुहाग—प्रसन्नता के बोल मेरे देश की मिट्टी गायेगी—सोच रहा हूं। सोचता ही रहूंगा क्या?

१४ मार्च : अपने जन्म दिन पर

जीवन कब तक चलेगा, कब रुकेगा, कौन जानता है। दिसम्बर, ७९ में बीमार पड़ने पर, ८० का मार्च देखने की भी आशा नहीं थी, किन्तु अब ८२ का मार्च उग रहा है। दो वर्ष और मिल गये। इन दो वर्षों ने मुझे २० वर्ष के समान कार्य करने का अवसर दिया। बहुत कुछ देखा, बहुत कुछ सीखा, जाना और पहचाना। अपने मन के गीतों को गुनगुनाना-सुनाना आसान नहीं है। प्राणों के स्पंदन को भाषा में चित्रित करना सरल भी नहीं है। झंझा में दीपक जलाकर बैठना भी तो संभव नहीं। फिर भी मैं आज यह सभी कर रहा हूं।

आज के युग का धर्म बन गया है स्वार्थ। स्वार्थ से परे भी कुछ है, यह तो कोई सोच भी नहीं पाता। कोई दूसरों के लिए भी मर सकता है, जी सकता है—यह बात केवल शब्दों तक सीमित रह गई है।

प्यार बांटना मेरा स्वभाव है, पर बदले में प्यार मिलता नहीं। दिखावा और बात है—प्यार और बात है। प्यार में व्यक्ति मरता है पर रुकता नहीं, जीवन एक आशा भले ही हो, पर प्यार के बिना शून्य है।

प्यार सम्मोहन है, प्रेरणा है, आशा है। पर कितने हैं जो प्यार देकर भी प्यार पाते हैं। शायद इसीलिए भटकाव जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया है। औरों की तो छोड़िए, हम अपने से भी तो प्यार नहीं कर पाते। आत्मा का शृंगार करने का समय किसके पास है?

मैं देखकर भी देखता नहीं हूं। सुनकर भी सुनता नहीं हूं। जानकर भी शायद जानना नहीं चाहता, कैसी विडम्बना है। ज्ञान की प्रथम किरणों के साथ मैंने 'स्व' को 'पर' के लिए अर्पित किया है। गृहस्थ के प्रथम चरण से अंतिम क्षणों तक जीवन का प्रत्येक क्षण अपने लिए नहीं, सभी के लिए दिया है। संग्रह से कोसों दूर रहकर एक अभिनव सपने में रंग भरने के लिए प्राणों के प्रत्येक पल की आहुति दी है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

किसी को अपने धन-मकान, संपदा पर अभिमान होगा पर मैं तो 'मेरा कुछ है ही नहीं' पर गर्व करता रहा हूं। आज भी मैं अपने जीवन के पल अपने लिए नहीं, अपने सपनों और आदर्शों के लिए ही जी रहा हूं।

मुझे नया जीवन मिला, डा० कृष्ण-स्वरूप जी और वैद्य शिरोमणि आचार्य बृहस्पतिदेव त्रिगुणा की कृपा से। पिछले दो वर्षों का हमारा कार्य इन्हीं दो विभूतियों की देन है। मृत्यु की मंडराती छाया में उनसे, जिन पर आशा थी, निराशा मिली। सहारा मिला केवल एक का, जिसे सहारा देना मेरा कर्त्तव्य था। प्रकाश अंधकार में समान रूप से जो वरदान बन सदा चलने की भाषा पढ़ाती रहीं, उस दिव्य देवी के प्रति मैं नतमस्तक हूं।

मैंने उन्हें जीवित जलते देखा है। कष्टों में रुग्णता में, तूफानों में अडिग मुस्कराते पाया है। विषपान कर अमृत बांटते रहना उनका स्वभाव है, और सच-मुच उनका साथ पूर्व जन्म के शुभ कर्मों का ही फल प्रतीत होता है।

अपने साथ छोड़ गए। कोई सोचता है कि ऐसे विकृत मस्तिष्क वाले का साथ देने से धक्के और ठोकरें ही तो मिलेंगी। आराम के लिए—अपने लिए जीना ही जिनका धर्म है, उनसे अपना नाता (मन का) तोड़कर असीम आकाश में पंख फैलाए एकाकी उड़ता रहा हूं—अपने को प्रभु का पुत्र मानकर और उसी की शक्ति से संपन्न होकर।

पिछले १८ माह में देश को जगाने के लिए जो उपक्रम आरम्भ किया, उसकी गूंज आज देश के जन मानस की प्रति-ध्वनि बन चुकी है। सर्वत्र धर्म की सोई शक्ति जाग रही है। हमारा श्रम सफल हो रहा है, इससे बढ़कर हर्ष का विषय और क्या होगा ?

मेरे संकल्पों की पूंजी परमात्मा का आशीर्वाद है। सपनों में रंग भरने का काम आपका है। मैं आज अकेला नहीं हूं। करोड़ों के मन मस्तिष्क मेरे साथ चिन्तन के स्वर गुंजा रहे हैं, और मैं अपने प्रभु की पवित्र गोदी में बैठा गा रहा हूं···

तू मेरा है, मैं तेरा हूं,
साथ नहीं छूटेगा अपना,
मेरा केवल यही है सपना।

जीवन तो प्रभु के अर्पित है ही। उसी का आशीर्वाद मेरी शक्ति है। धरती का मोह छोड़ चुका हूं। भौतिक बंधनों का नाम भी स्मरण नहीं, काम का बंधन मुझे बांध रहा है। पर वह मेरा नहीं, आपका प्रभु का काम है। इसलिए मैं भी आपका ही हूं।

आशीर्वाद दीजिए कि जीवन के शेष क्षणों में जागरण और प्यार के गीत गाता रहूं। बढ़ता जाऊं और कर्मक्षेत्र के प्रांगण में ही भौतिक शरीर त्याग नये जन्म का स्वागत कर सकूं। आपका स्नेह और आशीर्वाद ही मेरी शक्ति है।

स्वामी सर्वानन्द जी का ऐतिहासिक प्रयास

१८-१९ फरवरी को दयानन्द मठ-दीनानगर में देश के मूर्धन्य तपस्वी, कर्मठ संन्यासी श्री पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने देश के साधु-संतों की एक बैठक बुलाकर राष्ट्र निर्माण में रचनात्मक भूमिका का आरम्भ किया। इस बैठक में वैदिक यतिमंडल की स्थापना हुई और देश के संन्यासी महानुभावों को रचनात्मक कार्य करने की दिशा मिली। अतः महान् ऐतिहासिक आयोजन के लिए स्वामी जी का प्रयत्न सदैव स्मरण रहेगा।

मैं भी १९ को लगभग १०-३० पर दीनानगर मठ पहुंचा। उद्देश्य विशेष तो स्वामी जी के दर्शन कर प्रेरणा प्राप्त

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

करने का ही था। बैठक चल रही थी और मैं सामान रखकर सीधा यज्ञशाला में—जहां स्वामी दीक्षानन्द जी की अध्यक्षता में बैठक चल रही थी, पहुंचा।

अनेक सुझाव आये, विचार विमर्श भी हुए। सार रूप में प्रचार के लिए जो कार्यक्रम निश्चित कर संन्यासी वानप्रस्थी, नैष्ठिक ब्रह्मचारियों से उसके प्रचार प्रसार की प्रार्थना की गयी, उसका सार निम्नलिखित है।

१—'ओ३म्' हमारा आराध्य, गायत्री हमारा नाद है। सभी इसके प्रचार का प्रयत्न करें और सभी को गायत्री मंत्र स्मरण करायें।

२—परस्पर अभिवादन में प्रेमपूर्वक नमस्ते करने का स्वभाव बनाएं।

३—अंडा, शराब, मांस के दुर्गुण सभी को हृदयंगम कराएं।

४—संध्या दोनों समय करें व सभी को स्मरण कराकर करने की प्रेरणा दें।

५—हमारे व्यवहार में, आचरण में व्यापार में सत्य हो। सत्य ही हमारा धर्म है। यह प्रचार सभी करें।

६—गुण-कर्म-स्वभावानुसार विवाह करने की प्रेरणा दें। संस्कारों में सादगी और मितव्ययता अपनाने का प्रचार करें।

७—धर्म क्या है? इसका व्यापक स्तर पर प्रचार करें और धर्म व मजहब का अंतर समझाएं।

८—गौ को राष्ट्रीय पशु घोषित करने के लिए जनता द्वारा मांग उठवाएं।

९—व्यायाम, योग, आसन, ब्रह्मचर्य की प्रवृत्ति पैदा करें।

१०—राष्ट्र की एकता, अखंडता और स्वतंत्रता को समाप्त करने वाली शक्तियों के विरुद्ध जनमत जाग्रत करें।

स्वामी सर्वानन्द जी का यह १० सूत्री आवाहन जागरण का शंखनाद है। यह नारोंका नहीं कर्म का क्षेत्र है। उनका सहयोग स्वामी दीक्षानन्द जी, महात्मा दयानन्द जी और निरन्तर कर्म में विश्वास रखने वाले स्वामी सोमानन्द जी महाराज कर रहे हैं।

हमारा विश्वास है कि यह आन्दोलन और कार्यक्रम सभी प्रचारक अपनाएंगे और भारत को पुनः पूत पावन बनाने की साधना के संकल्प में अपनी आहुति का योगदान करेंगे।

श्रद्धा से परम तपस्वी के चरणों में हमारा हार्दिक नमन! प्रभु उन्हें शतायु करें ताकि वे धर्म की विजय वैजयन्ती भारत भू पर फहरा सकें।

आप क्या करें ?

—प्रधानमंत्री मंत्री व गृहमंत्री को पत्र लिख कर मुस्लिम तुष्टीकरण के लिए रात्रि में धार्मिक हिन्दू नेता पंडिता राकेशरानी की गिरफ्तारी का विरोध करें।

—अपने क्षेत्र में अधिक से अधिक साहित्य बांट कर जन-जागरण करें।

—जन-ज्ञान (मासिक) अधिक से अधिक परिवारों में पहुंचाने का व्रत लें।

—अपने क्षेत्र में हिन्दू रक्षा सम्मेलन आयोजित करें।

—धर्मवीर

प्रधानमंत्री

अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धर्म मेघ

—स्व० पंडित चमूपति

वृषा पवस्व धारया मरुत्वते च मत्सरः ।
विश्वा दधान ओजसा ।।३।।

ऋषिः—भृगुः = तपस्वी

(धारया) अपनी धारण करने वाली संजीवनी से (वृषा) धर्म-मेघ बन कर (पवस्व) पवित्रता का प्रवाह चला। (मरुत्वते) प्राण-शक्ति के धनी के लिये तू (मत्सरः) हर्ष का सरोवर है। (ओजसा) अपने ओज से (विश्वा) समस्त भूत-जात को—अनेक ब्रह्माण्डों को (दधानः) धारण करता हुआ प्रवाहित हो।

मंगलमय भगवान् ! इस एक विश्व का ही नहीं, संपूर्ण विश्वों—संपूर्ण ब्रह्माण्डों का आधार आप की शक्ति है। इस एक शक्ति के द्वारा केवल भिन्न-भिन्न लोक ही नहीं, सारे-सारे ब्रह्माण्ड एक हो रहे हैं। कैसा आश्चर्य है कि संसार का अणु-अणु अपनी पृथक् सत्ता रखता है और फिर जीवन की रस्सी द्वारा दूसरे सब परमाणुओं के साथ बंधा हुआ है। प्रभो ! यह तुम्हारी महिमा है। जीवन की रस्सी तुम्हारी संजीवनी शक्ति है। ब्रह्माण्ड शरीर है, तुम इस के आत्मा हो। शरीर को आत्मा ने एक बना रखा है। जीवन की धारा बह रही है और बिन्दु-बिन्दु को एक सुन्दर मनके के रूप में तरंगों की माला में पिरो रही है।

तुम्हारी कृपा पवित्रता का मेघ बन कर बरस रही है। पाप धुल रहे हैं। पुण्यों का प्रवाह बह रहा है।

प्रभो ! यह प्रवाह किस के लिए है ? पृथिवी प्रसन्न है। जल प्रसन्न है। वायु के झोंके खुश हैं। यह सकल संसार हर्ष का पवित्र सरोवर है। किस के लिए ? मरुत्वान्—प्राणों के पति इन्द्र के लिए। तो क्या मैं इन्द्र नहीं ? मेरी सम्पूर्ण इन्द्रियां मेरे अधीन हैं। मेरा देखना, सुनना, खाना, सूंघना, स्पर्श करना मेरे अपने वश में है। मैं विषयों का दास नहीं, स्वामी हूं। राजा हूं।

तो प्रभो ! इस सरोवर में एक डुबकी मैं भी तो लगा लूं। मेरा जीवन भी स्वच्छ हो जावे।

धर्म-मेघ ! बरसो। मेरी आशा-कलिकाओं पर बरसो। मुझ चातक के मुख में एक स्वाति-बिन्दु टपका दो। देखो ! कब का प्यासा हूं। तुम्हारी तरफ़ मुंह उठाये खड़ा हूं। प्रभो। एक बूंद !

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ज़रा सोचिए !

आज देश में जो भी लीडर हैं, चाहे किसी भी दल के हों, वास्तव में जनता के वोटों द्वारा सत्ता पर कब्जा करके पूरे पांच वर्षों तक जनता का शोषण करते हैं। चुनाव में जीतने के वाद नेता से शासक बन कर जनता को बेझिझक पुलिस व गुंडों द्वारा डराते रहते हैं।

आजादी मिलने के चौंतीस वर्षों बाद भी देश की जनता को भूखा-नंगा और अनपढ़ रखकर भाषा, धर्म और जात-पात के नाम पर आपस में लड़ाते रहने की साजिश करके यह अपना मतलब पूरा करते रहे हैं।

कोटा, परमिट, लाइसेंस, राशन व बिक्री-कर जैसी गैर-जरूरी नीतियों द्वारा सारे देश को भ्रष्टाचार की भट्ठी में झोंक रखा है। देश में एक भी आदमी ईमानदार न रहे, यही इन मौकापरस्त नेताओं की साजिश है।

वितरण की उचित व्यवस्था न करके, हर चीज को लाइन में घण्टों खड़े होकर प्राप्त करने को अनुशासन का नाम देकर हर आदमी को गुलाम बनाने की इनकी बहुत बड़ी योजना है।

इस साजिश को नाकाम करने के लिए हमसे सम्पर्क करें—

संयोजक

भारतीय युवा वाहिनी

३३१४, बैंक स्ट्रीट, करौल बाग, नई दिल्ली-११०००५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धार्मिक हिन्दू नेता पंडिता राकेशरानी की रात्रि में गिरफ्तारी

शासन की मुस्लिम तुष्टिकरण का नीति का परिणाम

हंसते-मुस्कराते हवालात में निवास
अकेले ही बढ़ते रहने का संकल्प

एक ऐतिहासिक लड़ाई का पहला अध्याय

—दिनेश एम० एस०सी०

शिवरात्रि ! २२ फरवरी १९८२, फीरोजशाह कोटला मैदान और दिल्ली के आर्यसमाजों का ऋषि बोधोत्सव का जलसा ! दोपहर तीन बजे बड़े से दरवाजे के अन्दर कनातों से घिरे पाण्डाल के चारों तरफ किताबों की और छोले-भटूरे की दुकानें जगह-जगह सजे धजे कपड़ों में बैठे लोग पिकनिक मना रहे थे। एक ओर शामियाने के अन्दर मंच पर वे ही बूढ़े आर्यसमाजी और हिन्दू नेता जो शायद मेरे जन्म से पहले भी इस मंच पर बैठते होंगे, और वे ही घिसे पिटे भाषण जो उस समय देते होंगे, दिये जा रहे थे।

सामान बेचते-बेचते जिनकी आवाज में एक खास किस्म की जोड़ बाकी का हिसाब होता है, नेताओं ने माइक पर 'उद्घोष' किया—बन्धुओ ! मेरा तो यह जीवन ही आपके ही लिए है। हमारा जीवन गाय की रक्षा में लगा है—अगर आप आदेश देंगे तो हम गौ रक्षा के के लिए जीवन लगा देंगें, यह स्वर था सभी नेताओं का कुछ नेताओं ने फरमाया—"आर्यसमाज ने मीनाक्षीपुरम् में समाज मंदिर की नींव

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रख दी है।" इस पर तालियां बज उठीं जैसे कि नेता ने मीनाक्षीपुरम् की मस्जिद या गिरजाघर की जगह में आर्यसमाज बना डाला हो।

स्मरणीय है कि इस सम्मेलन में विश्व-हिन्दू परिषद् भी शामिल था—और ये भाषण गौ रक्षा सम्मेलन के तहत चल रहे थे। गाय भक्तों का यह जमघट देखकर आश्चर्य लगता था कि इन शूरमाओं के रहते गौ हत्या क्यों होती है।

\+ \+ \+

इसी दिन सुबह, दरियागंज पुलिस कोतवाली की हवालात के बाहर मैं खड़ा था—-मैं बाहर खड़ा था यह अफसोस की बात है क्योंकि सींकचों के अन्दर वह तेजस्वी देवी थी—जिसने आर्यसमाज और दयानन्द की जलाई यज्ञ वेदी में हर क्षण अपने प्राणों की आहुति दी है। वह देवी जिसने ३० हजार वेद भाष्य प्रकाशित करके हिन्दू जगत के इतिहास में नया अध्याय जोड़ा है—वह देवी सींकचों के अन्दर इसलिये है कि उसने कलम नहीं, तलवार चलाने वाली बिरादरी के खिलाफ लेखनी उठाई है! इस्लामीकरण का जो भीषण षड्यंत्र देश में चल रहा है उसके खिलाफ दुनियां की सबसे हिंसक जाति को ललकारा है।

\+ \+ \+

ये दो अलग तस्वीरे हैं एक ही दिन की। महर्षि दयानन्द ने इस दिन सत्य का साक्षात्कार किया था। पहली तस्वीर में मंच पर शब्दों की बाजीगिरी दिखाने वाले मठाधीशों की दुकान है, और दूसरी में ऋषि ऋण को उतारने में दी जाने वाली आहुति है।

सरकार की चापलूसी करने वाले, भोली हिन्दू जनता की भावनाओं से खिलवाड़ करने वाले उन महा सत्यवादी हिन्दू नेता नामधारियों से मैं पूछना चाहूंगा कि क्या स्वार्थ में तुम इतने अंधे नहीं हो चुके कि आर्यसमाज के सिद्धान्त के प्रचार की खातिर लड़ रही तुम्हारी वहिन तुम्हें नहीं दीख रही, और गौ रक्षा की खातिर "प्राणोत्सर्ग' करने का मजमा लगाए बैठे हो।

दयानंद संस्थान की अध्यक्ष पंडिता राकेशरानी की गिरफ्तारी उस हर हिन्दू के मुंह पर तमाचा है जिसके शरीर में शिवा, प्रताप और दयानन्द का खून बहता है—गीता गायत्री गंगा-गौ के लिए जिसके दिल में आज भी सम्मान शेष है। यह चुनौती है उन तमाम लोगों के लिए, जो आगामी वर्षों में अपने बेटों के नाम करीमखां और नईमखां नहीं रखवाना चाहते।

इसी अंक में आप पढ़ रहे हैं कि पंडिता राकेशरानी की किताब 'इस्लाम में क्या है?' ने देशभर में क्या बवंडर खड़ा कर दिया है। हम इज्जत करते हैं उस कौम की, जो जिंदा है—मुसलमानों ने उस पुस्तिका के खिलाफ जो पोस्टर निकाले और जो गालियां लेखिका को दीं, अगर उन्हें नैतिककता की परिधि में कहा जाये तो शैतानियत क्या है? यह कहना कठिन है। पोस्टर में धमकी दी गई थी कि अगर १० दिन के अंदर किताब जब्त करके लेखिका पर कड़ी कानूनी कार्यवाही नहीं की गई, तो सारे देश में बवंडर किया जायेगा—और दिल्ली सरकार की हुक्म परस्ती देखिये कि १० दिन दूर, १० घंटे के अन्दर ही उन्हें रात को ही गिरफ्तार करके कोतवाली में बन्द कर दिया। साथ ही २९५ ए तथा १५३ ए की रंगीन धाराएं लगा दी गईं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यह गिरफ्तारी भी इतनी नाटकीय हुई जैसे बहुत बड़े तस्कर अथवा अपराधी को गिरफ्तार किया जा रहा हो। यद्यपि पुलिस का व्यवहार पूरी तरह सम्मान जनक रहा किन्तु रात को ही गिरफ्तार करना सरकार के मुस्लिम खुशामदी पन को ही दर्शाता है। अन्यथा क्या जरूरत थी कि शाम ५ बजे से अनेक पुलिस अधिकारी बात करने व यूंही जाँच पड़ताल करने के बहाने करोलबाग स्थित वेदमन्दिर कार्यालय में आकर बैठे रहे। इत्तिफाक से घर की बिजली खराब हो जाने पर पुलिस अधिकारी ने बहाना बनाया कि उनके "उच्चाधिकारी करोलबाग थाने में बैठे हैं वे—आपके दर्शन करना चाहते हैं—अतः कृपया वहीं चले चलें। और वहां पहुंचने पर बगैर वारन्ट दिखाये जामा मस्जिद पुलिस पंडिता जी को अपनी हिरासत में लिवा ले गई।

दूसरे दिन दोपहर को २ बजे तीस हजारी कोर्ट में श्री देवकीनंदन जी एड-वोकेट ने न्यायधीश श्री मित्तल की अदालत में लगनशील हिन्दू नेता व सम्मानित व्यापारी श्री पटवारी जी की जमानत पर उन्हें रिहा कराया। अब मुकद्दमा चलेगा।

इस सारे काण्ड मैं एक बात जितनी स्पष्ट हैं कि एक छोटी सी पुस्तिका ने जहां मुसलमानों को बुरी तरह तिलमिला दिया, वहीं हिन्दुओं नेता के निकम्मेपन, बुजदिली और—मुर्दनी को भी जाहिर कर दिया है। लेकिन यह शुभ संकेत है कि देश भर के चेतनाशील है हिन्दूजन इसको अपनी प्रतिष्ठा का सवाल बना रहे हैं। क्योंकि साम्प्रदायिकता, इस्लामी व ईसाई-करण के ऐसे भयंकर संकट में जहां वोट के वल राजनीति चलाने वाले आधुनिकता वादी 'सेक्यूलर' बन चुके हैं वहां एक वहिन ने आगे ब़ढ़कर घर्म रक्षा का शंखनाद फूंका है।

अगर गम्भीर घटना को भी हमने चुनौती की तरह नहीं स्वीकारा तो, हिन्दू जाति को आत्मघात से कोई न बचा सकेगा।

(जन-ज्ञान) फार्म 4

१. प्रकाशन स्थान : १५९७ हरध्यानसिंह मार्ग, करौलबाग नई दिल्ली-५
२. प्रकाशन अवधि : मासिक
३. मुद्रक का नाम : पण्डिता राकेशरानी
(क्या भारत का नागरिक है ?) : हां
पता : १५९७, हरध्यान सिंह रोड करौलबाग नई दिल्ली-५
४. प्रकाशक का नाम : पंडिता राकेशरानी
(क्या भारत का नागरिक है ?) : हां
पता : उपर्युक्त
५. सम्पादक का नाम : पण्डिता राकेशरानी
(क्या भारत का नागरिक है ?) : हां
पता : उपर्युक्त
६. उन व्यक्तियों के नाम व पते :
जो समाचार-पत्रके स्वामी हों : दयानन्द संस्थान (पंजीकृत ट्रस्ट)
तथा जो समस्त पूंजी के एक :
प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हो।

मैं, राकेशरानी एतद् द्वारा घोषित करती हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

दिनांक १-३-८२ प्रकाशक के हस्ताक्षर : राकेशरानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गिरफ्तारी के बाद लगे उर्दू पोस्टर का देवनागरी रूपान्तर
चित्र सामने के पृष्ठ पर

कुरान करीम और इस्लाम पर कीच
उछालने वाली शैतान-सिफ्त औरत
पंडिता राकेशरानी कैफ
करदार को पहुंचा दी गई

इस्लाम और उसके अहकामात के खिलाफ लग्व और बेबुनियाद बातें लि और मुसलमानों को तैश में लाने के लिए अरसे से एक मुनज्ज साजिश चल रही है। मुख्तलिफ अखबारों और किताबों में इस किस्म के मजा शाया हुए हैं, जिनसे फिरकापरस्ती को हवा मिलती है और हिन्दू-मुस्लिम फिसा हो सकते हैं। हाल ही में नई दिल्ली से 'इस्लाम में क्या है?' नामक एक कि किताबचा, जिसे दयानन्द संस्थान, वेदमन्दिर, नई दिल्ली ने शाया किया है, जि मुसन्निफा एक फिरकापरस्त जहन पंडिता राकेशरानी नामी औरत है। इस कि बचे में कुरान पाक की बेहुरमती की गई है और मुसलमानों और इस्लाम म पर कीचड़ उछाला गया है। दावा किया गया है कि हिन्दुस्तानी मुसलमान बे और गद्दार हैं। इस किताबचे की इशाअत से मुसलमानों में सख्त बेचैनी पाई रही थी। लेकिन थाना जामा मस्जिद का अमला काबिले सताइश और ल मुबारिकबाद है कि इस किताबचे की इत्तला पाते ही पब्लिशर और मुसन्नि घर रातों-रात छापा मारकर तमाम किताबें अपने कब्जे में कर लीं और इ मुसन्निफा को गिरफ्तार करके मुकद्दमा दायर कर दिया है और पूरे हिन्दु की फ़िजा को खराब होने से बचाया है। हम मुसलमानाने दिल्ली हुकूम मुतालबा करते हैं कि इस कुन्दजहन और फिरकापरस्त मुसन्निफा और प्रिंटर-प शर को सख्त सजा दी जाये। हम जामा मस्जिद इलाके के अमनपसन्द शहरी ग मेंट और दिल्ली पुलिस के अफसरान को दिली मुबारकबाद देते हैं और उम्मीद क हैं कि आइन्दा भी इस किस्म के फिर्कापरस्त मुसन्निफों के खिलाफ़ कार्रवाई क मुल्क की फिजा को बेहतर बनाये रखने की कोशिश करेंगे।

मुहम्मदसईद, नईम अहमद, मूहम्मद इरशाद, मुहम्मदशफी, मुह इस्लाम, मुहम्मदवहीद (बब्बो), शकीलअहमद, मंजूरअहमद, मुहम्मदयूसुफ, अ उर्रहमान, मुहम्मदलतीफ, मुहम्मदसाजिद, वाजिद हुसैन कुरैशी, मुहम्मदअब्दु मुहम्मदउमर और दीगर मुसलमानान।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

قرآن کریم اور اسلام پر کیچڑ اچھالنے والی شیطان صفت عورت پنڈتہ راکیش رانی کیفر کردار کو پہونچادی گئی

[illegible]

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

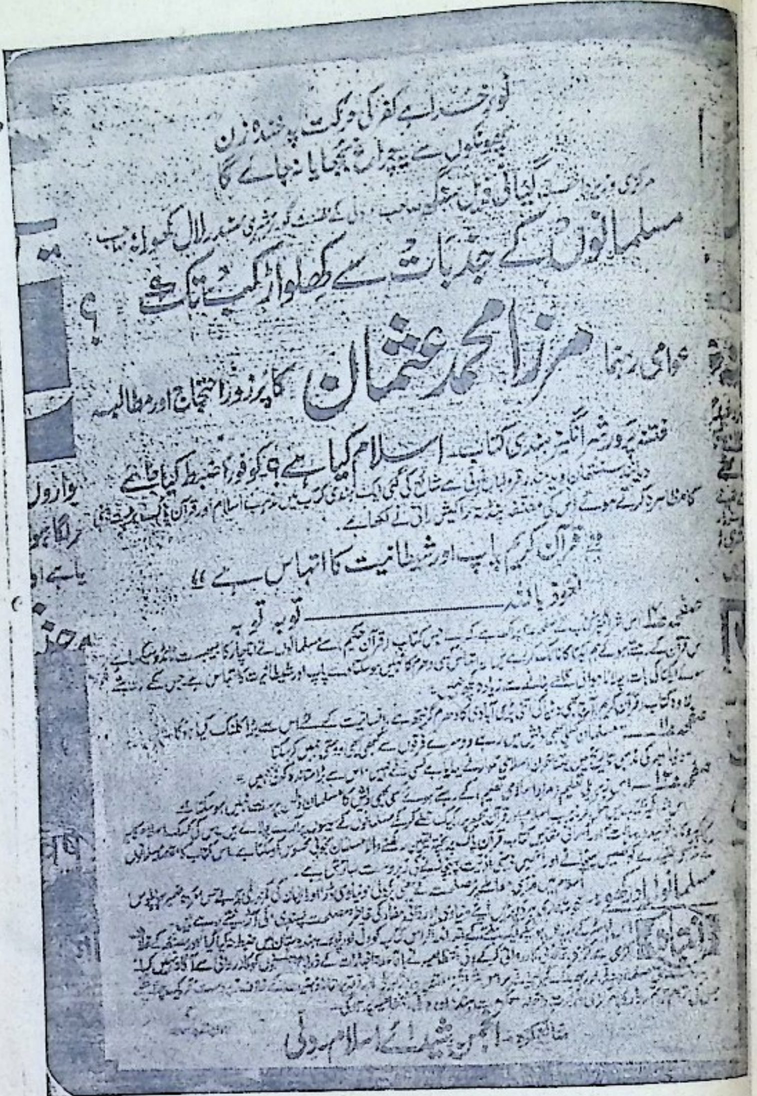
لو خدا ہے کفر کی حرکت پہ خندہ زن
پھونکوں سے یہ چراغ بجھایا نہ جائے گا

مسلمانوں کے جذبات سے کھلواڑ کب تک ؟

عوامی رہنما مرزا محمد عثمان کا پرزور احتجاج اور مطالبہ

فتنہ پرور شر انگیز ہندی کتاب اسلام کیا ہے ؟ کو فوراً ضبط کیا جائے

قرآن کریم پاپ اور شیطانیت کا اتہاس ہے

نعوذ باللہ ———— توبہ توبہ

شائع کردہ انجمن شیدائے اسلام دہلی

उस का चित्र पोस्टर जिस के आधार पर दिल्ली पुलिस ने गिरफ्तारी

हिन्दी अनुवाद सामने के पृष्ठ पर पढ़ें

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पोस्टर का देवनागरी रूपान्तर

नूरे खुदा है कुफ्र की हरकत पे खन्दाजन,
फूंकों से यह चिराग बुझाया न जायेगा।

मरकज़ी वज़ीर दाखिला ज्ञानी जैलसिंह साहब, दिल्ली के लैफ्टिनेंट-गवर्नर श्री सुन्दरलाल खुराना साहब

मुसलमानों के जज़्बात से खिलवाड़! कब तक ?

अवामी रहनुमा मिर्जा मुहम्मद उस्मान का पुरजोर
एहतजाज और मुतालबा

फितनापरवर शरअंगेज हिन्दी किताब

'इस्लाम में क्या है?' को फौरन जब्त किया जाये !

दयानन्द संस्थान, वेदमन्दिर, करौलबाग, नई दिल्ली से शाया की गई एक हिन्दी किताब में मजहबे इस्लाम और कुरान पाक पर पस्तजहनी का मुजाहिरा करते हुए उसकी मुसन्निफा पंडिता राकेशरानी ने लिखा है—

"कुरान करीम पाप और शैतानियत का इतिहास है"

नऊज बा अल्लाह—तोबा बोबा

सफा ४—इस शरअंगेज किताब के सफा ४ पर लिखा है कि "जिस किताब (कुरान करीम) से मुसलमानों ने अनाचार का वीभत्स तांडव सीखा है, उस कुरान के रहते हुए हम एकता का नाटक कर रहे हैं। यह इतिहास किसी धर्म का नहीं हो सकता। यह पाप और शैतानियत का इतिहास है, जिसके रहते हुए एकता की बात चलाना हवाई किले बनाने से ज्यादा कुछ नहीं।"

"वह किताब (कुरान करीम) आज भी दुनिया की इतनी बड़ी आबादी का धर्म ग्रंथ है, इन्सानियत के लिए इससे बड़ा कलंक क्या होगा ?"

सफा ११—मुसलमान किसी भी देश में रहें, दूसरे फिर्कों से कभी भी दोस्ती नहीं कर सकता।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"दुनिया भर की मजहबी तारीख में जितना खून इस्लामी तलवार ने बहाया है, किसी ने नहीं। इससे बड़ा मतान्ध कोई नहीं।"

सफा १२—इस जहरीली तालीम (मुराद इस्लामी तालीम) के रहते हुए किसी भी देश का मुसलमान वतनपरस्त नहीं हो सकता।

इस शरअंगेज किताब में खुलकर मजहब इस्लाम और कुरान मजीद पर रकीक हमले करके मुसलमानों के सीने पर आरे चलाये जा रहे हैं। इसकी कसम इस्लाम का हरसच्चा पैरोकार तोहीदोरसालत और आसमानी मुकद्दस किताब कुरान पाक पर पुख्तायकीन रखने वाला मुसलमान बखूबी महसूस कर सकता है। इस किताब का मकसद मुसलमानों के मजहबी अकीदे को ठेस पहुंचाने और उन्हें अजीयत पहुंचाने की जबर्दस्त साजिश है।

मुसलमानो याद रखो, इस्लाम में मजहबी मामले पर मस्लहत के मानी बुजदिली, दुनियावी डर और ईमान की कमजोरी है। बेहिस, मुर्दा जमीर, चापलूस, खुशामदी हरदौर में अपने दुनियावी और जाती मुफाद की खातिर 'मस्लहत पसन्दी' की आड़ लेते रहे हैं।

इन्तबाह—इस पोस्टर के चस्पां होने के एक हफ्ते के अन्दर-अन्दर अगर इस किताब को दिल्ली और पूरे हिन्दुस्तान में जब्त न किया गया और मुसन्निफा के खिलाफ कड़ी से कड़ी कानूनी कार्रवाई करके दिल्ली इन्तजामिया ने बाकायदा अखबारात के जरिये मुसलमानों को कार्रवाई से आगाह न किया, तो हिन्दुस्तानी मुसलमान दिल्ली और फिर मुल्कगीर पैमाने पर इस शरअंगेज, फितनापरवर, जहरीली और फिर्कापरस्त जहनियत के खिलाफ जबर्दस्त तहरीक चलायेंगे, जिसकी तमामतर जिम्मेदारी मर्कजी वजारते दाखिला, हकूमते हिन्द और दिल्ली इन्तजामिया पर होगी।

शायाकरदा—अंजुमन शैदायेइस्लाम, दिल्ली

हिन्दू बनो

१. चोटी रखो

२. यज्ञोपवीत पहनो।

३. मम्मी-डैडी-अंकल-आंटी कहना छोड़ो।

४. घरों में पैंट का प्रयोग बन्द करो।

५. अपनी भाषा, वेश-देश-साहित्य धर्म से अपने बच्चों को परिचित कराओ।

हिन्दुओ जागो! देश बचाओ!

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—सत्यपाल शास्त्री

सामयिक विचार

संसद् का बजट अधिवेशन

१८ फरवरी को राष्ट्रपति नीलम् संजीव रेड्डी ने संसद् के बजट अधिवेशन का समारम्भ किया। १७ फरवरी को दूरदर्शन पर एक कार्यक्रम आयोजित हुआ। विषय था—संसद् के समक्ष विचारणीय विषय। इस कार्यक्रम में सरकारी पक्ष और विपक्ष के सदस्यों ने अपने-अपने विचार प्रकट किये। सरकारी पक्ष के सदस्यों ने आंकड़ों के जोर पर यह सिद्ध करना चाहा कि देश आगे बढ़ रहा है और सब मोर्चों पर स्थिति अच्छी है। लेकिन विपक्ष के कुछ तीखे प्रश्नों का सरकारी पक्ष के पास कोई सन्तोषजनक उत्तर न था। विपक्ष का कहना था कि संसद् के अधिवेशनों को मजाक बनाकर रख दिया गया है। अध्यादेश लागू किये जाते हैं, बजट से पहले और बाद में शुल्क और मूल्य बढ़ा दिए जाते हैं, असफल मुख्मंत्रियों को हटाया नहीं जाता, गढ़वाल और दिल्ली में चुनाव बार-बार टाले जा रहे हैं, पश्चिम बंगाल में चुनाव स्थगित करने के प्रयत्न किए जा रहे हैं, आदि-आदि। समाचार-पत्रों में भी आम स्वर यही है कि सरकार काम नहीं कर रही, यद्यपि सत्तारूढ़ दल के नेताओं ने यह कहकर वोट लिये थे कि "वोट उस दल को दें, जिसकी सरकार काम करे।"

प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी ने ऐसी स्थिति पैदा कर दी है कि सरकारी पक्ष अथवा विपक्ष में ऐसा कोई नेता नहीं बचा, जिसका व्यक्तित्व हो—प्रतिष्ठा हो। इन्दिरा जी का जोर विपक्ष और समाचारपत्रों को बदनाम करने पर है। विपक्ष को बदनाम करने के लिए इन्दिरा जी बड़े से बड़ा झूठ बोल सकती हैं। इन्दिरा शासन के प्रति असंतोष संसद् में व्यक्त होता रहता है। दूर जाने की जरूरत नहीं। चालू बजट अधिवेशन को ही ले लीजिए। पहले ही दिन डैमोक्रैटिक सोशलिस्ट पार्टी के सदस्य राष्ट्रपति के अभिभाषण के समय अनुपस्थित रहे। उनका कहना था कि यह अभिभाषण एक ऐसी सरकार द्वारा तैयार किया गया है, जिसकी नेता (श्रीमती गांन्धी) ने अपनी विदेश यात्रा के दौरान इन शब्दों में राष्ट्रपति पर अविश्वास प्रकट किया कि "भारत का राष्ट्रपति विपक्ष का आदमी है और सरकार के रास्ते में रुकावटें डाल रहा है।" अभिभाषण के समय अनुपस्थिति का दूसरा कारण यह बतलाया गया कि गढ़वाल में चुनाव स्थगित करके चुनाव

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation Chennai
प्रक्रिया पर एक के बाद दूसरा घातक प्रहार किया जा रहा है। तीसरा कारण यह कि पश्चिम बंगाल में राज्य सरकार ने चुनाव कराने की मांग की है, लेकिन वहां चुनाव स्थगित करने के प्रयत्न किए जा रहे हैं। चौथा और अंतिम कारण यह बताया गया कि अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष भारत की आर्थिक नीतियों के निर्धारण में हस्तक्षेप कर रहा है।

केवल डैमोक्रैटिक सोशलिस्ट पार्टी के सदस्यों ने ही अभिभाषण का बहिष्कार न किया, अपितु लोकदल के सदस्य भी उनके साथ थे। कम्युनिस्ट पार्टी और मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के अनेक सदस्य भी अनुपस्थित थे।

यहीं पर बस नहीं। राज्यसभा में पहले ही दिन विपक्ष ने इस बात पर प्रोटैस्ट किया कि असम में राज्यपाल और केरल में स्पीकर ने अल्पमतीय सरकारों को बनाये रखने में सहायता दी। जब राष्ट्रपति ने अपने अभिभाषण में हरिजनों पर हो रहे अत्याचारों की चर्चा की, तब जनवादी पार्टी के एक सदस्य ने चिल्लाकर कहा कि "इन्दिरा सरकार को बर्खास्त करो।"

दूसरे दिन विपक्ष ने राज्यसभा से वाकआउट किया, ताकि बजट अधिवेशन से पूर्व नये शुल्क लगाने के विरुद्ध प्रोटैस्ट किया जा सके। भारतीय जनता पार्टी के श्री लालकृष्ण आडवाणी ने कहा कि दिसम्बर में रेलभाड़ा बढ़ाया गया था और अब डाक-तार शुल्क में वृद्धि की गई है। कुल मिलाकर जनता पर एक अरब रुपए का नया बोझ डाल दिया गया है।

जन-प्रतिनिधयों का रोष लोकसभा में भी अभिव्यक्त हुआ। सदस्यों को इस बात पर ऐतराज था कि श्री प्रणव मुखर्जी को वित्तमंत्री बनाया गया, जबकि वे लोकसभा के नहीं, अपितु राज्यसभा के सदस्य हैं। श्री अटलबिहारी वाजपेयी ने पूछा कि जब श्री प्रणव मुखर्जी प्रत्यक्ष चुनाव में चुने जाकर सदन में नहीं आये, तो उन्हें कर लगाने का अधिकार कैसे दिया जा सकता है? याद रहे कि यह पहला अवसर है, जब वित्तमंत्री लोकसभा का सदस्य नहीं, अपितु राज्यसभा का सदस्य है।

संसद् का समय बहुमूल्य है। ताजा आकड़ों के अनुसार संसद् की एक घंटे की कार्रवाई पर ४८ हजार रु० व्यय होता है। दिन भर में सात घंटे बैठक चलती है; इस प्रकार कुल मिलाकर एक दिन में संसद् की कार्रवाई पर ३ लाख ३६ हजार रु० व्यय होता है। यदि सरकार महत्त्वपूर्ण मामलों पर संसद् को विश्वास में नहीं लेती, तो इतना खर्च किसलिए?

धर्मान्तरण की नई लहर : चेतावनी

दो हिन्दू नेताओं—प्रो० रामसिंह और श्री बिशनचन्द सेठ—ने हमारा ध्यान यूनाइटिड न्यूज ऑफ इंडिया द्वारा प्रसारित एक समाचार की ओर आकृष्ट किया है। तिरुनेलवेली डेटलाइन से प्रकाशित इस समाचार में बताया गया है कि "मीनाक्षीपुरम् में हरिजनों के इस्लाम में व्यापक पैमाने पर प्रवेश के एक वर्ष बाद तमिलनाडु के इस दक्षिणवर्ती जिले (तिरुनेलवेली) में धर्मान्तरण की नई लहर चलने वाली है। प्रकटतः सवर्ण हिन्दुओं द्वारा किए गये अनवरत भेदभाव के फलस्वरूप पिछले वर्ष १९ फरवरी को इस गांव के मुसलमान बने १२०० हरिजनों की ओर न

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

केवल भारत अपितु संसार भर के समाचारपत्रों का ध्यान गया था। पिछली दस और ग्यारह फरवरी को तिरुनेलवेली जिले के सैकड़ों मुसलमानों और हरिजनों ने इस घटना के प्रथम वार्षिक समारोह में भाग लिया। समारोह से पूर्व दस जनवरी को कदयानल्लूर में मुसलमानों और हरिजनों के प्रतिनिधियों की देहात-स्तर की एक बैठक का आयोजन ईक्वैलिटी ऐंड ब्रदरहुड असोशियेशन द्वारा किया गया। असोशियेशन के अध्यक्ष श्री बी० एस० कमालुद्दीन ने एक सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि समानता और भ्रातृत्व में विश्वास रखने वाला कोई भी व्यक्ति इस संगठन का सदस्य बन सकता है। उन्होंने इस बात का प्रतिवाद किया कि इस संगठन का उद्देश्य धर्मान्तिरण करना है।

इस असोशियेशन की स्थापना ३७ वर्ष पुरानी दक्षिण भारतीय इशाअतुलइस्लाम सभा की पहल पर की गई। इस सभा का दावा है कि अपनी स्थापना से लेकर अब तक यह सत्रह हजार व्यक्तियों को मुसलमान बना चुकी है। हाल ही में सदस्यों को भेजी गई अपनी रिपोर्ट में सभा ने लिखा कि "हजारों गैर-मुस्लिम इस्लाम के पवित्र मत में सम्मिलित होने की प्रतीक्षा कर रहे हैं, लेकिन धन की कमी के कारण अभी उन्हें प्रतीक्षा करने के लिए कहा गया है।"

सभा ने दावा किया कि पोलियगुंडी, वासदेवनलूर और कन्नापचेरी (कदयानल्लूर के समीप) और नन्नागराम व इलंजी (तिरुनेलवेली के समीप) लगभग ५००० व्यक्ति सभा के पास आये और उन्होंने इस्लाम में प्रवेश पर आमादगी जाहिर की। बताया जाता है कि शिवाकाशी (जिला रामनाथपुरम्) में भी १००० व्यक्ति मुसलमान बनने को तैयार हैं। उनके धर्मान्तिरण में देरी इसलिए हो रही है, क्योंकि वस्त्रों, भोजन और खतने के लिए धन नहीं। सभा के अध्यक्ष श्री ए० के० रिफाई ने संसार भर के मुसलमानों से अपील की है कि वे सभा की सहायता करें। सुझाव दिया गया है कि सहायता सीधे सभा को भेजी जाये, न कि अन्य संस्थाओं के माध्यम से, ताकि सभा को तुरन्त काम करने में आसानी हो। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि धर्मान्तिरितों को अरब देशों में रोजगार देने पर विचार किया जाये। दस फरवरी को मीनाक्षीपुरम् के समारोह में भाग लेने वाले अनेक हरिजनों ने असोशियेशन के कार्यकलाप की प्रशंसा की। उनमें से एक ने कहा कि ऊंची ज़ाति के हिन्दुओं के भेद-भाव और शोषण से छुटकारा हासिल करने के लिए हमारे पास और कोई रास्ता ही नहीं है—मुस्लिम संस्थाओं की सहायता लेने के सिवा।

इस समाचार पर किसी लम्बी-चौड़ी टिप्पणी की आवश्यकता नहीं। एक आर्यसमाजी नेता ने उक्त समाचार में मुसलमानों द्वारा किए गये दावों का खंडन किया है। हमारा निश्चत मत है (जिसकी पुष्टि मीनाक्षीपुरम् से लौटे कार्यकर्त्ताओं द्वारा होती है) कि उक्त समाचार सत्य है। यथार्थ की अनदेखी करने से यथार्थ मिट नहीं जाता। अच्छा हो, यदि ये नेता कुछ ठोस काम करें। आजकल तो इनकी बहुत-सी शक्ति बयानबाजी और संवाददाता सम्मेलन आयोजित करने में लग रही है। ●

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू राष्ट्र की स्थापना शीघ्रातिशीघ्र होनी चाहिए

माननीय वेदभिक्षु जी,

जन-ज्ञान जनवरी-फरवरी, ८२ में मैंने आप द्वारा की गई अपील को पढ़ा। आपने सहयोगियों से बहुत उचित अपील की है और इसकी इस समय अति आवश्यकता है। हिन्दू बहुत निर्बल, स्वार्थी व चरित्रहीन होते जा रहे हैं। उन्हें अपने भले के लिए स्वयं ही अपने पांवों पर खड़े होना चाहिये, किन्तु खेद कि वे इतना जगाने पर भी नहीं जग रहे हैं। अन्ध-भविष्य उनके सामने है पर वे आंखें बन्द किये बैठे हैं। हिम्मत नहीं है। ऐसे समय में आपकी व सम्पादक जी की कोशिशों की सराहना तो करनी ही पड़ेगी, आपका साथ देना भी अत्यन्त आवश्यक है। समय चला गया तो न जाने इस भारतवर्ष का क्या होगा! यदि कोई सोचे कि अब राणा प्रताप, शिवाजी, लक्ष्मीबाई (झांसी की रानी) जैसा फिर कोई इस पृथ्वी पर जन्म ले तो यह नामुमकिनहै, क्योंकि कांग्रेस ने राजा-महा राजाओं का सदा के लिए खात्मा कर दिया है। अपनी एक बड़ी शक्ति की कब्र स्वयं ही खोदी है—वह भी उनके साथ धोखा करके। यह सरकार के लिये अशोभनीय है। समस्या और भी विकट हो गई है, इसलिए प्रत्येक हिन्दुस्तानी को जागरूक होना चाहिये और हिन्दू राष्ट्र की स्थापना जल्दी से जल्दी करनी चाहिये। धर्म की आड़ में जो कुछ भी हो रहा है, भयानक है। ईश्वर एक है। उसके नाम अनेक हैं। फिर झगड़ा किस बात का? यह तो केवल अपनी शक्ति बढ़ाने के तरीके हैं।

जोधपुर

आपका शुभचिन्तक
एस०एम० गुप्त

हिन्दू धर्म के पुण्य प्रवाह को अक्षुण्ण बनाये रखें

महोदय,

"इस्लामिस्तान बनाने की तैयारियां" लेख बहुत चेतावनीपूर्ण है। यदि इसके बाद भी हमारा विशाल हिन्दू समाज सोता रहा तो इतिहास उसे क्षमा नहीं करेगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आज वास्तव में कर्मभूमि और धर्मभूमि भारत पर चारों ओर से हमारी वैदिक संस्कृति-धर्म को नष्ट करने के लिए नियोजित षड्यंत्र चल रहे हैं। एक ओर सेवा के नाम पर ईसाई मिशनरी पूर्वांचल में ईसाईकरण का खेल रचा रहे हैं, दूसरी ओर इस देश के हरिजन वन्धुओं को पेट्रोडालर के आधार पर खरीदकर और मुसलमान वनाकर इस देश में पुनः एक और विभाजन का घिनौना प्रयास चल रहा है। यही नहीं, रूसी गुप्तचर संस्था के० जी० बी० कम्युनिज्म के नाम पर धर्म और संस्कृति को नष्ट कर इसे देश की स्वतंत्रता को रूस के पास गिरवी रखने के लिए आतुर है। इसी प्रकार के प्रयास में अमेरिका की गुप्तचर संस्था सी० आई० ए० भी पीछे नहीं है।

इस प्रकार जो संकट हमारे सामने खड़ा है, यदि हमने उसका सामना न किया तो हमें अपने आपको हिन्दू कहलाने का कोई अधिकार नहीं होगा। आज समय की पुकार है कि प्रत्येक व्यक्ति, जो अपने आपको हिन्दू मानता है, अपना व्यक्तिगत और राजनैतिक स्वार्थ छोड़कर हिन्दू समाज की रक्षा के लिए तत्पर हो जाये। वह प्रतिज्ञा ले कि मेरे शरीर में जब तक रक्त की एक बूंद भी शेष है, तव तक मैं हिन्दू धर्म के पुण्य प्रवाह को अक्षुण्ण बनाये रखने में लगा रहूंगा—चाहे मुझे सर्वस्व ही त्यागना पड़े। जब हिन्दू यह सोचेगा कि जिस देश, जाति और धर्म में जन्म लिया है, उसकी रक्षा करना मेरा प्रथम कर्त्तव्य है, तभी वह सच्चे अर्थों में हिन्दू कहलाने का अधिकारी होगा।

प्रह्लाद गोस्वामी

करौली (जिला सवाई माधोपुर)

आर्यसमाज नई मंडी, मुजफ्फरनगर का उत्साह

महोदय,

आपके मासिक पत्र जन-ज्ञान के जनवरी-फरवरी अंक में उल्लेख है कि शासन ने आप पर दण्ड विधान की धारा २९५ व २९५ ए के अन्तर्गत अभियोग स्थापित किया है। यह पढ़कर हमें आश्चर्य एवं दुःख हुआ। इससे स्पष्टतः शासन की विवेक-हीनता का प्रमाण मिलता है।

हम आपकी दृढ़ आस्था का हार्दिक सम्मान करते हैं। हमारा समाज किसी भी प्रकार की सहायता करने को उद्यत है।

आपके निरन्तर उत्थान और चिरायु की कामना है।

शिवकुमार शर्मा, मन्त्री — शुगनचन्द बंसल, प्रधान
आर्यसमाज नई मण्डी, मुजफ्फरनगर

जातपांत बढ़ने के लिए सरकार दोषी

महोदय

जन-ज्ञान माघ अंक के पृष्ठ ८४ पर प्रकाशित श्री पुरुषोत्तमदास आर्य का पत्र पढ़ा। आपने यह तो लिखा कि शर्मा, वर्मा, गुप्त, सिंघल, राठौर आदि न लिखें, किन्तु क्या आप जानते हैं कि सरकार प्रतिमास हरिजनों की सूची मांगती है और हर उपस्थिति पंजी में हरिजनों के नाम के आगे लिखना ही पड़ता है? यहीं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भेदभाव हो जाता है। सारा दोष सरकार का है। इसे और कोई मिटाकर अपने लिए सूची बनाने की समस्या ही पैदा करेगा। जहां एक अच्छा खाने-पहनने वाला छात्रवृत्ति पायेगा और एक पंडित का फटीचर लड़का अध्यापकों से कोई सुविधा न पा सकेगा, क्या आप समझते हैं कि वहां केवल लिखने से अन्दर की भेद भावना मिट जायेगी?

रामसिंह 'मयंक', कोषाध्यक्ष
आर्यसमाज गोकुला रायबरेली

जन-ज्ञान का सन्देश उपयोगी है

महोदय,

मैं हिन्दू समाज की दुर्दशा देखकर दु:खित हूं। यदि महर्षि दयानन्द न आते, तो हालत इससे भी बुरी होती।

आर्य संस्कृति सर्वश्रेष्ठ है और वेदज्ञान सर्वोत्तम है। लेकिन हिन्दू इस संस्कृति को छोड़ चुके हैं और इस ज्ञान से मुंह मोड़ चुके हैं। धर्मगुरु अपने में मस्त हैं—उन्हें हिन्दू समाज की चिन्ता नहीं। दूसरी ओर ईसाई, मुसलमान आदि हिन्दू समाज को घेरते जा रहे हैं। हम संगठित नहीं। हमने खाने-पीने को ही सब कुछ समझ रखा है। भगवान् ही हिन्दू समाज की रक्षा करे।

धार्मिक संगठनों में पाखंड का बोलबाला है। हम फिल्म संस्कृति को अपनाते जा रहे हैं। और तो और, आर्यसमाज भी शिथिल हो चुका है। उसने बाबू संस्कृति को अपना लिया है।

ऐसी स्थिति में जन-ज्ञान का संदेश उपयोगी है। आप इसका प्रचार-प्रसार करें।

सी० पी० विश्वकर्मा
आजमगढ़

हिन्दुओं का सांझा मंच तैयार करें

महोदय,

आर्यसमाज, विश्व-हिन्दू परिषद् और हिन्दू रक्षा समिति ने हिन्दू समाज की जो सेवा की है, मैं उसका प्रशंसक हूं।

हमारा कर्त्तव्य है कि हम हिन्दू समाज के किसी भी सदस्य पर होने वाले अन्याय और अत्याचार का प्राणपण से विरोध करें। बेहमई, देहुली, साढूपुर सदृश कांडों की जांच कर दोनों पक्षों की आपसी कटुता, वैर और प्रतिशोधभाव समाप्त किया जाना चाहिए और उनमें प्रेमभाव पैदा किया जाना चाहिए। हमारा उद्देश्य यह होना चाहिए कि ऐसे कांडों की पुनरावृत्ति न हो। हमें लोकसंग्रह करने वाले सच्चे समाजसेवियों का सम्मान करना चाहिए। सम्मानित व्यक्ति अधिक उत्साह से समाज की सेवा करेगा। यदि हमने अपने कार्यकर्त्ताओं का उचित सम्मान किया होता, तो आज हमारा समाज निस्तेज न होता। हम अपने ही देश में उपेक्षित और अपमानित न होते—बेगाने न समझे जाते।

आप प्रयत्न करके किसी कर्मठ समाज-सेवी को नेतृत्व के लिए तैयार करें और हिन्दुओं का एक सांझा मंच तैयार करें। तभी देश में स्थिरता आयेगी और विघटनकारी शक्तियां समाप्त होंगी। हम सब का प्रयत्न होना चाहिए कि संसार में हमारे देश का सम्मान बढ़े।

पुराना गंज (रामपुर) ओ३म्प्रकाश गुप्त

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एक शरारतपूर्ण लेख : सरकार अंकुश लगाए

महोदय,

बम्बई के कुख्यात साप्ताहिक ब्लिट्ज (उर्दू संस्करण) के ३० जनवरी १९८२ के अंक में अत्यन्त आपत्तिजनक और शरातपूर्ण शीर्षक के साथ एक लेख प्रकाशित हुआ है, जिसमें मुसलमानों को भड़काने की चेष्टा की गई है। दयानन्द संस्थान द्वारा वर्षों से प्रकाशित और प्रचारित प्रकाशनों को लेकर मुसलमानों को उत्तेजित करने का कुत्सित प्रयत्न किया गया है और साथ ही साथ अल्पसंख्यक सैल की आड़ लेकर गोरखपुर के जिला मजिस्ट्रेट को गुमराह करने का षड्यन्त्र रचा गया है। यदि ब्लिट्ज में साहस होता, तो वह इन पुस्तिकाओं में लिखित विचारों की सचाई का प्रतिवाद करने की दिशा में पग बढ़ाता। हम इन चारों पुस्तिकाओं में लिखे एक-एक शब्द की सचाई के कायल हैं। ये विचार प्रामाणिक हैं। हमारा दावा है कि ब्लिट्ज तो क्या, भारत का बड़े से बड़ा मुल्ला-मौलवी भी इन पुस्तिकाओं में दिये गये तथ्यों को झुठलाने का साहस नहीं कर सकता। जरा ब्लिट्ज का जमाया हुआ शीर्षक तो देखिये—अल्पसंख्यकों को लहू-लहू करने वाले साम्प्रदायिकों की ये विषैली पुस्तिकायें।

सरकार चुप रहकर इस प्रकार की असभ्यता और शरारत को कब तक सहन करती रहेगी? हम सरकार से आग्रह करते हैं कि ऐसी पत्रिकाओं के विरुद्ध कड़ी से कड़ी कानूनी कार्रवाई करे।

(प्रोफैसर) रामसिंह
उपाध्यक्ष, अखिल भारतीय हिन्दू महासभा,
नई दिल्ली

(ब्लिट्ज का आलोच्य लेख पूरा का पूरा इसी अंक में अन्यत्र प्रकाशित किया जा रहा है।—सम्पादक)

धर्मनिरपेक्षता के दुष्परिणाम

महोदय,

भारत धर्मनिरपेक्ष देश है। भारतीय संविधान धर्मनिरपेक्ष है। इस कारण आजकल यहां सभी धर्मनिरपेक्षता चिल्लाते नजर आते हैं। लेकिन धर्मनिरपेक्षता से वास्तव में क्या तात्पर्य है? यह कोई भी समझने का प्रयत्न नहीं करता। आम तौर से धर्मनिरपेक्षता से मतलब यही लिया जाता है कि कोई भी व्यक्ति धर्म से बँधा हुआ न हो। स्वेच्छा से अपना धर्मपरिवर्तन कर सकने की स्वतन्त्रता को धर्मनिरपेक्षता समझा जाता है। लेकिन यदि विश्लेषण किया जाय तो धर्मनिरपेक्षता का मतलब बिल्कुल उल्टा निकलता है। वास्तव में धर्मनिरपेक्षता का जो उल्टा रूप हमने समझा हुआ है, उसी के कारण देश पतन की ओर जा रहा है।

धर्मनिरपेक्षता समझने से पहले हमें धर्म को जानना होगा। धर्म क्या है? धर्म शब्द का अर्थ होता है धारण करना। अतः धर्म मनुष्य का आधार है। धर्म

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का मतलब स्वभाव होता है। जैसे अग्नि का धर्म जलाना होता है। वायु का धर्म सुखाना होता है। उसी प्रकार मानव का धर्म मानवता है। धर्म एक होता है। हिन्दू शास्त्रों में मानव मात्र के लिए एक धर्म बताया गया है। मनुस्मृति में सत्य धैर्य, क्षमा आदि धर्म के दस लक्षण बतलाये गये हैं, जो मनुष्य जीवन के आधार हैं। इनके बिना मनुष्य जी नहीं सकता। यदि मनुष्य सत्य बोलना छोड़ दे तो क्या परिणाम होगा ? इसकी कल्पना ही बहुत कष्टदायक है। अहिंसा छोड़ देने पर लोग एक दूसरे को समाप्त ही कर देंगे। अतः धर्म के बिना रह सकना बिल्कुल असम्भव है। जैसे अग्नि अगर जलाना छोड़ दे तो वह अग्नि राख कहलाती है। वायु अगर सुखाना छोड़ दे तो बेकार हो जाती है। इसी प्रकार मनुष्य यदि मानव धर्म (मानवता) छोड़ दे तो पशु समान हो जाता है।

हिन्दू, इस्लाम, ईसाइयत आदि मत धर्म नहीं कहला सकते। ये तो मत हैं। हिन्दू एक संगठन है जो संसार के सबसे प्राचीन मत को मानने वालों को मिलाने से बनता है। इसी प्रकार बाद में इस्लाम, ईसाइयत, सिख आदि मत जैसे-जैसे प्रचलित होते गये, उन मतों को मानने वालों के अलग-अलग संगठन बनते गये। लेकिन ये तो वास्तव में केवल विचारधारायें मात्र हैं। धर्म नहीं हैं। धर्म तो व्यापक होता है। धर्म तो जीवन की प्रत्येक क्रिया से सम्बन्धित होता है। जीवन जीने की सर्वोत्तम विधि को धर्म कहा जा सकता है।

हमारे संविधान के अनुसार किसी भी व्यक्ति से धर्म मानने की अपेक्षा नहीं की जा सकती। अर्थात् अपना धर्म छोड़ने के लिए हर व्यक्ति स्वतन्त्र है। फिर धर्म छोड़कर कहां जायेगा ? सत्य बोलना छोड़कर झूठ बोलेगा ? हिंसा के सहारे कब तक जियेगा ? मानव धर्म छोड़कर पशु-धर्म ग्रहण करेगा तो देश का क्या होगा ? समाज का क्या होगा ? फिर कौन "सर्वे भवन्तु सुखिनः" के लिये प्रयत्न करेगा ? कौन "आत्मवत् सर्वभूतेषु" जानेगा ? कौन भोजन करने से पहले यह देखेगा कि कहीं पड़ौसी भूखा तो नहीं ? कौन नवयुवक मां-बहन की लुटती इज्जत बचाने के लिए अपनी जान खतरे में डालेगा ? क्यों करेंगे यह सब ? जब धर्म नहीं रहा, हम धर्म-निरपेक्ष हो गये तो फिर किसलिए करें यह सब ? फिर हमारा धर्म तो खाना-पीना और सोना हो जायेगा। हिन्दू को मुसलमान, मुसलमान को ईसाई बनाना हमारा धर्म बन जायेगा।

अतः आज आवश्यकता इस बात की है कि हम धर्मनिरपेक्षता का राग अलापना बन्द कर संविधान में ऐसी व्यवस्था करें, जिससे सभी मनुष्यों के लिए धर्मानुसार आचरण आवश्यक हो। सत्य, अपरिग्रह, अस्तेय आदि के नियमों पर न चलने वालों को कठोर दण्ड देने की व्यवस्था हो।

धर्मनिरपेक्षता के स्थान पर मतनिरपेक्षता का संविधान बने, ताकि कोई लोभ-लालच देकर या भय दिखाकर किसी का मत परिवर्तन न कर सके।

—पुरुषोत्तमदास अ

आगरा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राज्यपाल : लकड़ी की तलवार!

—कुमार प्रशान्त

भारत के राजनैतिक क्षितिज पर एक अनोखी परिस्थिति उभरती आ रही है, जिसमें लोकतंत्र का ढांचा तो खड़ा रहे शायद, उसकी आत्मा निकल जायेगी। हमारी संघात्मक शासन-प्रणाली की संस्थाओं में एक सिलसिले से एक चारित्रिक बदलाव आ रहा है। इस बदलाव की गति धीमी हो सकती है, लेकिन इसकी दिशा स्पष्ट है। राज्यों के संघ के रूप में जिस गणतंत्र की हमने कल्पना की थी, वह शनैः-शनैः अत्यधिक केन्द्राश्रित व्यवस्था की तरफ जा रहा है, और इसके परिणामस्वरूप सभी लोकतांत्रिक संस्थाएं अपनी हैसियत और गरिमा खोती जा रही हैं।

राज्यपाल नाम की संस्था इनमें से एक है।

भारतीय संविधान के निर्माताओं ने सत्ता के ढांचे में एक ऐसे पद की कल्पना की थी जो राजनीति से दूर रहकर राजनैतिक गतिविधियों को प्रभावित करेगा। राष्ट्रपति का पद भी कुछ ऐसी ही कल्पना में से पैदा हुआ था। क्षुद्र राजनैतिक उठापटक के बीच ऐसी आदर्शवादी कल्पनाओं की आयु कितनी लम्बी हो सकती है, इसके आकलन में हमारे संविधान निर्माता चूक गये, और इसका परिणाम आज यह हुआ है कि राज्यपाल केन्द्र की दया पर जीनेवाला एक ऐसा रीढ़विहीन प्राणी बन गया है, जिसकी हैसियत शून्य रह गयी है।

संस्कारवान् बनाने की कल्पना

सत्ता की राजनीति कैसे खेल खेल सकती है, इसका प्रत्यक्ष दर्शन हमारे संविधान निर्माताओं को था, इसलिए केन्द्र व राज्य स्तर पर एक ऐसे पद की उपयोगिता उन्होंने समझी, जो समाज-जीवन में अपने दूसरे गुणों के कारण प्रतिष्ठित लोगों को दी जा सके। यह राजनीति के दायरे को बड़ा करने और उसे संस्कारवान् बनाने की कल्पना थी। ऐसी भावुक कल्पनाएं जवाहरलाल नेहरू को बहुत प्रिय हुआ करती थीं। यह पद तो सोचा गया लेकिन इस पद को अपने सम्मान की रक्षा करने लायक भी ताकत नहीं दी गयी। स्वतंत्रता के तुरन्त बाद जवाहरलाल जी ने राजनीति के दायरे से बाहर निकल कर राज्यपालों को खोजने की कोशिश की। कुछ लोग आये भी, लेकिन कुल मिला कर यह दोनों को रास नहीं आया। स्वतंत्रचेता बौद्धिकों ने अधिकारविहीन राज्यपाल के पद को 'निरर्थक' पाया, तो व्यावहारिक राजनीतिज्ञों ने स्वतंत्रचेता राज्यपालों को 'असुविधाजनक' करार दिया। जवाहरलाल नेहरू ने खुद अपने इस प्रयास को तब निरर्थक बना दिया जब १९५७ के चुनाव में केरल में साम्यवादी सरकार बनी। विरोधी दल की सरकार का संवैधानिक प्रमुख रह कर, केन्द्र के प्रतिनिधि के रूप में काम करने की जिम्मेवारी, एक अत्यंत पतली डोर पर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चलने जैसा था। १९५७ से १९५९ के बीच ही राज्यपाल-पद से जुड़ी वह आदर्शवादी कल्पना हवा हो गयी, और केन्द्र ने दबाव डाल कर तत्कालीन राज्यपाल से मनचाही सिफारिशें करवा लीं। १९५९ में नंबूदिरीपाद की सरकार बर्खास्त करदी गयी। संविधान की धारा ३४६ की आड़ लेकर, राज्यपालों के मोहरे से विपक्षी दलों की राज्य सरकारों को शह देने का खेल तब से आज तक जारी है।

संविधान की धारा १५६ के मुताबिक राज्यपाल 'राष्ट्रपति की खुशी तक' अपने पद पर बने रह रकते हैं। राज्यपालों के मोहरे से मात देने की शतरंज पर जब कुछ राज्यपालों ने आपत्ति उठायी, तो उन्हें इसी धारा का भय दिखाया गया। दूसरे शब्दों में कहें तो कहा गया कि राज्यपाल भारत सरकार का नौकर है, नौकर मालिक की इच्छा के विरुद्ध जायेगा तो उसे नौकर कौन रखेगा ?

मुख्य न्यायाधीश वाई.वी. चन्द्रचूड़ की अध्यक्षता में सर्वोच्च न्यायालय ने इस सवाल की छानबीन की और कहा, 'राज्यपाल एक ऊंचे संवैधानिक पद और महत्त्वपूर्ण संवैधानिक जिम्मेवारियों को निभानेवाला व्यक्ति है, उसके अधिकार इस बात को साफ कर देते हैं कि वह नौकर शब्द के किसी भी अर्थ से न तो नौकर है न कर्मचारी। सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि राज्यपाल की नियुक्ति राष्ट्रपति करता है, मतलब भारत सरकार करती है, लेकिन इतने से वह भारत सरकार का नौकर या कर्मचारी नहीं बन जाता है।

लेकिन पिछले दिनों में राजनीति की जो शैली विकसित हुई है उसने राज्यपालों को इसी तरह का बना दिया है। पश्चिम बंगाल के राज्यपाल त्रिभुवन नारायण सिंह को जिस प्रकार राज्यपाल पद से हटाया गया उसकी घटनावार जानकारी उन्होंने खुद वाराणसी में पत्रकारों को दी। यह शायद पहला ही अवसर था जब शिखर पर चलने वाली पर्दानशीं राजनीति को किसी राज्यपाल ने बेपर्दा किया हो। त्रिभुवन बाबू के मुताबिक उन्हें हटाने का निर्णय बहुत पहले हो चुका था, लेकिन पश्चिम बंगाल के मुख्यमन्त्री ज्योति बसु ने इसे आसानी से होने नहीं दिया। केन्द्रीय सरकार अलग-अलग व्यक्तियों से उनके पास यह संदेश भेजती रही कि उन्हें पसंद नहीं किया जा रहा है। त्रिभुवन बाबू के शब्दों में वे 'मानसिक त्रास' के दिन थे। जब केन्द्र ने सीधी उंगली से घी निकलते नहीं देखा तो राजस्थान के राज्यपाल रघुकुल तिलक को हटाया गया, और त्रिभुवन बाबू को राजस्थान जाने का संकेत मिला। इस प्रस्ताव को स्वीकार करने के बाद के अपमान को समझकर त्रिभुवन बाबू ने त्यागपत्र दे दिया। केन्द्र ने बी. डी. पांडे को नया राज्यपाल बनाया।

परम्परा ऐसी है कि पुराना राज्यपाल जब तक राजभवन खाली न कर दे, नया राज्यपाल उसमें प्रवेश नहीं करता है। इसे ध्यान में रखकर त्रिभुवन बाबू ने कलकत्ता से जाने की अपनी तारीख व समय की सूचना राष्ट्रपति को दे दी थी, लेकिन इतना धैर्य किसे था ? त्रिभुवन बाबू की उपस्थिति में ही, राजभवन में नये राज्यपाल का शपथग्रहण समारोह रखा गया। त्रिभुवन बाबू ने तत्काल राजभवन खाली कर दिया और कलकत्ता के रामकृष्ण मिशन में जाकर रहे और वहीं से विदा हुए।

यदि तर्क के लिए यह मान भी लिए जाये कि केन्द्र के संवैधानक प्रतिनिधि के रूप में त्रिभुवननारायण सिंह ने ईमानदारी से काम नहीं किया, तब भी यह तो पूछा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ो जा सकता है कि उनके पद की गरिमा के मुताबिक उनसे व्यवहार क्यों नहीं कया गया ?

४ मई १९७१ को सर्वोच्च न्यायालय की संविधान पीठ की तरफ से अपना सला सुनाते हुए न्यायमूर्ति भगवती ने कहा 'यह स्वीकार करना असम्भव है कि ज्यपाल भारत सरकार के अधीन है। उसका पद भारत सरकार के मातहत या उसकी बेदारी में नहीं है, वह भारत सरकार के निर्देशों के मुताबिक चलने के लिए बाध्य हीं है और न वह अपनी जिम्मेवारियों को निभाने के तरीकों के लिए भारत सरकार प्रति जवाबदेह है। यह एक स्वतंत्र संवैधानिक पद है, जो भारत सरकार के नियंत्रण नहीं है। वह संवैधानिक रूप से राज्य का प्रमुख है, जिसमें राज्य की कार्यपालिका शक्ति निहित है और जिसकी सम्मति के बगैर कोई भी कानून राज्य में कार्य- ल नहीं हो सकता है। इसलिए इस विषय में कोई शक नहीं है कि राज्यपाल का भारत सरकार द्वारा दिया जानेवाला रोजगार नहीं है ...'

एक तरफ सर्वोच्च न्यायालय की यह घोषणा है और दूसरी तरफ वह नाटक जो ७ अगस्त, ८१ को एक टेलीफोन से शुरू हुआ।

इस दिन एक केन्द्रीय मंत्री ने नयी दिल्ली से राजस्थान के राज्यपाल रघुकुल लक को फोन किया। सलाह यह थी कि उन्हें त्यागपत्र दे देना चाहिए क्योंकि नमंत्री ऐसा चाहती हैं। रघुकुल तिलक ने कहा कि यदि प्रधानमंत्री ऐसा चाहती ो वे वैसा ही करेंगे, लेकिन ऐसा करने से पहले वे प्रधानमंत्री से मिलना चाहेंगे। मैं कल दिल्ली आऊं ?' इसके जवाब में उन्हें बताया गया कि प्रधानमंत्री के समय नहीं है। वे कल कीनिया जा रही हैं।

ापको बर्खास्त किया जाता है

सरा दृश्य, ७ अगस्त ८१ को संध्या ४-३० बजे शुरू हुआ, जब केन्द्रीय गृहमंत्रालय एक संयुक्त सचिव, जो पहले रघुकुल तिलक के सचिव के रूप में काम कर चुका राजस्थान के सर्वोच्च न्यायाधीश के साथ राजभवन में दाखिल हुआ केन्द्रीय कारी ने रघुकुल तिलक के हाथ में राष्ट्रपति का वह पत्र दिया जिसमें उन्हें पद र्खास्त करने की सूचना थी। एक राज्य-प्रमुख एक सचिव के हाथों इस प्रकार ानित किया गया। राज्यपाल ने पत्र पूरा पढ़ा और वे राज्यपाल नहीं रह गये। आये सर्वोच्च न्यायाधीश को उनके एक सहकारी न्यायाधीश ने पद की शपथ ायी।

इस पूरे नाटक में एक सावधानी यह रखी गयी कि रघुकुल तिलक न्यायालय ारण में न जा सकें। शनिवार को संध्या ४-३० बजे उन्हें बर्खास्तगी का पत्र था, जब उच्च न्यायालय बन्द हो चुका था। यहां यह भी याद दिला दूं कि लनाडु के राज्यपाल प्रभुदास पटवारी को देर रात में उनका बर्खास्तगी पत्र दिया था।

संवैधानिक स्थिति की छानबीन करें तो संविधान की धारा १५६ सामने आती राज्यपाल के कार्यकाल के बारे में यह धारा कहती है कि राज्यपाल अपने पद याग कर सकता है। दूसरी बात यह कि राज्यपाल का कार्यकाल पांच वर्ष का , तीसरी बात यह कि अपने कार्य-काल की समाप्ति के बाद भी वह तब तक अपने र बना रहेगा जब तक उसका उत्तराधिकारी पद ग्रहण न कर ले। इस धारा में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राज्यपाल की बर्खास्तगी का कोई जिक्र नहीं है। हां, राज्यपाल यदि शा या मानसिक रूप से असमर्थ हो अथवा घूस या भ्रष्टाचार का अपराधी हो हटाया जा सकता है। अब तक किसी राज्यपाल को इन आरोपों में नहीं पड़ा है।

आज की राजनीति इतनी असहिष्णु हो गयी है कि उसे सत्ता की अप चाही दौड़ के रास्ते में कोई रोड़ा पसंद नहीं है। भले वह संविधान ही हो, या राज्यपाल के पद, यदि सही व्यक्ति के पास हों तो ये एक मर्यादा की रेखा है—शासन की मर्यादा। ऐसी लक्ष्मण-रेखाएं सत्ता के रावण ने कब स्वीकार पद आज राजनैतिक कृपा का प्रतीक है और इस पर वही बना रह सकता इशारों की भाषा समझता हो और उस पर चलता हो। यह पद एक हथियार है राजनैतिक लड़ाई लड़ी जा रही है।

राजनीति की इस गिरावट का परिणाम यह हुआ है कि पश्चिमी बं नये राज्यपाल बी. डी. पांडे जब दमदम हवाई अड्डे पर उतरे तो उनका बड़ा स्वागत हुआ। वे 'अनचाहे' मेहमान थे। अब सरकार और राज्यपाल तालमेल करेंगे तो कैसे ? राज्यपाल से शंकित सरकार उसे केन्द्र की शतरंज का मोहरा गी और बराबर एक तनाव, एक संवैधानिक संकट पैदा होने का खतरा बना

राज्यपाल के पद के लिए अब दो ही रास्ते खुले हैं—या तो इसे समा दिया जाये अथवा इसे दलीय राजनीति से ऊपर रखा जाये। यदि इन दोनों में भी नहीं किया गया तो वह दिन दूर नहीं है जब राज्य सरकारें राज्यपालों के काले झंडों का प्रदर्शन करवायेगी और उन्हें मानने से इनकार कर देंगी। वह भ लोकतंत्र की काली घड़ी होगी, लेकिन सारी राजनीति ज्यों की त्यों चलती राज्यपाल का पद नये चरित्र से मंडित हो जाये यह संभव है क्या ?

'मुझ कैमिस्ट की दूकान पर जाना है, यार !' एक दोस्त अपने दोस्त से बोला।

'क्या खरीदना है ?' दूसरे ने पूछा।

'अरे ! खरीदना कुछ नहीं' पिताजी का पत्र आया है उसे प है, पहले ने जबाब दिया।

'लेकिन कैमिस्ट...?' आश्चर्य से दूसरे ने पूछा ;

'हाँ ! यार मेरे पिताजी डाक्टर हैं अतः उनकी लिखाई या स्वयं पढ़ सकते हैं या फिर कैमिस्ट लोग ?' पहले ने कहा।

० ० ०

एक व्यापारी का लड़का बड़ी तीक्ष्ण बुद्धि का था। परीक्षा में से ९५ नम्बर प्राप्त किए तो खुशी-खुशी घर आकर पिताजी को लगा—"पिताजी, मैंने सौ में से ९५ नम्बर प्राप्त किए हैं।"

पिता ने बड़े ही क्रोधित होकर कहा—"अरे नालायक, हम का सवा सौ करते है ओर तू मूल में से भी पांच गंवा आया।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रचार साहित्य

१. चुनौती इस्लामी साम्राज्यवाद को	६० पैसे
२. भारत के मुसलमानों का क्या करें ?	४० ,,
३. क्या आप सारा भारत दारुल इस्लाम बनने देंगे ?	४० ,,
४. हिन्दुओं को चेतावनी	४० ,,
५. मोपला (उपन्यास)	५ रुपये
६. हम सब हिन्दू हैं	४० पैसे
७. पोस्टर—दो प्रकार के	८० ,,
८. इस्लाम में क्या है ?	४० ,,
९. शुद्धि का डंका फिर बजे	८० ,,
१०. इस्लामिस्तान बनाने की तैयारियां	४० ,,
११. हिन्दू जागो ! देश बचाओ !	४० ,,
१२. Bible in the Balance	६० ,,
१३. A Challenge to the Christian Faith	२५ ,,
१४. पोप की सेना का भारत पर हमला	४० ,,
१५. पादरियों को चुनौती	२५ ,,
१६. बाइबिल को चुनौती	४० ,,
१७. ईसाई मत खण्डन	४० ,,
१८. क्या ईसा खुदा का बेटा था ?	४० ,,
१९. और पादरी भाग गया	४० ,,

१००० पुस्तकें मंगाने पर ५० प्रतिशत कमीशन

३०० से ५०० तक पुस्तकें मंगाने पर २५ प्रतिशत कमीशन

अ० भा० हिन्दू रक्षा समिति, वेद मंदिर, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—स्व० महात्मा आनन्दस्वामी

धन से शान्ति नहीं !

मैं इस बात को मानता हूं कि आज ही क्या, किसी भी युग में धन के मनुष्य का काम नहीं चलता। मनुष्य तो क्या, भगवान् नारायण भी के साथ ही रहते हैं। लोग नारायण का नाम लेने से पहले लक्ष्मी का नाम लेते नारायण जी महाराज को 'नारायण' कम लोग कहते हैं—'लक्ष्मीनारायण' वाले बहुत हैं।

एक दिन की बात है, नारायण लक्ष्मी जी के साथ बैठे थे। दोनों में बातें रही थीं।

नारायण बोले—"देखो प्यारी लक्ष्मी ! यह दुनिया कितनी अच्छी है ! प्रा ही-प्रात: मन्दिरों में शंख बजते हैं। घड़ियालों की ध्वनि गूंजती है। मन्दिरों, द्वारों और दूसरे धर्म-स्थानों में लोग मुझे याद करते हैं। मेरे प्यार में पागल जाते हैं, घरों में बैठकर मेरी पूजा करते हैं। बहुत अच्छे हो गए हैं दुनिया के लो

लक्ष्मी ने हंसते हुए कहा—"आप बहुत भोले हैं महाराज ! बहुत में हैं।"

नारायण बोले—"भ्रम ! कैसा भ्रम ?"

लक्ष्मी ने कहा—"ये लोग आपको नहीं, मुझे याद करते हैं। आपके नहीं, मेरे लिए पागल हुए जाते हैं। उन्हें पता है कि मैं आपके साथ रहती हूं। आ ये इसलिए बुलाते हैं कि आप उनके यहां पहुंचेंगे तो मैं भी पहुंच जाऊँगी, आ नहीं मेरी आवश्यकता है उन्हें।"

नारायण बोले—"यह तो गलत बात है। तुम मेरे भक्तों पर व्यर्थ का दो रोपण करती हो।"

लक्ष्मी ने हँसते हुए कहा—"इतना भरोसा है अपने भक्तों पर, तो इ परीक्षा कर लीजिए। आप ब्राह्मण का रूप धारण करके किसी ग्राम में जाइए, आपके भक्त बहुत हों। मैं वहां एक वृद्धा स्त्री बनकर आऊँगी। फिर देखिए होता है ?"

नारायण ने यह बात मान ली। ब्राह्मण का रूप बनाया—सिर पर बाल, चेहरे पर तेज, आँखों में चमक, होंठों पर मधुर मुस्कान, कन्धों पर चादर, गले में सुन्दर माला, कमर में लम्बी लांगवाली धोती, चरणों में सुन्दर खड़

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आवाज में मन को मोहने वाली मिठास। पहुँच गए एक बड़े नगर के अन्दर। "नारायण ! नारायण ! नारायण ! नारायण !" गाते हुए बढ़े, तो कितने ही लोगों ने हाथ जोड़कर प्रणाम किया। एक बहुत बड़े सेठ थे। उन्होंने नारायण के पास आकर उनके चरणों में प्रणाम करके हाथ जोड़ के कहा—"ब्राह्मण देवता ! मेरे घर चलिए। आप थक गए होंगे, थोड़ा आराम कीजिए।"

नारायण जी उसके घर पहुंचे। सेठ ने बहुत प्यार से उन्हें खाना खिलाया। उनका स्वागत किया; बोला—"आप परदेशी हैं, मेरे यहाँ रहिये, आपके सत्संग से मेरा घर पवित्र हो जायेगा।"

नारायण जी ने कहा—"ऐसे ही सही, हम वहीं रह लेंगे।"

सेठ ने पूछा —"पण्डित जी ! आप कथा भी तो करते होंगे !"

नारायण जी ने कहा—"हाँ ! कथा भी करते हैं। आप प्रबन्ध कीजिए, हम प्रतिदिन कथा करेंगे।"

सेठ जी बोले—"मैंने एक बहुत बड़ी धर्मशाला बनवा रखी है, वहीं आपकी कथा का प्रबन्ध करता हूं। वहाँ बहुत जगह है। हजारों लोग आपकी कथा से लाभ उठा सकेंगे।"

लो जी ! हो गया प्रबन्ध, आरम्भ हुई कथा। पहले दिन लोग कुछ कम थे। दूसरे दिन उससे दुगुने, तीसरे दिन उससे भी दुगुने। चौथे दिन धर्मशाला में तिल धरने को भी जगह नहीं थी। नारायण जी की आवाज में मनमोहिनी मिठास थी। कथा में मोहक शक्ति, सुननेवाले मोहित हो जाते, झूम उठते। कई दिन यह कथा चलती रही। लोग कथा के समय से दस-पंद्रह मिनट पहले ही धर्मशाला में पहुँच जाते, धर्मशाला का आँगन भर जाता, कमरे भर जाते, बरामदे भर जाते। छतें भर जातीं। कथा का समय होते ही कोई भी अपने घर में रहना नहीं चाहता था। सब लोग धर्मशाला की ओर भागते थे।

कई दिन बीत गए तो लक्ष्मी जी ने सोचा, अब मैं भी चलूँ, अपना रंग जमाऊँ।

एक वृद्धा का रूप धारण किया उन्होंने—एक निर्धन, निर्बल-सी वृद्धा स्त्री। कमर झुकी हुई, चेहरे पर झुर्रियाँ, मैले-से कपड़े, हाथ में लाठी।

लाठी टेकती हुई वह एक मकान के द्वार पर पहुँची। घर की स्वामिनी द्वार से निकलकर धर्मशाला की ओर जाने की तैयारी में थी।

लक्ष्मी जी ने कहा— "माँ ! थोड़ा-सा पानी पिला दो। बहुत प्यास लगी है, जान निकली जाती है।"

घर की मालकिन क्रोध से बोली—"अरी ! तू कहाँ से आन मरी इस समय। परे हट, मुझे कथा में जाना है। समय हो गया है। देर हुई तो वहाँ खड़े होने का स्थान भी नहीं मिलेगा।"

लक्ष्मी जी ने नम्रता से कहा—"नहीं माँ ! मुझे थोड़ा पानी अवश्य पिला दो। मैं मर जाऊँगी !" मालकिन क्रोध से बोली—

"कैसी आफ़त है। उधर कथा का समय हो गया है, इधर यह आन मरी है। अच्छा ठहर, मैं देती हूं पानी।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और वह अन्दर से एक लोटे में पानी भर के लाई। वृद्धा को देती हुई बोली —"ले पी, जल्दी कर, मुझे कथा में पहुंचना है।"

लक्ष्मी जी ने लोटा हाथ में लिया, पानी पिया, पीकर कहा—"धन्यवाद तुम्हारा ! लो अपना लोटा ले लो।"

मालकिन ने लोटा लिया तो उसे देखकर चकित होकर बोली—"अरे ! यह लोटा तो सोने का हो गया, मैंने तो पीतल का लोटा दिया था। यह सोने का कैसे हो गया ?"

लक्ष्मी जी ने कहा "मुझमें यह गुण है कि मैं जिस बर्तन को हाथ लगाती हूं, वह सोने का हो जाता है।"

मालकिन उनका कन्धा पकड़कर बोली—"तो अन्दर मकान में चलो न। तुम बहुत थकी हुई मालूम होती हो, चलो मैं तुम्हें खाना खिलाऊँ।"

लक्ष्मी जी ने मुस्कराते हुए कहा—"तुम तो कथा में जा रही थीं, देर हो रही थी तुम्हें।"

मालकिन बोली—"अजी कथा तो प्रतिदिन ही होती रहती है। आओ, मैं तुम्हें खाना खिलाऊँ, तुम्हारे पांव दबाऊँ।

लक्ष्मी जी मकान में चली गई। दूसरे दिन प्रातः तक हर ओर यह बात फैल गई कि एक वृद्धा देवी ग्राम में आई है। उसके छूने से पीतल के बर्तन सोने के हो जाते हैं।

और दूसरे दिन से ही कई लोग उस वृद्धा देवी को देखने के लिए आने लगे। हर मनुष्य उसे अपने घर में चलने को कहता। हर आदमी उसे अपना अतिथि बनाने के लिए बेचैन हो उठा। लक्ष्मी जी प्रातः एक घर में, दोपहर दूसरे घर में, सायं तीसरे और रात चौथे घर में। लोग पालकी लेकर आते, उन्हें अपने कन्धों पर बिठाकर ले जाते।

उधर नारायण जी की कथा में दूसरे दिन आधे आदमी थे, तीसरे दिन उससे भी आधे, चौथे दिन केवल बीस-तीस और पाँचवें दिन केवल तीन-चार वृद्ध बैठे थे वहाँ, और नारायण जी गला फाड़-फाड़कर कथा कह रहे थे।

जिन सेठ जी के घर में नारायण जी रहते थे, वे भी लक्ष्मी जी के पास पहुँचे; बोले—"माता जी ! आप मेरे घर चलकर रहिये। वहाँ आपको हर प्रकार का आराम मिलेगा। मैंने अपना घर एयर-कंडीशण्ड (Air-conditioned) करा रखा है। संगमरमर के फर्श हैं। संगमरमर के स्नानागार। कितने ही नौकर हर समय आपकी सेवा में रहेंगे। मैं अपनी मोटर लेकर आया हूं।"

लक्ष्मी जी ने कहा—"चली तो चलूंगी मैं, परन्तु तुम्हारे घर में वह पण्डित रहता है। जहां वह रहता है, वहाँ मैं नहीं जा सकती। मुझे ले जाना है तो पहले उस ब्राह्मण को अपने घर से निकालो।"

सेठ जी घर में आये, ब्राह्मण से बोले—"पण्डित जी ! यहाँ रहते आपको कई दिन हो गए।"

नारायण जी ने कहा—"हाँ भाई ! बहुत कृपा की तुमने, बहुत सुख दिया।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सेठ बोला—"तो फिर अब आप किसी दूसरी जगह पर चले जाइये न।"

नारायण जी ने दिल-ही-दिल में सोचा—आ गई वह चुड़ैल! अब मुझे यहाँ रहने भी नहीं देगी।

सेठ बोला—"धर्मशाला में चले जाइये। वहाँ आपको एक कमरा दिया जायेगा। तीन दिन तो वहाँ रह सकते हैं, फिर और ठिकाना देख लीजिए।"

नारायण जी ने कहा—"परन्तु मैं तो यहीं रहना चाहता हूं।"

सेठ क्रोध में आकर बोला—"यह कैसे हो सकता है? उठाओ अपना बोरिया-बिस्तर! चले जाओ यहाँ से!"

तभी लक्ष्मी जी वहाँ आ गई। हँसती हुई बोलीं—"देख लिया किसको चाहते हैं लोग? किसके लिए पागल हैं? मुझे सब लोग कहते हैं कि हमारे घर आओ, हमारे घर चलो। आपको यह सेठ भी बाहर निकाले देता है। आइये, अब चलें यहाँ से, यह खेल समाप्त हुआ।"

और नारायण जी लक्ष्मी जी का हाथ पकड़कर सिर झुकाकर चल पड़े।

यह है दुनिया का हाल! लोग धन के पीछे भाग रहे हैं, शासन और अधिकार के पीछे। स्वयं नारायण जी महाराज भी लक्ष्मी के बिना नहीं रहते। फिर धन की निन्दा कौन करेगा?

परन्तु धन, दौलत, शासन, सम्पत्ति, महल, खेत, बाग, परिवार—इन सबसे शान्ति तो मिलती नहीं। शान्ति और चैन मिलते हैं उस समय जब मनुष्य के अन्दर सोम का प्यार हो। सोम भगवान् का एक नाम है। भगवान् के लिए प्यार जाग उठे तो मनुष्य के मन में यह सौम्यता, सरलता, नम्रता, सब-के-सब स्वयं ही आ जाते हैं। भगवान् के इस प्यार को ही महर्षि दयानन्द ने 'प्रेमा भक्ति' कहा है।

तुम धन कमाना चाहते हो मेरे भाई, तो अवश्य कमाओ। आप भी खाओ, मेरे जैसे गरीब फ़क़ीरों को भी खिलाओ। समाज की भी सेवा करो। परन्तु याद रखो, केवल धन कमाने से शान्ति कभी मिलेगी नहीं।

ब्रह्मचर्य का पालन करें; परहेज से रहें

गृहस्थाश्रम का अर्थ यह नहीं कि आपको अपना और अपनी पत्नी का या अपने पति का सर्वनाश करने के लिए परमिट मिल गया है। गृहस्थाश्रम इसलिए है कि पति पत्नी को और पत्नी पति को सुखी रखने का यत्न करे। जीवन की यात्रा लम्बी है, इसमें एक साथी हमारे साथ रहे, इस कारण गृहस्थ को आरम्भ किया, सर्वनाश के लिए नहीं किया गया।

यूनान में एक विख्यात दार्शनक पैथागोरस हुए हैं। वे गणित के पण्डित थे, ज्योमैट्री के भी, आयुर्वेद के भी और फ़लरुफ़े के भी। उनसे एक बार किसी ने पूछा—"विवाह होने के पश्चात् पति-पत्नी को शारीरिक तौर पर एक-दूसरे से कितनी बार मिलना चाहिए?"

पैथागोरस ने कहा—"जीवनभर में एक बार।"

पूछनेवाले ने कहा—"यदि इससे सन्तोष न हो?"

और यह सन्तोष की बात भी अजीब है। सन्तोष से कितना सुख होता है, इसे वही लोग जानते हैं जिन्होंने सन्तोष को अपने मन में और जीवन में धारण किया। योगदर्शन में महर्षि पतंजलि लिखते हैं—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"सन्तोषादनुत्तमसुखलाभः॥"

'सन्तोष से बहुत बड़े सुख का लाभ होता है।'

इस सुख के सम्बन्ध में किसी ने कहा है—

सन्तोषामृततृप्तानाम्, यत् सुखं शान्तचेतसाम्।
कुतस्तद्धनलुब्धानामितश्चेतश्च धावताम्॥

'सन्तोष का अमृत जिसने पी लिया, उसे पीकर जो तृप्त हो गया, उसे जो सुख मिलता है, जो शान्ति मिलती है, वह उन लोगों के लिए कहाँ है जो धन के लोभ में या दूसरी वस्तुओं के लालच में इधर-से-उधर और उधर-से-इधर दौड़ते फिरते हैं।'

और यह सन्तोष का अमृत मिलता है अपने-आप पर काबू पाने से, एक सीमा तक बाँध लेने से, यह निर्णय कर लेने से कि इस हद (सीमा) से आगे नहीं जायेंगे। नहीं तो सन्तोष कभी मिलता नहीं, तृप्ति कभी होती नहीं। महात्मा विदुर ने महाभारत में कहा है—

नाग्निस्तृप्यति काष्ठानां नापगानां महोदधिः।
नान्तकः सर्वभूतानां न पुंसां वामलोचना॥

'आग में लकड़ी डालते जाइए, उसकी भूख कभी मिटेगी नहीं; समुद्र में हजारों नदियाँ पहुँच जायें तो उसकी प्यास बुझती नहीं; मौत सभी प्राणियों को खा ले, तो भी उसका पेट नहीं भरता; स्त्री को पुरुषों से या पुरुष को स्त्रियों से तृप्ति कभी होती नहीं। तृप्ति का एकमात्र साधन सन्तोष है, अपने लिए हद (सीमा) बाँध लेना है, यह निर्णय कर लेना है कि हद (सीमा) से आगे जायेंगे नहीं।

इसलिए पैथागोरस ने कहा कि स्त्री-पुरुष को जिन्दगी (जीवन) में केवल एक बार मिलना चाहिए। जब पूछने वाले ने कहा कि—"इससे सन्तोष न हो, तो?"

तो पैथागोरस ने उत्तर दिया—"वर्ष में एक बार मिलना चाहिए।"

पूछनेवाले ने कहा—"फिर भी तसल्ली (सन्तोष) न हो,तो?"

पैथागोरस बोले—"फिर मास में एक बार मिलना चाहिए।"

पूछनेवाले ने कहा—"यदि इससे भी तसल्ली न हो, तब?"

पैथागोरस बोले—"तब उस आदमी को बाजार से अपने लिए कफ़न खरीद लेना चाहिए, क्योंकि वह शीघ्र ही मर जायेगा।"

मैं कहता हूं कि एक नहीं दो कफ़न खरीद लेने चाहियें, क्योंकि ऐसा करने वाले पति और पत्नी दोनों ही बहुत जल्दी मरेंगे।

कोई नियम ही नहीं रहा, अपने-आप पर कोई काबू ही नहीं। और हमारी यह सरकार भी पागल हो गई है। चाहिए यह था कि लोगों को ब्रह्मचर्य के लाभ बताए जाते, यह बताया जाता कि ब्रह्मचर्य से मनुष्य का शरीर स्वस्थ रहता है, बीमारियाँ (रोग) उसके पास आतीं नहीं, आएँ तो जल्दी चली जाती हैं। ब्रह्मचर्य से हड्डियाँ मजबूत (पक्की) होती हैं। आंख, नाक और कान की शक्ति बढ़ती है, मस्तिष्क में प्रकाश आता है, स्मरणशक्ति बढ़ती है, चित्त में प्रसन्नता रहती है। इसलिए ब्रह्मचारी रहो, सन्तान भी कम पैदा करो, अपने सुख की दुनिया भी बसा लो। इसकी बजाय शुरू कर दिया गया यह फ़ैमिली प्लानिंग। कभी एक प्रकार की गोलियाँ, कभी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
दूसरे प्रकार की गोलियाँ। मैं हिमाचल प्रदेश में गया था, एक व्यक्ति से मिलना था। वह कर्मचारी है फ़ैमिली प्लानिंग के कार्यालय में। वहाँ कार्यालय में काम करने वाले डाक्टर साहब भी मिले। मैंने पूछा—"क्यों जी ! आप जो फ़ैमिली प्लानिंग की गोलियाँ लोगों को देते हो, उन्हें लेनेवाले अधिकतर लोग कौन है ? उन्होंन बताया—"अधिकतर लोग हैं नौजवान कुंवारे लड़के और नौजवान कुंवारी लड़कियाँ।"

इनका हो रहा है फ़ैमिली प्लानिंग ! यह विनाश का रास्ता नहीं तो क्या है ? पागलपन नहीं तो क्या है ? जितना रुपया इस फ़ैमिली प्लानिंग पर खर्च किया जाता है, उतना रुपया यदि ब्रह्मचर्य के प्रचार पर व्यय किया जाता तो इस देश के लोग गुलाब के फूल की भाँति खिल उठते; लोगों के चेहरों पर तेज चमक उठता।

यह अनमोल रत्न है भाई ! गोलियाँ या टिकियाँ खाकर इसे नष्ट करो या किसी दूसरे तरीके से, इसके नष्ट होने में हानि-ही-हानि है, लाभ है नहीं।

स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज लाहौर आते, भाषण देते तो अपने लगभग हर भाषण में एक कहानी सुनाया करते थे —

एक था माली। बहुत यत्न और परिश्रम से उसने गुलाब के फूलों का एक बाग लगाया। बहुत-से फूल हुए वहाँ। एक दिन उसने कोई पाँच-छ: मन फूल तोड़े। उन्हें एक बहुत बड़े पतीले में रख दिया। कुछ पानी डाला, फूलों को मसल दिया। तब पतीले के नीचे आग जला दी। फूल गले। भाप बनी तो उसने पतीले के ऊपर अर्क निकालने का बर्तन रख दिया। कोई सोलह बोतल गुलाब का अर्क निकल आया। उसने उस अर्क को फिर से भट्टी पर रखा, अब के आठ बोतल अर्क निकल आया। उसने आठ बोतल अर्क फिर से भट्टी पर रखकर अर्क निकाला, अब के चार बोतल अर्क निकला। इस चार बोतल अर्क से उसने एक बार फिर अर्क निकाला, अब के अर्क दो बोतल रह गया। फिर भट्टी पर चढ़ाया तो एक बोतल अर्क रह गया। और फिर अर्क चढ़ाया तो आधी बोतल गुलाब का इत्र निकल आया।

तब उस माली ने क्या किया ?

बोतल को उठाकर वह एक गंदी नाली के पास पहुंचा। वहाँ सारा इत्र गंदी नाली में फेंक दिया, बोतल को तोड़ दिया और घर चला आया।

स्वामी सर्वदानन्द जी कहा करते थे कि आजकल के लोग भी ऐसा ही करते हैं। गृहस्थाश्रम को इसलिए शुरू किया गया कि दुनिया चलती रहे, स्त्री-पुरुष सन्तान पैदा करने के लिए मिलें। सन्तान हो गई तो उसके बाद अपने-आपको नष्ट क्यों करते हो भाई ! इस अनमोल रत्न को संभाल के रखो, इससे तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक रहेगा, तुम्हारा मस्तिष्क अच्छा रहेगा, तुम्हारे चित्त में खुशी आएगी, शरीर में शक्ति बनी रहेगी।

शरीर को ठीक रखने के लिए आवश्यक है कि समय पर खाओ, समय पर सो जाओ, समय पर जागो, उचित काम करो, उचित व्यायाम भी। ऐसा करने से स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा, दिल के अन्दर खुशी भी, मस्तिष्क में प्रकाश भी। ऐसा न करके यदि कभी प्रातः ८ बजे खाना खाने बैठ जाओ और कभी दोपहर के एक बजे, कभी शाम के सात बजे और कभी रात के बारह बजे, तो पहले पेट खराब होगा, फिर स्वास्थ्य का सत्यानाश हो जायेगा। चरक ऋषि ने स्वस्थ पुरुष के लिए एक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शब्द निर्माण किया है 'काल भोजी' अर्थात् समय पर खानेवाला। एक तो समय पर खाओ, दूसरे परहेज से खाओ। ऐसा करनेवाला आदमी या तो बीमार (रोगी) नहीं होता, हो जाय तो बहुत जल्दी ठीक हो जाता है। चरक ने ही स्वास्थ्य के नियमों का वर्णन करते हुए कहा है—

पथ्याशी व्यायामी स्त्रीषु जितात्मा नरो न रोगी स्यात्।

'जो परहेज से खाता है, ऐसी वस्तुओं को नहीं खाता जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं, जो प्रतिदिन उचित व्यायाम करता है, जो स्त्री हो तो पुरुषों के विषय में, पुरुष हो तो स्त्रियों के सम्बन्ध में अपने-आपको वश में रखता है, ऐसा आदमी रोगी नहीं होता।'

आदमी परहेज कोई करे नहीं, रोग में भी अगड़म-बगड़म चीजें खाता रहे तो इसके सिवाय और क्या होगा कि बीमारी बढ़ती जाये, धीरे-धीरे ला-इलाज हो जाये।

मेरे एक मित्र थे, बहुत बीमार रहते थे। कभी एक कष्ट, कभी दूसरा। एक बार बहुत बीमार हो गए। कई डॉक्टरों से इलाज कराया, ठीक नहीं हुए, तो एक हकीम के पास पहुंचे ; बोले "हकीम जी ! मैं बहुत बीमार हूं, कोई अच्छी-सी दवा दीजिए।" हकीम ने उनकी नब्ज देखी और कहने लगे—"खराबी तो बहुत है। दिल और दिमाग की नसें कमजोर हो गई हैं, फेफड़े निर्वल हैं, अन्तड़ियों में खराबी आ गई है, जिगर और मेज्दा भी कमजोर हैं, फिर भी इलाज हो सकता है। दवाई मैं देता हूं, परहेज आपको करना होगा।"

वे साहब बोले—"सुनिए हकीम जी ! परहेज़ मुझसे होगा नहीं, आप दवाई दें या न दें, मैं जो कुछ खाता-पीता हूं उसे तो छोड़ूंगा नहीं।"

हकीम जी ने पूछा—"क्या खाते-पीते हैं आप ?"

वे बोले—"एक तो खाना खाता हूं।"

हकीम जी ने कहा—"वह तो खाना ही चाहिए।"

वे बोले—"परन्तु मैं खाना खाता हूं गोश्त (मांस) के साथ, जिसमें खूब तेज़ मिर्चें हों, तेज मसाला।"

हकीम जी ने कहा—"यह तो बुरी बात है। और क्या खाते हैं आप ?"

वे बोले—"खाना खाने से पहले शराब पीना भी जरूरी है, नहीं तो भूख नहीं लगती।"

हकीम जी ने कहा—"और क्या करते हैं आप ?"

बोले—"सायं समय अफ़ीम भी खाता हूं, इसकी आदत हो गई है मुझे।"

हकीम जी ने पूछा—"और ?"

वे बोले—"और कुछ नहीं साहब, दिन में दस-बारह प्याले कॉफ़ी पीता हूं, रात को सोते समय कोकीन खाता हूं, इसके बिना मुझे नींद नहीं आती और फिर प्रतिदिन लगभग एक सौ सिगरेट भी पीता हूं।"

हकीम जी ने सोचते हुए कहा—"यह तो बहुत अच्छा करते हैं आप। ऐसा करने के कई लाभ हैं।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वे बोले—"लाभ ? परन्तु डॉक्टर तो कहते हैं इन्हें छोड़ दो। आप बहुत अच्छे हैं हकीम जी, मैं आपसे ही इलाज कराऊँगा। परन्तु लाभ क्या-क्या हैं, यह तो बता दीजिए।"

हकीम जी ने कहा—"पहला लाभ यह है कि जो आदमी ऐसे काम करे जैसे आप कर रहे हैं, उसे बहुत आराम मिलता है। दूसरा यह कि वह कभी बूढ़ा नहीं होता, तीसरा यह कि उसके बीवी-बच्चे, भाई, सम्बन्धी कोई भी उसकी इच्छा के विपरीत नहीं चलता, और चौथा यह कि उसे डॉक्टर-वैद्य-हकीम की जरूरत नहीं पड़ती।"

वे आश्चर्य से बोले—"इतने लाभ होते हैं ?"

हकीम जी ने कहा—"हाँ, मेरे भाई ! जो आदमी वह सब-कुछ करे जो आप कर रहे हैं, वह आज हो या कल, ऐसा बीमार पड़ता है कि चारपाई से उठ नहीं सकता। अब चारपाई पर लेटे रहना आराम नहीं तो क्या है ? फिर ऐसा आदमी जवानी में ही मर जाता है उसे बुढ़ापा। आएगा कैसे ? और जो मर ही गया उसकी पत्नी बच्चे, भाई, सम्बन्धी उसकी इच्छा के प्रतिकूल कैसे चलेंगे ? और जो इस दुनिया में ही नहीं उसे हकीम, डॉक्टर या वैद्य की जरूरत ही क्या है ?

इसके बाद भी वे साहब समझे या नहीं, यह तो मुझे मालूम नहीं, परन्तु यह बात बिलकुल सच है कि जो आदमी परहेज नहीं करता और जो परहेज करने की बजाय बद-परहेज़ी करता है वह अपने शरीर को भी नष्ट कर लेता है, दिल और दिमाग को भी।

यह थी 'पथ्य आशी'—परहेज़ से खाने, परहेज़ से रहने की बात ! ●

अपने मुंह मियां मिट्ठू

एक था लोहार। एक दिन एक ग्राहक उसके पास आया और पूछने लगा, "क्यों भई, तुम्हारी बनाई हुई ढाल कैसी है ?"

लोहार बोला—"मेरी ढाल इतनी मजबूत है कि संसार की कोई भी वस्तु इसमें छेद नहीं कर सकती। इस पर किया गया हर वार बेकार सिद्ध होगा।"

"और तुम्हारे बनाये हुए भाले ?" ग्राहक ने लोहार से पूछा।

"मेरे भाले !" लोहार ने कहा, "संसार में ऐसी कोई वस्तु नहीं, जिन्हें मेरे भाले छेद न सकें।"

अब ग्राहक ने कहा—"भई यदि मैं तुम्हारी ढाल में तुम्हारे ही भाले से छेद करूं तो ?" बेचारा लोहार चुप रह गया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रसिद्ध पत्रकार कुलदीप नैयर की लेखनी से

हिन्दू सोते रहें—

भारत इस्लामिस्तान बन जाने पर यदि नींद खुली भी तो क्या होगा ?

भारत में ८ करोड़ हरिजनों को मुसलमान बनाने का षड्यंत्र

तमिलनाडु में मीनाक्षीपुरम् में कई हरिजनों के धर्म-परिवर्तन के उपरांत केन्द्रीय सचिवालय में 'बड़े पैमाने पर इस्लाम में धर्म-परिवर्तन से उत्पन्न खतरे पर' विचार करने के लिए अनेक बैठकें हो चुकी हैं। जहां इस मामले पर एक ओर मंत्रिमंडलीय सचिव, गृह सचिव और इंटैलीजैंस ब्यूरो के निर्देशक स्तर पर विचार किया गया है, वहीं दूसरी ओर केन्द्रीय गृहमंत्री, गृह राज्य मंत्री और अन्य उच्च अधिकारियों के स्तर पर भी इस बारे में गम्भीरता से विचार किया गया है। ये सभी इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि 'भारी संख्या में धर्म-परिवर्तन की प्रक्रिया से उत्पन्न साम्प्रदायिक असंतुलन के खतरे' को देखते हुए इस प्रकार के धर्म-परिवर्तन को रोकने के लिए कदम उठाए जाने आवश्यक हैं।

धर्म-परिवर्तन पर रोक के उपाय

वस्तुतः जो कदम उठाने के प्रस्ताव किए गए हैं, वे भी काफी महत्त्वपूर्ण हैं। इनके अनुसार सरकार इस प्रकार की गतिविधियों में संलग्न देशी व विदेशी तत्त्वों का पता लगाएगी, 'उनकी गतिविधियों की जानकारी के बारे में विवरण' तैयार करेगी तथा इस प्रकार के तत्त्वों के देश से बाहर जाने या विदेशों से देश में आने पर 'उचित समय पर' प्रतिबन्ध लगाएगी। इसके साथ ही सरकार 'धर्म-परिवर्तन के लिए आने वाले धन अथवा अन्य लालचों या सामग्री' के स्रोतों का पता लगाकर उन पर अंकुश लगाएगी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सरकार यह सब कैसे करेगी, यह स्पष्ट नहीं है, क्योंकि सरकार में जो लोग बैठे हैं, उनमें से कुछ लोग इस सारे मामले में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से संलिप्त हैं।

सरकारी प्रतिष्ठानों का निर्देश

देश के सार्वजनिक संस्थानों के बोर्ड को इस बात के निर्देश दिए गए हैं कि वे इस बात का पता लगाएं कि सरकारी प्रतिष्ठानों के हरिजन कर्मचारियों द्वारा किए जाने वाले धर्म-परिवर्तन से अन्ततः क्या स्थितियां उत्पन्न हो सकती हैं। इसका उद्देश्य इस बात का पता लगाना है कि इन संस्थानों की सेवाओं में 'हरिजन' होने के नाते भर्ती होने के लिए इन कर्मचारियों को जो सुविधाएं प्राप्त हैं, क्या वे हिन्दू धर्म छोड़ देने व धर्म-परिवर्तन के उपरांत जारी रखी जा सकती हैं?

इसी प्रकार राज्य सरकारें भी अपने यहां सरकारी नौकरियों में भर्ती के सम्बन्ध में इस बात का पता लगाएंगी। संविधान नौकरियों, संसद् तथा विधान सभाओं में हरिजनों के लिए हिन्दू समाज के अन्तर्गत आरक्षण की गारंटी देता है, उसके बाहर नहीं। केवल इसमें बौद्धों और सिखों को अपवाद रखा गया है।

नई दिल्ली में हुई बैठकों में उड़ीसा और मध्य प्रदेश की सरकारों द्वारा धर्म-परिवर्तन को रोकने के लिए उठाए गए कानूनी कदमों पर भी विचार-विमर्श किया गया। इन राज्य सरकारों ने 'लालच या अन्य अवैध तरीकों से धर्मपरिवर्तन' पर अंकुश लगा दिया है। कानून का उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध कानूनी कार्रवाई की व्यवस्था की गई है। केन्द्रीय सरकार चाहती है कि अन्य राज्य भी इस प्रकार का कानून बनाएं।

मुस्लिम नेताओं से बातचीत का सुझाव

एक सुझाव यह भी दिया गया है कि मुस्लिम नेताओं से बातचीत कर उन्हें यह अनुभव कराया जाए कि लालच व दबाव से किए गए धर्म-परिवर्तन से एक गम्भीर असंतुलन उत्पन्न होगा तथा उनके संकुचित निहित स्वार्थों के अन्तर्गत किए जाने वाले इन कदमों के प्रतिगामी परिणाम ही होंगे। इस मुद्दे के दृष्टिगत अनेक मुसलमान धर्म-परिवर्तन की इस बात को नहीं चाहेंगे क्योंकि उनमें से अधिकतर को यह आशंका है कि इस प्रकार के धर्म-परिवर्तन हिन्दू-मुस्लिम दंगे भड़का सकते हैं।

इसके अतिरिक्त गृह मंत्रालय ने राज्य सरकारों को इस प्रकार की घटनाओं से उत्पन्न होने वाली स्थितियों के खतरे से भी सतर्क करने का निर्णय लिया है। इस प्रस्ताव में कोई नई बात नहीं है। अत्यन्त नौसिखुआ प्रशासन भी इस बात को भली-भांति समझता है कि 'धर्म-परिवर्तन' के ये मामले साम्प्रदायिक शांति के लिए कितने घातक हो सकते हैं।

हरिजनों की समस्यायें

इन नए कदमों के अनुसार प्रमुख जिलों में ऐसे अधिकारियों को नियुक्त किया जाएगा, जो सवर्ण हिन्दुओं और हरिजनों में संतुलन बनाए रख सकें। शायद यह विचार विपक्षी दलों के सुझाव से लिया गया हो लेकिन यह सुझाव भी दिया गया है कि सवर्ण हिन्दू राजनेता प्रभावित जिलों में 'पद यात्राएं' करके हरिजनों की समस्याओं का मौके पर ही अध्ययन करके उन्हें प्रशासन को बताएं, जिससे कि उनका शीघ्र समाधान हो सके।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विदेशी धन

ऐसा लगता है कि अधिकतर कदम इस धारणा के अन्तर्गत उठाए गए धर्म-परिवर्तन या तो दबाव में किए जाते हैं या फिर आर्थिक लालच के कारण मंत्रालय को इस बात का पता चला है कि जमाते-इस्लामी हिन्द और इंडियन मुस्लिम लीग द्वारा इस बारे में भारी भूमिका निभाई जा रही है। बताया है कि इशाअतुअल इस्लाम सभा तथा तबलीग जमात भी इस बात का प्रचार कर हैं कि केवल धर्म-परिवर्तन से ही हरिजनों को सामाजिक सम्मान और शक्ति हो सकती है तबलीग दलों ने इस वर्ष देश में गत वर्षों की अपेक्षा दुगुनी यात्राएं

● लंदन स्थित इस्लामिक कल्चरल सैंटर द्वारा भारत में आगामी द में मुस्लिम जनसख्या २० करोड़ तक बढ़ाने की योजना बनाई गई ● के देशों से भारत में धर्मान्तरण के लिए भारी मात्रा में धन ● इस ५० हजार तथा अगले वर्ष २ लाख हरिजनों को मुसलमान बनाने का

सरकारी रिपोर्ट में अनेक तथ्यों का उद्घाटन ● दबाव, लालच आदि धर्मान्तरण को रोकने के लिए कई कदम सरकार के विचाराधीन ● प्रदेश व उड़ीसा जैसे कानून अन्य राज्यों में भी बनाने की योजना

गृह मंत्रालय का कहना है कि इस बात के पर्याप्त संकेत हैं कि ज इस्लामी हिन्द तथा अन्य संगठन इस क्षेत्र में जिस बड़े पैमाने पर हरिजनों के परिवर्तन के लिए कार्य कर रहे हैं, उसके पीछे पिछले दो-तीन वर्षों में इन संग को मुस्लिम देशों तथा बहुदेशीय मुस्लिम संगठनों से प्राप्त धन है। इस क्षे अमीर मुसलमान, जिनके खाड़ी के देशों तथा दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र के मुस्लिम दे साथ व्यापारिक सम्बन्ध हैं, इन मुस्लिम संगठनों को आर्थिक सहायता प्र करते हैं।

गृह मंत्रालय के अनुसार कराची स्थित मोतमर अल-आलम-इस्लामी (वि मुस्लिम कांग्रेस) ने मीनाक्षीपुरम् व आस-पास के क्षेत्रों में सामूहिक धर्म-परिवर्त पीछे अपना हाथ होने का श्रेय लिया है। उसने कहा है कि वर्ष १९८१ में ५०, हरिजनों का धर्म-परिवर्तन कराने का लक्ष्य था, जिनमे १७०० का धर्म-परि कराया जा चुका है। १९८२ तक यह संख्या २ लाख तक बढ़ाने का लक्ष्य है।

मुसलमानों की संख्या बढ़ाने की योजना

सरकारी सूत्रों के अनुसार बताया जाता है कि लंदन स्थित इस्ला कल्चरल सैंटर ने भारत में १२ करोड़ हरिजनों में से ८ करोड़ लोगों को खा तेलबहुल अमीर मुस्लिम देशों तथा अन्य अरब देशों से प्राप्त धन की सहायत मुसलमान बनाने की योजना बनाई है। इस योजना का उद्देश्य आगामी द मुस्लिम जनसंख्या को ८ करोड़ से बढ़ाकर २० करोड़ करना है। वैसे इस सूच कितनी सत्यता है, यह विचारणीय बात है।

बताया जाता है कि सऊदी अरब द्वारा गठित लंदन के इस्लामिक कल्च सैंटर, लंदन द्वारा खुलेआम यह कहा जाता है कि हरिजनों का धर्म-परिवर्तन कर मुसलमान बनाए जाने का उद्देश्य 'भारत में मुसलमानों की स्थिति को म करना है।'

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एक सरकारी रिपोर्ट में भी कहा गया है कि "खाड़ी के देशों से मुस्लिम संस्थाओं, मस्जिदों तथा गुटों को आर्थिक सहायता प्रदान की जा रही है। अधिकतर मामलों में यह धन खुले-आम नहीं आता है।"

हिन्दुओं में यह आशंका तो है ही कि इस प्रकार के प्रयास उनके बहुसंख्यक स्वरूप को नष्ट करने के लिए किए जा रहे हैं। लेकिन अनुसूचित जनजातियों के मद्रास स्थित केन्द्रीय निदेशक की, जिन्होंने मीनाक्षीपुरम् में धर्म-परिवर्तन के मामले की जांच की थी, रिपोर्ट को भी नहीं भूला जा सकता है, जिसमें उन्होंने कहा है कि "छुआछूत के कारण उत्पन्न सामाजिक भेदभाव तथा हिन्दू समाज द्वारा हरिजनों के प्रति अपनाई गई भारी उपेक्षा धर्म-परिवर्तन का प्रमुख कारण है।" बताया जाता है कि धर्म-परिवर्तन करने वाले इन हरिजनों ने कहा कि उन्होंने स्वेच्छा से इस्लाम ग्रहण किया है, न कि किसी दवाव अथवा लालच में आकर।

सरकारी सूत्रों के अनुसार १९८१ में २००० से अधिक हरिजनों ने इस्लाम धर्म ग्रहण किया है। ये धर्मान्तरण मुख्य रूप से तमिलनाडु के तिरुनलेवेली, मदुरै, रामनाथपुरम् और तंजावूर जिलों में हुए हैं। लेकिन उत्तरी अर्काट जिले में भी धर्मान्तरण की यह प्रक्रिया शुरू हो गई है। बिहार, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश और दिल्ली में भी धर्मान्तरण के इक्के-दुक्के मामले हुए हैं।

सवर्ण जिम्मेदार

हरिजनों द्वारा ईस्लाम ग्रहण करना या इसाई बनना कोई नई बात नहीं है। वस्तुत: वे छुआछूत और हिन्दू समाज की जाति प्रथा से क्षुब्ध हो चुके हैं। हरिजनों को सवर्ण हिन्दुओं के हाथों अनेक सामाजिक अत्याचार सहने पड़े हैं। विशेषकर ग्रामीण क्षत्रों में जिस प्रकार की स्थितियां बन गई हैं, उनमें मुस्लिम धर्म प्रचारकों तथा ईसाई मिशनरियों के लिए इन वर्गों में अपनी घुसपैठ करना आसान हो गया है। स्वयं एक सरकारी रिपोर्ट में इस बात को स्वीकार किया गया है कि "अनुसूचित जातियों विशेषकर इन जातियों के शिक्षित वर्गों में अपनी सामाजिक पहचान व सामाजिक प्रतिष्ठा पाने की तीव्र लालसा उत्पन्न हो गई है। जब उन्हें अपनी इस इच्छा की पूर्ति होती नहीं दिखाई देती, तो वे समाज में समान स्तर पाने तथा अपने अच्छे भविष्य के लिए इस्लाम की ओर उन्मुख होते हैं।

रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि मुस्लिम समुदाय इस प्रकार के धर्म-परिवर्तन करने वाले हरिजनों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण रखता है। यहां तक कि वे इन धर्मान्तरण करने वाले लोगों की बाद में देखभाल करने को तैयार रहते हैं।

सरकार का दायित्व

जब भी कोई धर्म-परिवर्तन की घटना होती है, उसके पीछे विदेशी हाथ होने की बात कही जाती है और इसमें कुछ गलत हथकंडों का प्रयोग भी हो सकता है। संविधान स्वैच्छिक धर्म-परिवर्तन की अनुमति देता है। जो लोग स्वेच्छा से हिन्दू धर्म के अलावा किसी धर्म को ग्रहण करते हैं, सरकार उनके विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं कर सकती है। किसी व्यक्ति का धार्मिक विश्वास या धर्म विशुद्ध रूप से उसकी अपनी बात होती है। यह व्यक्ति के अपने व जिस भगवान् पर वह विश्वास करता है, उसके मध्य का सम्बन्ध होता है। एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र में इस बात को सुनिश्चित होना ही चाहिए। लेकिन यह अपेक्षा किया जाना स्वाभाविक ही है कि सरकार हिन्दुओं को इस बात के लिए प्रेरित करे कि वे हरिजनों के साथ मानवीयता का व्यवहार करें। ●

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चुनौती स्वीकार करो और

जन-ज्ञान घर-घर में पहुंचा दो!

※
※※

प्रतिमास कम से कम २० प्रतियाँ मंगाकर वितरित करें—केवल ३०) में।

आप २) प्रति हमें भेज दें, हम उसे जमा रखेंगे और प्रतिमास केवल १५) की वी० पी० से आपको जन-ज्ञान की १० प्रतियां भेज देंगे।

डाक खर्च भी हम देंगे।

आप १० या १० से अधिक जितनी भी प्रतियां चाहें, १)५० प्रति के हिसाब से मंगा सकते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२६ मार्च को आर्यसमाज स्थापना दिवस पर विशेष लेख

देश, धर्म व हिन्दू समाज को आर्यसमाज की देन

—दत्तात्रेय वाब्ले

७ अप्रैल, १८७५ को बम्बई में ऋषि दयानन्द ने पहली आर्यसमाज स्थापित की थी। उसे आज १०६ वर्ष से अधिक समय हो गया है। यद्यपि धार्मिक और सामाजिक आन्दोलनों के इतिहास में १०६ वर्ष अधिक नहीं हैं, किन्तु इन वर्षों में आर्यसमाज ने जो सफलतायें और उपलब्धियां प्राप्त की हैं, वे कई दृष्टियों से आश्चर्यजनक कही जा सकती हैं।

विचार क्रान्ति

संसार की क्रान्तियों का मुख्य आधार विचारों की क्रान्ति रहा है। प्रायः सब इतिहासवेत्ता आर्यसमाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द को उन्नीसवीं सदी का महान् क्रान्तिकारी विचारक मानते हैं। उनकी प्रेरणा से आर्यसमाज ने गत सौ वर्षों में धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक, राष्ट्रीय और राजनैतिक आदि प्रायः सब क्षेत्रों में नयी आकांक्षायें, नयी दिशायें, नयी आशायें और नयी सम्भावनायें उत्पन्न की हैं।

धार्मिक क्रान्ति

आज के वैज्ञानिक युग में ईश्वर और धर्म के प्रति अविश्वास का कारण उनके नाम पर प्रतिपादित अन्धविश्वास और प्रचलित निरर्थक रीति-रिवाज हैं। आर्यसमाज के रूप में ऋषि दयानन्द ने हमें एक ऐसा जीवन-दर्शन दिया है जो हमारी आध्यात्मिक जिज्ञासा, मनोवैज्ञानिक आकांक्षा और जीवन की व्यावहारिक आवश्यकता को सन्तुष्ट करता है और साथ ही शाश्वत सत्यों के आधार पर प्रगति का मार्ग भी खुला रखता है। उनके द्वारा प्रतिपादित यह जीवनदर्शन या धर्म सरल, सीधा-सादा सबके लिये समान रूप से साध्य और तर्कविहीन विश्वासों और कर्मकाण्डों से मुक्त है। उसकी छः विशेषतायें निम्नलिखित हैं—

१. ईश्वर कोई व्यक्ति नहीं बल्कि एक निराकार शक्ति है।

२. आत्मा अनादि और अमर है, किन्तु कर्म करने में वह सर्वथा स्वतन्त्र है। स्वस्थ तथा सम्पन्न शरीर उसका आवश्यक साधन है।

३. स्थूल जगत् या प्रकृति का भी अस्तित्व पृथक् और अनादि है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

४. कर्म और उसका परिणाम पुनर्जन्म है, किन्तु उनका आधार भाग्य या केवल ईश्वर इच्छा न होकर पुरुषार्थ और कर्म की स्वतन्त्रता है।
५. सब प्रकार की समानता पर आधारित व्यक्तिगत और सामाजिक कल्याण एक दूसरे के पूरक हैं।
६. ईश्वर और मनुष्य के बीच में किसी पैगम्बर, गुरु या मसीहा अथवा दूत की मध्यस्थता की आवश्यकता नहीं है।

सामाजिक क्रान्ति

आज का सुधरा हुआ हिन्दू समाज आर्यसमाज की ही देन है। जन्मगत जात-पांत, छुआछूत, बाल-विवाह, पर्दा, दहेज आदि का विरोध तथा खान-पान और चौके-चूल्हे के बन्धनों के विरुद्ध सैद्धान्तिक प्रचार और व्यावहारिक आन्दोलन आर्यसमाज का ही कार्य है। अन्तर्जातीय विवाह, विधवा विवाह, स्त्री शिक्षा, विदेश यात्रा आदि पर लगे प्रतिबन्धों की जड़ें आर्यसमाज ने ही खोखली की हैं।

हिन्दू तब और अब : आर्यसमाज की एक बड़ी सेवा यह है कि उसने हिन्दू धर्म और हिन्दू समाज़ को उसकी अनेक कमजोरियों से मुक्त करके संगठित और सुनिश्चित करने का ही प्रयत्न किया।

स्वराज्य और स्वदेशी : भारत में राजनैतिक चेतना और राष्ट्रीयता की योजना उत्पन्न करने में अंग्रेजी शिक्षा के साथ सामाजिक और धार्मिक आंदोलनों का प्रमुख योगदान रहा है। किन्तु राजा राम मोहन राय और ब्राह्म समाज के विपरीत आर्यसमाज का यह सुधार आन्दोलन सर्वथा भारतीय और राष्ट्रीय था। १८८५ में कांग्रेस के जन्म से १० वर्ष पूर्व १८७५ में स्वराज्य का पहला उद्घोष करने वाले स्वामी दयानन्द थे। अपने सत्यार्थ प्रकाश में उन्होंने निर्भयतापूर्वक यहां तक लिखा है कि विदेशी राज्य स्वदेशी राज्य की बराबरी नहीं कर सकता। पाश्चात्य विचारकों का "Good government is no substitute for self-government" अर्थात् 'सुराज्य स्वराज्य का विकल्प नहीं है, इस आधुनिक सिद्धान्त की स्वामी जी ने इतने पहले घोषणा कर दी थी। इसी प्रकार वंग-भंग से बहुत पूर्व स्वामी जी ने सदा स्वदेशी वस्तुओं का स्वयं व्यवहार करके तथा दूसरों को भी ऐसा ही आग्रह करके स्वदेशी आन्दोलन को जन्म दिया था। अंग्रेज सरकार आर्यसमाज को एक राजद्रोही आन्दोलन समझती थी जैसा सर वेलेन्टाइन शिरोल ने 'इण्डियन अनरेस्ट' में स्वीकार किया है। स्वाधीनता के आन्दोलन और गांधी जी के सत्याग्रह आन्दोलन में लाला लाजपत राय और स्वामी श्रद्धानन्द जैसे आर्य नेता और हजारों आर्य समाजी जेल गये। क्रान्तिकारियों में भाई परमानन्द, भगतसिंह और रामप्रसाद बिस्मिल आदि फांसी की सजा पाने वाले अनेक शहीद आर्यसमाज से सम्बन्धित थे। Everyman के विश्वकोष के पृष्ठ ४२१ पर तो आर्यसमाज को स्पष्ट रूप से एक ऐसा राजद्रोही संगठन कहा गया है, जिसका उद्देश्य देश की आजादी था।

नमस्ते : आर्यसमाज द्वारा देश की भावनात्मक एकता के प्रयत्न का एक छोटा-सा प्रतीक 'नमस्ते' है। पहले यह आर्यसमाजियों की पहचान थी। आज यह सर्वसम्मत भारतीय सम्बोधन बन गया है।

शिक्षा प्रसार : शिक्षा के क्षेत्र में आर्यसमाज का योगदान सर्वपरिचित और प्रसिद्ध है। सरकार के बाद सबसे अधिक शिक्षण संस्थायें आर्यसमाज की हैं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उसके डी. ए-वी. स्कूल और कालेज, संस्कृत, कन्या पाठशालायें और गुरुकुल सारे उत्तरी हिन्दुस्तान में तथा हैदराबाद और महाराष्ट्र के अतिरिक्त मारीशस, पूर्वी व दक्षिणी अफ्रीका, फिजी आदि विदेशों में फैले हुए हैं। इनकी संख्या एक हजार रु० से अधिक है, जिनमें दस लाख के करीब विद्यार्थी हैं और जिन पर वार्षिक तीन करोड़ से अधिक रुपया व्यय होता है। शिक्षा प्रसार के अतिरिक्त धार्मिक शिक्षा तथा राष्ट्रीय वातावरण इन संस्थाओं की विशेषता है।

अछूतोद्धार : छुआछूत हिन्दू समाज का कलंक है। आर्यसमाज ने इसे मिटाने के लिये सबसे अधिक संघर्ष किया और बलिदान तक दिये हैं। आर्यसमाज की शिक्षण संस्थाओं में उन्हें सवर्णों से अधिक सुविधायें दी जाती रही हैं। वेद और संस्कृत पढ़ने का ही नहीं पढ़ाने का भी अधिकार उन्हें आर्यसमाज ने ही दिया। कई आर्य-समाजों में हरिजन कुलोत्पन्न पण्डित-पुरोहित आज भी विवाह, यज्ञोपवीत, हवन आदि संस्कार कराते हैं।

विदेशों में प्रचार : एक सर्वेक्षण के अनुसार जहां सारे भारत में चार हजार (४०००) आर्यसमाजें हैं, जिनमें से एक हजार ग्रामीण क्षेत्रों में हैं, वहां मारी-शस, फिजी, अफ्रीका आदि में भी २०० से अधिक आर्यसमाजें तथा आर्य स्कूल, कालेज व पाठशालायें हैं। लाखों प्रवासी भारतीयों में आज हिन्दू धर्म, संस्कृति और हिन्दी भाषा का प्रचार इन्हीं आर्य संस्थाओं के कारण है।

राष्ट्रभाषा हिन्दी : स्वयं गुजराती होते हुए भी हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित करने की सबसे पहले स्वामी दयानन्द ने ही दूरदर्शिता दिखायी। अहिन्दी प्रान्तों में भी आर्यसमाज का सारा कार्य और प्रकाशन हिन्दी में किया जाता है। आर्य शिक्षण संस्थाओं में सर्वत्र हिन्दी अनिवार्य है।

वेद और संस्कृत : वेदों और हिन्दी में सरल भाष्य और उनके प्रचार का कार्य आर्यसमाज का प्रमुख उद्देश्य रहा है। इसी प्रकार संस्कृत के अध्ययन और यहां तक कि उसे शिक्षा का मुख्य विषय और माध्यम बनाने क लिए आर्यसमाज ने प्राचीन गुरुकुल प्रणाली को पुनः प्रचलित किया।

महिला समानता : स्वामी जी स्त्रियों की समानता के ही समर्थक नहीं थे अपितु मातृ-शक्ति कह कर उन्हें किन्हीं क्षेत्रों में पुरुषों से श्रेष्ठ मानते थे। स्त्रियों को न पढ़ाने की पुरानी हिन्दू मान्यता के विपरीत आर्यसमाज ने उनकी शिक्षा के लिए जितने स्कूल, पाठशालायें और गुरुकुल तक खोले उतने स्वाधीनता से पूर्व सर-कार द्वारा भी नहीं खोले गये थे। वेद और संस्कृत के अध्ययन का महिलाओं को भी अधिकार है, यह आर्यसमाज की मान्यता रही है। स्त्रियों को यज्ञोपवीत धारण करने का अधिकार केवल आर्यसमाज ही देता है। पर्दा, दहेज, बहुविवाह, बाल-विवाह के विरुद्ध आन्दोलन और अन्तर्जातीय विवाह तथा विधवा विवाह का समर्थन सबसे पहले और सबसे अधिक प्रभावपूर्ण ढंग से आर्यसमाज ने ही किया।

विश्वव्यापी लक्ष्य : यद्यपि आर्य समाज का कार्यक्षेत्र मुख्य रूप से भारत और हिन्दू समाज रहा है, किन्तु उसने 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का लक्ष्य अपने सामने रखा। उसके छठे नियम में संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, यह घोषणा की गई है। प्रथम तीन नियमों में ईश्वर और वेद के सम्बन्ध में ऋषि दयानन्द के द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों का उल्लेख है, किन्तु बाकी के सात नियम

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इतने व्यापक और उदार हैं कि उन्हें आसानी से विश्वव्यापी मान्यता दी जा सकती है। दसों नियम केवल २२ पंक्तियों में आ जाते हैं। नवें नियम में 'सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझने' तथा दसवें नियम में 'व्यक्तिगत मामलों में स्वतन्त्रता और सर्वहितकारी सामाजिक मामलों में परतंत्रता, के सिद्धान्त व्यक्ति और समाज के समन्वय और एक आदर्श समाजवाद की आधारशिला बन सकते हैं। स्वयं स्वामी जी ने बार-बार लिखा है कि 'सत्य के ग्रहण और असत्य के त्याग के लिए मैं सदा तत्पर हूं।' चौथे नियम में यही आदेश उनके अनुयायियों को दिया गया है। अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ का नाम उन्होंने 'सत्यार्थ प्रकाश' रखा और 'सत्यमेव जयते' यह उनका सर्वप्रिय जयघोष था। इसे अब हमारे संविधान में भारत का आदर्श स्वीकार कर लिया गया है। ●

क्लास टीचर ने कहा, "राजीव" कल अपने पिताजो को बुलाकर लाना।"

राजीव—"सर ! पच्चीस रुपये दे दोजिए।"

"पच्चीस रुपये किस बात के ?" क्लास टोचर ने आश्चर्य से पूछा।

"जी, मेरे पिताजो डाक्टर हैं, और किसी के यहाँ जाने की उनकी फीस पच्चीस रुपये है।"

० ० ०

एक सज्जन की आदत थी कि वे रास्ते में कभी किसी से हालचाल नहीं पूछते थे। हाँ, यदि कोई परिचित रेस्तरां या कैण्टीन में बैठा कुछ खा-पी रहा हो, तो वे अवश्य ही नमस्कार करके हालचाल पूछने के लिए उसके पास जा पहुँचते थे।

एक दिन उन्होंने रेस्तरां में अपने एक मित्र को देख लिया। फिर जोर से नमस्कार किया और अन्दर जा धमके।

मित्र भी कम चालाक नहीं थे। उन्होंने स्वागत करते हुए कहा, वैलकम दोस्त ! आप ठीक वक्त पर आये हैं। मैं भी किसी परिचित की प्रतीक्षा में था। दर असल नाश्ता करने के बाद मुझे पता चला कि पर्स आज घर भूल आया हूं। आपके आने से मेरी समस्या हल हो गई। कृपा करके पांच रुपये चालीस पैसे आज के मेरे नाश्ते के आप ही दे दें।"

० ० ०

गाड़ी में टिकट चैकर ने सीट के नीचे छुपे हुए एक यात्री को बाहर निकालकर टिकट मांगा। यात्री ने गिड़गिड़ाते हुए कहा, "क्षमा कर दीजिए। इस बार छोड़ दीजिए। मेरी बेटी की शादी है और मेरा जाना जरूरी है।"

टिकट-चेकर ने तरस खाकर उसे छोड़ दिया। इतने में उसकी नजर दूसरी सीट के नीचे सोये हुए नवयुवक पर पड़ी। टिकट-चैकर ने उसको भी बाहर निकालकर पूछा, "क्यों, क्या तुम्हारी भी बेटी की शादी है ?"

उस आदमी ने शरमाते हुए उत्तर दिया, "जी नहीं ! मैं उसका होने वाला दामाद हूं।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गतांक से आगे

आध्यात्मिक सत्संग

—महात्मा नारायणस्वामी

उपनिषदों की कथाएं

पहला भाव ऊंचा है। यही भेद सकाम और निष्काम कर्मों का है। जो काम कर्त्तव्य समझकर फल की इच्छा न रखते हुए किए जाते हैं वे निष्काम कर्म और जो कर्म इच्छा वा वासना से युक्त होकर किए जाते हैं, वे सकाम कर्म कहलाते हैं। फल की इच्छा के कर्म बन्धन का हेतु होते हैं किन्तु निष्काम कर्म नहीं। फल दोनों प्रकार के कर्मों का मिलता है। उपनिषद् मनुष्यों का कर्त्तव्य ठहराता है कि कर्म करते हुए भी संसार चक्र में न फंसे। संसार चक्र में फंसे हुए प्राणी इस चक्र से तभी निकल सकते हैं जब वे सकामता को निष्कामता में परिवर्तित कर देवें।

पांचवां कर्त्तव्य

"जो कोई आत्मा के घातक मनुष्य हैं वे मर कर गहरे अंधेरे से आच्छादित हुए लोकों (योनियों) को प्राप्त होते हैं।

यहां "आत्म-हनन" का अर्थ आत्मा का कत्ल करना नहीं है वरन् आत्मा के विरुद्ध आचरण करना है। कल्पना करो कि हमारे समाज में नन्हीं २ वा उनसे कुछ बड़ी असंख्य विधवायें हैं जिन्हें मुश्किल से 'विधवा' शब्द से सम्बोधित किया जा सकता है। कोई मनुष्य आत्मा की प्रेरणा पर उन्हें विधवा स्वीकार नहीं करता है और कहता है उनकी शादी होनी चाहिए। जब वह बिरादरी के पंचों को किसी ऐसी सभा में देखता है तो उनके भय से सम्मति दे देता है कि नहीं होनी चाहिये। इसी को 'आत्मा' का हनन कहते हैं। ऐसा कभी नहीं होना चाहिए। "आत्मा" का हनन करने वाले लोगों की सम्मति का कोई मूल्य नहीं होता और न संसार ऐसे लोगों की सम्मतियों का आदर ही करता है। न ऐसे लोगों का कोई मान ही होता है। जब तुम कोई काम करना चाहो तब अपनी आत्मा से सलाह लो। यदि 'आत्मा' से उस काम के लिए उत्साह हो तो करो। यदि भय हो तो मत करो। अच्छे कामों में उत्साह और खुशी होती है, बुरे कामों के करने में भय, शर्म और शंका होती है। आत्मा की प्रेरणा से अच्छा चरित्र बना करता है और उसके विरुद्ध आचरण करने से बुरा चरित्र बना करता है। तात्पर्य यह है कि 'आत्मा' के अनुकूल ही कार्य करने से हम चरित्र बनाते हुए आत्म-जगत् में प्रवेश का अधिकार प्राप्त करते हैं। पश्चिम के विचारकों ने भी उपनिषद् की इस शिक्षा की सच्चाई को स्वीकार किया है। प्रसिद्ध विद्वान मारले ने एक पुस्तक राजीनामा (Compromise) नामक लिखी है। उसमें विचार किया गया है कि किन दशाओं में राजीनामा हो सकता है। उसने जो सम्मतियां प्रकट की हैं, वे ये हैं—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(१) सम्मति का स्थिर करना
(२) सम्मति का प्रकट करना
(३) सम्मति को क्रिया में लाना

भारले ने कहा कि सम्मति के स्थिर करने में राजीनामा नहीं हो सकता। सम्मति के प्रकट करने में कुछ राजीनामा हो सकता है जैसा कि मनु ने कहा है— "सत्य बोलो, प्रिय सत्य बोलो, अप्रिय सत्य मजबूरी के सिवा मत बोलो।" तात्पर्य यह है कि जिस सम्मति के प्रकट करने पर बुरा परिणाम निकलने की सम्भावना हो वह सम्मति कभी प्रकट न की जाय। पूरा पूरा राजीनामा सम्मति के अमल लाने में हुआ करता है। अर्थात् अल्प पक्ष की सम्मति की उपेक्षा करके बहु पक्ष के मतानुकूल कार्य किया जाय। मतलब यह है कि सम्मति के स्थिर करने में कभी भी कोई राजीनामा नहीं हो सकता। आत्मा की प्रेरणानुसार किसी विचार के स्थिर करने को ही सम्मति कहते हैं।

एक ठग का उदाहरण

मध्य प्रदेश में ठग प्रथा जारी थी। सरकार ने इस प्रथा का दमन कर दिया है। अमीर अली और तांतिया नामक दो ठग बड़े प्रसिद्ध थे। अमीर अली के माता पिता उसके बचपन में ही मर गये थे। वह एक ठग के हाथ पड़ गया था। ठग ने यह सोचकर कि वह अमीर अली को अपना उत्तराधिकारी बना देगा, उसका भली भांति पालन पोषण किया। अमीर के बड़े हो जाने पर उस ठग ने उस अमीर को ठग बृत्ति करने के लिए कहा। अमीर बड़ा सहृदय था, उसे इस वृत्ति से घृणा थी। उसने यह वृत्ति करने से इन्कार कर दिया। वह ठग बहुत यत्न करने पर भी अमीर को ठगी करने के लिए प्रेरित न कर सका और निराश हो गया। पश्चात् अमीर अली एक दूसरे ठग के अधिकार में रक्खा गया। वह दूसरा ठग चतुर था। उसने पहला काम जो किया वह अमीर की मनोवृत्ति का ठीक-ठीक अध्ययन करना था। उसे मालूम हुआ कि अमीर का ध्यान वर्जिश (व्यायाम) की ओर है। उसने अमीर को व्यायाम सिखलाया और अन्त में अमीर की सहानुभूति उस ठग की ओर पूरी पूरी हो गई। जब उस ठग ने देख लिया कि मेरा रंग अमीर पर पूरा पूरा चढ़ गया है तब उसने अमीर को कहा कि एक ऐसी वर्जिश है कि एक रूमाल में कुछ बांधकर मनुष्य गले में दूर से फेंका जाय जिससे मनुष्य मर जावे। अमीर ने इस वर्जिश पर सन्देह किया।

वस्तुत: यह घड़ी अमीर के लिए बड़ी बुरी थी। तभी तो कहा है कि जो घड़ी आए उसका उत्तमता से प्रयोग करो। दुष्प्रयोग से न मालूम क्या अनिष्ट हो जाय। अमीर उस वर्जिश को प्रत्यक्ष देखने के लिए लालायित हो गया। उस ठग ने रूमाल बांधकर गले में फेंकने से एक राहगीर को मारा। अमीर को फिर सन्देह हुआ। वस्तुत: यह घड़ी भी बड़ी दुर्भाग्य पूर्ण थी। सन्देह यह हुआ कि किस प्रकार कपड़े से आदमी मर सकता है। तब ठग ने अमीर को आजमाने को कहा। अमीर ने राहगीर को मारकर उसे आजमाया और सही पाया। फल यह हुआ कि उसके हृदय में वासना पैदा हुई और कुसंगति में पड़कर उसने उसकी सहृदयता को दबा दिया। बाद को अभ्यास करते २ वह पक्का ठग हो गया। जब आत्मा अपनी प्रवृत्तियों को कुसंगति वा प्रलोभनों में पड़कर दबा दिया करता है, तब उसका पतन हो जाया करता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस प्रकार उपनिषदों ने सबसे पहली बात उपर्युक्त पांच कर्त्तव्यों का अनुष्ठान बतलाया जिनके अमल से मनुष्य अपने को ब्रह्म विद्या के प्रवेश का अधिकारी बना लिया करता है और संसार में इन नियमों से उनका कल्याण हुआ करता है।

२. कथासार

ब्रह्म विद्या प्राप्ति का अधिकार की ईश्वर सूक्ष्मता, वेगवत्ता तथा व्यापकता, प्रलय का रहस्य, ईश्वर के विषय में सिद्धान्त, उपासना क्यों करनी चाहिए ? उपासना का स्वरूप, ईश्वर की व्यापकता और विश्व-प्रेम का संबंध, योग, ध्यान, ध्याता, ध्येय, ईश्वर प्राप्ति के उपाय आदि का इस कथा म रोचक ढंग से वर्णन किया गया है।

बहनो और भाइयो !

जिन पांच नियमों के अनुष्ठान से मनुष्य लोक और परलोक में उन्नति कर सकता है, उनका वर्णन किया जा चुका है। वे पांच कर्त्तव्य इस प्रकार हैं।

(१) ईश्वर सर्वत्र व्यापक है।

(२) संसार में जिन चीजों का तुम भोग करो, उनका कर्त्तव्य समझकर ही भोग करो।

(३) दूसरों के धन के अपहरण की चेष्टा मत करो।

(४) पुरुषार्थमय जीवन व्यतीत करो, परन्तु जो काम करो उसे कर्त्तव्य समझकर ही करो।

(५) अपनी आत्मा के अनुकूल काम करो।

इस उपनिषद् का दूसरा भाग 'ब्रह्म-विद्या' से सम्बन्धित है। इन पांचों कर्त्तव्यों के अनुष्ठान से मनुष्य ब्रह्म विद्या में प्रवेश का अधिकार पा लेता है। जिस विद्या में ब्रह्म का वर्णन हो, वह ब्रह्म विद्या कहलाती है। ब्रह्म का वर्णन उसके गुणों के द्वारा होता है और उसके गुण बहुत से हैं। उसके समस्त गुणों का ज्ञान किस प्रकार हो सकता है यह सवाल जिज्ञासुओं को परेशान करता रहता है। ब्रह्म विद्या की प्राप्ति का उद्देश्य अपनी उन्नति करना और उन्नति करते करते ब्रह्म को प्राप्त कर लेना है। उपनिषदों में इन गुणों का अच्छा विधान मौजूद है। उपनिषदों ने ईश्वर के उन गुणों को जान लेने की शिक्षा दी है जिनसे ईश्वर के ईश्वरत्व का विवेक व ज्ञान प्राप्त होता है और जिनसे मनुष्य का कल्याण होता है।

ईशोपनिषद् के इस भाग में ईश्वर के इन्हीं गुणों पर विचार किया है। आगे कहा गया है "वह एक ब्रह्म एकरस, मन से अधिक वेग वाला, सब जगह पहले से पहुंचा हुआ है। उस ब्रह्म को इन्द्रियां प्राप्त नहीं कर सकतीं। वह अचल होने पर भी दौड़ते हुए अन्यों को उल्लंघन किए हुए है। उसके भीतर वायु जलों को मेघ इत्यादि के रूप में धारण करता है अर्थात् एकरस का अर्थ एक ही है। वह मन से अधिक वेग वाला है।" दुनिया की सब चीजों की नाप तोल हो सकती है परन्तु मन की चाल का अन्दाजा नहीं किया जा सकता। वह मन जब कभी तेजी से चलकर जहां

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पहुंचता है वहां ईश्वर पहले से ही मौजूद मिलता है। तात्पर्य यह है कि ईश्वर ब्रह्माण्ड में ओत प्रोत है, उसे इन्द्रियां प्राप्त नहीं कर सकतीं।

हम दुनिया में किसी चीज को देखा नहीं करते हैं। हमें उस चीज के गुणों का ही प्रत्यक्ष हुआ करता है। अर्थात् मनुष्य गुणों को देख सकता है, गुणी को नहीं। जब हम इन्द्रियों से प्राकृतिक वस्तुओं में भी गुणी को नहीं देख सकते तब हम उस अप्राकृतिक ईश्वर को इन्द्रियों से कैसे देख सकते हैं? जैसे हम प्राकृतिक वस्तुओं में गुणों को देखकर गुणी को देखा और समझा करते हैं ठीक वैसे ही हम ईश्वर को उसके गुणों से देख सकते हैं। ईश्वर का एक खास गुण रचना है। हम उसकी रचना से उसे देख सकते हैं। आज हम आविष्कारों की चर्चा सुनते हैं, हम कहते हैं कि न्यूटन ने आकर्षण शक्ति को मालूम किया। आविष्कार का मतलब उस चीज का पता लगाना है जो जगत् में मौजूद तो होती है परन्तु हम उसे नहीं जान सकते। आविष्कार का अर्थ अपनी अनभिज्ञता की स्वीकृति है। मनुष्य रचना के द्वारा ईश्वर को किस प्रकार जान सकता है? मनुष्य कितनी ही तेज सवारी क्यों न बनाले और उस पर चढ़कर कहीं जाय तो उसे ईश्वर वहां पहले से ही मिलेगा। वह ठहरा हुआ ही सब दौड़ने वाली चीजों का उल्लंघन किये हुए है। उस ईश्वर के भीतर वायु जलों का धारण करता है। बादल वायु में ही रहता है, गरज कि ब्रह्माण्ड के सब काम ईश्वर के अन्तर्गत हैं।

आगे कहा गया है कि ब्रह्म गति देता है, परन्तु स्वयं गति में नहीं आता। वह दूर है, वह समीप भी है, वह इस सबके अन्दर और बाहर भी है। ईश्वर का सृष्टि कर्त्तृत्व केवल इतने से ही प्रारम्भ होकर पूर्णता प्राप्त कर लेता है कि उस समय जब प्रलय के बाद जगत् उत्पन्न होता है और प्रकृति होना चाहती है तो उस उद्देश्य की पूर्ति के लिए वह शान्त और स्वस्थ गति रहित प्रकृति में गति का सञ्चार करता है जिससे प्रकृति की शान्ति भंग होकर क्रमशः सूक्ष्म और स्थूल भूतों की उत्पत्ति होकर प्रलय सृष्टि में परिवर्तित हो जाती है। इस गति को विद्वानों ने भी स्वीकार किया है।

प्रलय का रहस्य

प्रकृति अपनी असली हालत में है। वह जड़ है। उसमें अपनी गति नहीं है, महाप्रलय हो चुकी है, सृष्टि की उत्पत्ति के लिए गति की जरूरत है, वह गति कहां से आये? नास्तिक वैज्ञानिक इसी प्रश्न से चकरा जाते हैं और उन्हें किसी सुपर-नेचुरल फोर्स व ईश्वर की सत्ता स्वीकार कर लेनी पड़ती है। गति देने के लिए गति देने वाले से अलग कुछ आकाश या जगह होनी चाहिए तभी वह गति दे सकता है। यहां यह आशंका उत्पन्न होती है। परन्तु ईश्वर की गति के सम्बन्ध में यह बात नहीं है। ईश्वर को उस तरह की गति देने की जरूरत नहीं होती जैसी कि हम देते हैं। वह स्वभावतया गति देता है, इरादे से नहीं देता। मनुष्य के सब काम इरादे से होते हैं। उसको स्वाभवतः इच्छा हुई कि प्रलय समाप्त हो और सृष्टि उत्पन्न हो, इस स्वाभाविक इच्छा को ईक्षण कहते हैं—ईक्षण के अर्थ हैं इच्छा—हमारी इच्छायें अप्राप्त वस्तुओं की होती हैं। ईश्वर और मनुष्य की इच्छा में भेद दिखलाने के लिए ही इच्छा और ईक्षण शब्द रक्खे गये हैं। उसने इच्छा की और गति पैदा हुई।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विज्ञान का भी यह नियम है कि गति से पहले इच्छा होती है। विधाता ने जर्रों से ब्रह्माण्ड भर रखा है। गति ने एक जर्रे को गति दी, दूसरे ने तीसरे को, तीसरे ने चौथे को, इसी प्रकार गति होती चली गई और ब्रह्माण्ड के जर्रों में आलमगीर हरकत पैदा हो गई। जब पहले ने अपनी जगह छोड़ी थी तो उसका स्थान खाली हो गया। खाली जगह को ही आकाश कहते हैं। खाली जगह होने से वायु उत्पन्न हुआ और आकाश में व्याप्त हो गया, वायु ने उस गति में वेग पैदा किया और वायु के जर्रों के साथ संघर्ष से आग पैदा हो गई। वायु और अग्नि से जल बन गया। ऐसा जल नहीं जैसा कि हम पीते हैं वरन् हवा की शक्ल में वह जल पैदा हुआ। उस जलमिश्रित वायु ने प्रकृति के परमाणुओं को तर किया, गीले परमाणु आपस में मिले, उससे पृथ्वी बन गई। अर्थात् ये पांच—आकाश वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी ईश्वर की गति मात्र से पैदा हो गए। पहले कुछ मूर्ख वैज्ञानिक इन भूतों को एलिमैन्ट्स कहा करते थे। यह उनकी भूल थी। जब उनको यह भूल मालूम हुई तो वे इन्हें 'मैटर कम्बाइन्ड विद एनर्जी' कहने लगे। पांचों भूत प्रकृति और ईश्वर प्रदत्त गति के संघात का ही नाम हैं। इन भूतों से जगत् बन सकता है। उपनिषद् कहता है कि वह ईश्वर ही गति देता है।

अरस्तू का सिद्धान्त

अरस्तू ने अपने दर्शन में ईश्वर की व्याख्या इन शब्दों में की है "The unmoved mover" अर्थात् वह गति देता है परन्तु स्वयं गति में नहीं आता। ये शब्द उपनिषद् के "तदेजति तन्नैजति" वाक्य का हूबहू तर्जुमा हैं।

वह हम से दूर है—आसमान में दो प्रकार के तारे हैं—एक हिलते हुए हैं और दूसरे ठहरे हुए। हिलने वाले सब तारे सूर्य हैं, इन सूर्यों की गणना बड़े से बड़े ज्योतिषी भी ठीक-ठीक नहीं कर सके हैं। फ्रांस के वैज्ञानिक ने बतलाया कि दो सूर्यों के बीच कम से कम २६०० शंख मीलों की दूरी है। इस प्रकार के असंख्य सूर्यों के प्रकाश में सहज ही जाना जा सकता है कि ब्रह्माण्ड कितना विस्तृत है और यह भी कि हम उसका अनुमान भी नहीं कर सकते हैं और यह ब्रह्माण्ड उसकी रचना का एक बहुत छोटा भाग है और ईश्वर के मुकाबिले में तुच्छ है। इन सब बातों से अन्दाजा लगाया जा सकता है कि वह कितनी दूर है।

समीप भी है—वह हृदय के भीतर मौजूद है। इससे यह अन्दाजा लगाया जा सकता है कि वह कितना पास है। वही सबके भीतर और बाहर है अर्थात् सब जगह मौजूद है।

वह ईश्वर का जगह मौजूद है, जगत् का निमित्त कारण है, प्रकृति से जगत् को बनाता है, वह निश्चित रीति से निराकार है, शरीर के विकारों से रहित है, नाड़ी और नसों के बन्धन से पृथक् है। ये तीन शब्द इसलिए कहे हैं कि जिससे तीनों शरीरों में ईश्वर में किसी भी शरीर की कल्पना न हो सके।

वह कवि है—सूक्ष्म से सूक्ष्म चीज उसे प्रत्यक्ष है। वह मननशील है। हम अज्ञान की क्रियाएं किया करते हैं, वह नहीं करता, वह स्वयम्भू है क्योंकि मनुष्यों को और संसार को पैदा करता है परन्तु उसे कोई पैदा नहीं करता, वह प्रजा के लिए न्याय का विधान करता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस मन्त्र में ईश्वर के कतिपय गुणों को इकट्ठा कर दिया है। उपासना क्यों करनी चाहिए ? अपनी उन्नति के लिए उसकी उपासना करते हैं। उसके गुणों को अपने सामने रखकर उन्हें अपने भीतर लाओ और अपना जीवन उन्नत करो। यही उपासना का ठीक-ठीक अर्थ है और इसी को उपासना का पहला अंग कहते हैं। उसके बाद देखना है कि मनोवृति कैसी होनी चाहिए। उपासना का दूसरा और अन्तिम अंग ब्रह्म को हृदय में धारण कर लेना है। पहले अंग में जहां वाचक को समझते हुए हृदय में रखा जाता है वहां दूसरे अंग में हृदय को वाच्य का मन्दिर बनाना पड़ता है। ब्रह्म विद्या के पहले अंग की प्रप्ति के लिए उद्योग संध्या से शुरु किया जाता है और दूसरे अंग की पूर्ति अष्टांग योग के आखिरी अंगों से होती है। सन्ध्या से शारीरिक, मानसिक और आत्मिक तीनों प्रकार की उन्नति हुआ करती है।

जो आदमी सब चीजों में ईश्वर को देखता है और ईश्वर को सब चीजों में देखता है वह सबका प्यारा हो जाया करता है। जब हम ऐसा समझ लें तब संसार के सब प्राणी ईश्वर के मन्दिर के रूप में दीख पड़ेंगे यदि हम वास्तविक प्रेम करते हैं तो हम उसके मन्दिर का किस प्रकार अनिष्ट चिन्तन कर सकते हैं। इस बात के तत्त्व को समझने वाला किस प्रकार उस मन्दिर को नष्ट भ्रष्ट कर सकता है ! वा उससे घृणा कर सकता है। फिर छूआछूत के झगड़े किस प्रकार ठहर सकते हैं। उपर्युक्त वाक्य में विश्व-प्रेम का कितना सुन्दर पाठ सन्निहित है। जब हमारी वृत्ति विश्व-प्रेममय हो जायेगी तो सब हमें प्यार करेंगे हम सबको प्यार करेंगे। वृन्दावन में मैंने देखा कि चार लड़कों ने अपना एक मोर निश्चित कर रखा था। लड़के दाने ले जाते थे और अपने अपने मोर को खिला दिया करते थे। मोर भी बिना किसी भय व शंका के दाने खा जाया करते थे। यह बात इससे भी सुस्पष्ट हो जाती है कि जहां पशु-पक्षियों का शिकार वर्जित नहीं है वहां पशु-पक्षी मनुष्य से शंकित रहा करते हैं और उसकी आहट सुनते ही डर जाया करते हैं परन्तु जहां वर्जित है वहां शिकार के पशु-पक्षी स्वच्छन्द रीति से विचरण किया करते हैं और मनुष्य से प्रेम करते हैं। यह प्रेम और घृणा का कितना सुन्दर उदाहरण है। पशु-पक्षी तथा प्राणिमात्र से प्रेम करना, न कि घृणा, विश्वप्रेम की श्रेष्ठ मनोवृत्ति का द्योतक है। यह मनोवृत्ति ईश्वर को सब प्राणियों में देखने और सब प्राणियों को ईश्वर में देखने से ही विकसित हुआ करती है।

एकत्व

योग के सातवें अंग तक पहुंचने पर जिज्ञासु को तीन बातों का ध्यान रहता है। वे तीन बातें इस प्रकार हैं—

(१) ध्यान। (२) ध्याता। (३) ध्येय।

ध्यान की अवस्था में ध्यानावस्थितिज जिज्ञासु समझता है कि वह ध्याता है और किसी ध्येय की प्राप्ति के लिए ध्यान रूपी क्रियायें कर, जब ध्यान से ऊंची अवस्था में पहुंचता है तब ध्याता और ध्यान दोनों को भूल जाया करता है। तब ध्येय ही उसके सामने रह जाया करता है। प्रेम की ऊंची हालत वही है जब वह अपने प्यारे के ध्यान में अपने को भूल जाय। तब उसे हर जगह अपने प्यारे के ही दर्शन होते हैं। यहीं मनुष्य एकत्व देखता है और यहीं द्वैत और अद्वैत दोनों बाद मिलते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ध्यान

जब यह कहा जाता है कि निराकार ईश्वर का ध्यान करो तब लोग स्वाभाविक रीति से कहा करते हैं, जिसकी कोई शक्ल नहीं, सूरत नहीं, रूप नहीं, भला फिर किस प्रकार कोई उसका ध्यान कर सकता है ? ऐसे लोगों ने समझ लिया है कि हम किसी बाहरी रूप-रंगवाली वस्तु को अपने ध्यान में लाया करते हैं। परन्तु बात इसके सर्वथा विपरीत है। ध्यान उसे कहते हैं कि जो चीज तुम्हारे भीतर जमा है उसे निकालकर फेंक दो। तब ही कपिल ने कहा है कि "मन के खाली (निर्विषय) कर देने को ध्यान कहते हैं।"

मन का खाली करना

मन को खाली करने का अभिप्राय यह है कि मन का इन्द्रियों से काम लेना, जिससे जागृत अवस्था बना करती है—छूट जावे तथा मन का अपने भीतर काम करना भी—जिससे स्वप्नावस्था बनती है—बन्द हो जावे अर्थात् मनुष्य की जागृत अवस्था में ही सुषुप्ति की हालत हो जाने को मन का खाली हो जाना कहते हैं।

साधन

आत्मा की दो वृत्तियां होती हैं। एक बहिर्मुखी और दूसरी अन्तर्मुखी। जब आत्मा की बहिर्मुखी वृत्ति काम करती है तब अन्तर्मुखी काम नहीं करती। जब अन्तर्मुखी काम करती है तब बहिर्मुखी वृत्ति काम नहीं करती। बहिर्मुखी वृत्ति को बन्द करना ही मन का निर्विषय करना है। इसका साधन ध्यान का अभ्यास है। मन के खाली हो जाने मात्र से आत्मा की अन्तर्मुखी वृत्ति खुद जारी हो जाया करती है। नहर रूपी बाह्य वृत्ति के बन्द होने से आत्मा रूपी नदी में अन्तर्मुखी वृत्ति रूपी जल स्वयमेव बहने लगता है। मन का खाली करना उपासना का अन्तिम अंग है। यहां पहुंचकर जिज्ञासु को जो आनन्द प्राप्त होता है वह केवल अनुभव की चीज है। तर्क इत्यादि से नहीं जानी जा सकती। उपनिषद् ने इसे निदिध्यासन कहा है। तात्पर्य यह है कि पहले अपने को जानो। जब जान लोगे तब परमात्मा की तलाश की जरूरत नहीं, वह स्वयं मिल जायेगा। यही ईश्वरोपासना का अन्त है।

ईश्वर प्राप्ति का उपाय

ऋग्वेद में कहा—

'हे प्रकाश वाले प्रभु ! यदि मैं तू हो जाऊं, तू मैं हो जाय, तब ही आपका आशीर्वाद सच्चा हो जाय।'

आशीर्वाद यह है कि अमरता प्राप्त करो। अमरता प्राप्त करने से मेरा और तेरापन दूर हो जायगा। मेरे तेरे की जड़ में अहंकार है। अहंकार से ही जगत् पैदा हुआ है और इसी से ठहरा है। ईश्वर प्राप्ति पर लग जाने पर इसे छोड़ना पड़ता है। मनुष्य जब तक मन और बुद्धि के चक्र में रहता है तब तक अहंकार में ही रहा करता है। इसी को बाहर की वृत्ति कहते हैं। जब इसके चक्र से निकल जाता है तब ही भीतर की ओर चला करता है और अमरता प्राप्त किया करता है। इसी सम्बन्ध में कबीर ने ठीक ही कहा है—

"भीतर के पट जब खुलें, बाहर के हों बन्द"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एक और कवि ने कहा है—

बेखुदी छा जाय ऐसी, दिल से मिट जाये खुदी ।

उनके मिलने का तरीका अपने को खोजने में है । आगे कबीर ने कहा है—

'जब मैं था तब हर नहीं, जब हरि हैं तब मैं नायं ।

प्रेम गली अति सांकरी, जा में दो न समायं ।।"

अर्थात् अपने को साथ लेकर चलोगे तब वह नहीं मिलेगा । जब अपने को छोड़कर प्रेममय होकर चलोगे तब वह मिल जाएगा ।

रहस्य

उपासना का प्रारम्भ ईश्वर के गुणों के मनन और उनको जीवन में धारण और चरितार्थ करने से होता है । इसके लिए सन्ध्यादि का विधान है । उपासना का दूसरा अंग ध्यान से बहिर्मुखी वृत्ति का बन्द करना और अन्तर्मुखी वृत्ति का जागृत करना है और अन्तर्मुखी वृत्ति से ईश्वर का साक्षात्कार करना है । यहां प्रश्न निराकार साकार का नहीं रहता है । दोनों वृत्तियों का ही है । यही निराकार प्रभु की उपासना का रहस्य है । इस उपनिषद् को कण्ठ करके उपरान्त सन्ध्या योग से उपासना करके उसकी उदात्त शिक्षाओं पर विचार और मनन करो । वह हृदय पर छाप डालेगी और तुम्हें ऊंचा उठायेगी तथा अन्तिम ध्येय तक पहुंचाने में सहायक होगी ।

३. कथासार

इस कथा में विद्या, अविद्या, ज्ञान और कर्म के शास्त्रीय विवेचन तथा इनके विषय में आधुनिक पाश्चात्य जगत् के विचार, ज्ञान का क्षेत्र, स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर की विवेचना, सत्य की महिमा मृत्यु के समय क्या करना चाहिए ? आदि विषयों पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया गया है ।

बहनो और भाइयो !

आप पिछले दो दिनों में इस उपनिषद् के दो भाग सुन चुके हैं । आपको याद रहा होगा कि प्रथम भाग में वे पांच बातें बतलाई गई थीं जिनके अनुकूल आचरण से मनुष्य लोक और परलोक में श्रेष्ठ बना करता है । इसके बाद कल आपके सामने ब्रह्मविद्या और ईश्वर प्राप्ति के सम्बन्ध में प्रारम्भिक और अन्तिम बातें रखी गई थीं । आज ईश्वर-प्राप्ति के साधनों पर विचार किया जायेगा ।

वेद में कहा गया है कि 'जो ज्ञान की उपेक्षा करके कार्य करते हैं वे गहरे अन्धकार में जाते हैं, जो कर्म की अवहेलना करके ज्ञान में रमते हैं वे उससे भी अधिक अन्धकार में जाते हैं ।'

ज्ञान का और ही फल कहते हैं और कर्म का और ही फल कहते हैं । ऐसा हम धीर पुरुषों के वचन सुनते हैं ।

जो ज्ञान और कर्म इन दोनों को साथ-साथ जानता है, वह कर्म से मृत्यु को तैरकर ज्ञान से अमरता को प्राप्त करता है ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विद्या और अविद्या

यह यजुर्वेद के ४०वें अध्याय के मन्त्रों का सार है। इनका देवता आत्मा है। अर्थात् इनमें जिस विषय का वर्णन किया गया है वह 'आत्मा' है। जब हम आत्मा के गुणों पर विचार करते हैं तब हमें इसके स्वाभाविक गुण ज्ञान और प्रयत्न दीख पड़ते हैं। 'विद्या' ज्ञान को कहते हैं। अविद्या के दो अर्थ किये जाते हैं। एक पारिभाषिक दूसरा यौगिक। दर्शनों में प्राय: पारिभाषिक अर्थ 'मिथ्या ज्ञान' के किये जाते हैं परन्तु अविद्या के यौगिक अर्थ विद्या से भिन्न के हैं अर्थात् जो विद्या वा ज्ञान नहीं है। जो ज्ञान नहीं वह क्या है ? इस प्रश्न का उत्तर इन मन्त्रों का देवता है। इन मन्त्रों का देवता आत्मा है। आत्मा के स्वाभाविक गुण ज्ञान और कर्म हैं। ज्ञान से भिन्न कर्म है, इसलिए अविद्या का अर्थ कर्म ही है।

कर्म और ज्ञान पर विचार करने पर पता लगेगा कि जो व्यक्ति केवल कर्म को लेते हैं वे अन्धकार में रहते हैं और जो कर्म की उपेक्षा करके ज्ञान को लेते हैं वे उनसे भी ज्यादा अन्धकार में हैं। क्यों ? कर्म का फल मिला करता है। ज्ञान का नहीं ! इसके प्रकाश में जो केवल कर्म को लेते हैं उन्हें अच्छा बतलाया गया है परन्तु श्रेष्ठ नहीं। जो दोनों को साथ-साथ काम में लाते हैं वे कर्म के द्वारा मृत्यु से पार हो जाया करते हैं और ज्ञान से अमरता को प्राप्त कर लिया करते हैं। उपदेश यह है कि ज्ञान हासिल करो परन्तु आचरण भी उसी ज्ञान के अनुकूल करो। यही वैदिक धर्म है। तुम कहीं से भी ज्ञान हासिल क्यों न करो, परन्तु वह ज्ञान और उसके अनुसार कर्म मौत के बन्धनों को ढीले करने वाले ही हों। मनुष्य का यही मुख्यतम कर्त्तव्य कहा गया है।

पश्चिमी जगत्

पश्चिमी जगत् में दो नियम काम करते हैं। वे साइंस और आर्ट हैं। साइंस ज्ञान में और आर्ट कर्त्तव्य में सन्निहित है। कहा गया है। Science consists in knowing and art consists in doing पश्चिमी के देशों की तरक्की के मूल में ये ही दो बातें हैं। देखना यह है कि पश्चिम के ज्ञान और कर्म का आदर्श वैदिक ज्ञान और कर्म के आदर्श के सदृश है वा इन दोनों में कोई विभिन्नता है। वेद और उपनिषद् ने शिक्षा दी है कि ज्ञान और कर्म वे ही होने चाहिएं जो परतन्त्रता को दूर करने वाले हों, जिनसे मृत्यु के बन्धन ढीले हो जायें। परतन्त्रता दुःख है, स्वतन्त्रता सुख है। परतन्त्रता के वास्तविक अर्थ दूसरों की हकूमत नहीं है वरन् इन्द्रियों की दासता ही परतन्त्रता के वास्तविक अर्थ हैं। अपने भीतर स्वतन्त्र होने से ही स्वतन्त्रता मिला करती है। पूर्व के ज्ञान और कर्म का उद्देश्य यही है, आदर्श यही है। पश्चिम के ज्ञान और कर्म का उद्देश्य और आदर्श यह नहीं है। साइंस मनुष्यों को कहाँ पहुंचाना चाहती है इसका पता नहीं है। पश्चिम के लोग तरक्की कर रहे हैं पर उन्हें उद्देश्य का पता नहीं। पश्चिमी साइंस जन-संहार में काम आ रही है। नाना प्रकार की जन-संहारिणी गैसें तैयार हो रही हैं। एक गैस इस प्रकार की तैयार की गई है कि यदि उसका दुनिया के सबसे बड़े नगर लण्डन पर प्रयोग किया जाय, यदि वह गैस तीन हवाई जहाजों पर छोड़ी जाय और वह लण्डन में श्वास लेने वाली वायु में मिल जाय तो तीन घण्टे में अस्सी लाख आबादी वाले लण्डन शहर की सारी आबादी नष्ट हो जाये। जर्मनी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के सात वैज्ञानिकों ने एक जहरीली गैस तैयार की। वे समझते थे कि यह गैस सबसे ज्यादा भयानक गैस है। वे उसे स्टोर में भर रहे थे, किसी प्रकार उस गैस का कुछ भाग रसायनशाला की हवा में मिल गया। श्वास लेते ही वे सातों वैज्ञानिक वहीं मर गये। जिस गैस को उन्होंने दूसरे हजारों आदमियों के संहार के निमित्त बनाया था उसी से वे स्वयं मर गये। कहने का मतलब यह है कि पश्चिम के ज्ञान और कर्म का कोई उद्देश्य नहीं है। वैदिक ज्ञान और कर्म का उद्देश्य है। मनुष्य को ऐसे ही ज्ञान और कर्म का सहारा लेना चाहिए जिनका उद्देश्य हो। यही मनुष्य का मुख्य कर्म है।

ज्ञान का क्षेत्र

आगे ज्ञान के क्षेत्र के सम्बन्ध में वेद में बताया गया है कि—

"जो केवल असम्भूति (कारण शरीर) का सेवन करते हैं वे गहरे अन्धकार में हैं और जो केवल सम्भूति—सूक्ष्म और स्थूल शरीर—में कारण की उपेक्षा करके रमते हैं वे उससे भी ज्यादा अन्धकार में हैं।"

सूक्ष्म और स्थूल शरीर के और ही फल कहते हैं और कारण शरीर के और ही फल कहते हैं।"

"जो कोई कार्यरूप प्रकृति = सूक्ष्म + स्थूल शरीर और कारण रूप प्रकृति = कारण शरीर इन दोनों को साथ-साथ जानता है वह कारण शरीर से मृत्यु को तैर कर कार्य शरीर से अमरता को प्राप्त करता है।"

इन मन्त्रों का मुख्य विषय सम्भूति और असम्भूति का ज्ञान है। सम्भूति कार्य रूप प्रकृति और असम्भूति कारण रूप प्रकृति को कहते हैं। ये दोनों जब आत्मा से सम्बन्धित होती हैं तब इनके अर्थ कारण और कार्य शरीर होते हैं। कारण शरीर की कल्पना घटाकाशवत् है।

जगत् में व्यापक कारण रूप प्रकृति का जो अंश हमारे भीतर है उसी का फर्जी नाम 'कारण शरीर' है। कार्य शरीर दो हैं। सूक्ष्म और स्थूल। इन तीनों के नाम अलग-अलग हैं।

स्थूल शरीर

यह शरीर सूक्ष्मं शरीर का साधन है। उसी के द्वारा विषयमय जगत् से सूक्ष्म शरीर का सम्बन्ध होता है। स्थूल शरीर के विकास और उसकी पुष्टि से शरीर की उन्नति होती है।

सूक्ष्म शरीर

सूक्ष्म शरीर १७ चीजों के समुदाय का नाम है।
५ ज्ञानेन्द्रियां।
५ सूक्ष्म विषय—तन्मात्रा (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध)।
५ प्राण।
१ मन।
१. बुद्धि।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सूक्ष्म शरीर के विकास और उसकी पुष्टि से मानसिक उन्नति होती है।

कारण शरीर

कारण शरीर के विकास और उसकी पुष्टि से मनुष्य में प्रभु-प्रेम का संचार होता है और वह योगी बना करता है। मतलब यह है कि तीनों प्रकार के शरीर उन्नत होने चाहिये। यदि सूक्ष्म शरीरों की उपेक्षा करके केवल कारण शरीर की उन्नति चाहते हो तो अन्धकार में पड़ना पड़ेगा। यदि कारण शरीर की उपेक्षा करके स्थूल और सूक्ष्म शरीरों को उन्नत करना चाहते हो तो भी भविष्य अन्धकार-मय होगा, क्योंकि इससे नास्तिकता पैदा होगी। दोनों प्रकार के शरीरों को उन्नति चाहते हो तो अन्धकार में पड़ना पड़ेगा। यदि कारण की उपेक्षा करके स्थूल और सूक्ष्म शरीरों को उन्नत करना चाहते हो तो भी भविष्य अन्धकारमय होगा, क्योंकि इससे नास्तिकता पैदा होगी। दोनों प्रकार के शरीरों की उन्नति साथ-साथ होनी चाहिए। तभी मौत का बन्धन छूटा करता है।

मनुष्य के उपर्युक्त कर्त्तव्यों को बतलाते हुए उपनिषद् ने मनुष्यों को चेतावनी दी कि इन कर्त्तव्यों के पालन में सच्चाई होनी चाहिए अन्यथा इनकी उपादेयता न रहेगी। चेतावनी यह है—"कि तुम पुरुषार्थमय जीवन सावधानतापूर्वक व्यतीत करो। संसार में धर्म क्या है ? वेद और उपनिषद् ने स्पष्ट रीति से बतलाया है कि धर्म अन्य किन्हीं नियमों को नहीं वरन् सत्य ही कहते हैं। जो धर्म है वह सत्य है, जो सत्य है वह धर्म है, बतलाया गया कि जिस सत्य को हम प्राप्त करना चाहते हैं उस पर चमकती हुई चीजों का पर्दा पड़ जाया करता है। हम सोने, चांदी और अन्य प्रलोभनों में पड़कर सत्य से विमुख हो जाया करते हैं। जब मनुष्य अपनी कमजोरी से सत्य पर पर्दा डाल दिया करता है, तब वह धर्म का प्यारा मुंह नहीं देख पाया करता। प्रभो ! उस पर्दे को हटा दीजिये। फल यह होगा कि सत्य रूपी धर्म दीख पड़ने लगेगा। नीति में खुले तौर पर कहा गया है—

"यज्ञ, स्वाध्याय, दान, तप, सत्य, धृति, क्षमा, अलोभ धर्म के मार्ग हैं। पहले चार में नुमाइश की जाती है परन्तु अन्त के चार में नहीं। यदि इनमें सच्चाई हो तो ठीक। जब इन अन्तिम चार को छोड़कर काम करेंगे तो वह धर्म होगा। इन्हीं के ठीक ठीक आचरण की शिक्षा से पर्दे के हटाने की कोशिश की गई है।

सत्य की महिमा

उपनिषद् में सत्य की बड़ी महिमा वर्णन की गई है। सत्य ईश्वर को भी कहते हैं। वह सत्य में ही प्रतिष्ठित है। एक जगह ब्रह्म का नाम 'सत्यम्' कहा गया है। ब्रह्म को 'सत्यम्' क्यों कहते हैं ? इसलिये कि 'सत्यम्' शब्द तीन अक्षरों से बना है स + ति + यम् 'स' जीव का वाचक है। 'ति' ब्रह्माण्ड के लिए प्रयुक्त हुआ है और 'यम्' जीव और ब्रह्माण्ड दोनों को नियम में रखने वाला होने से ब्रह्म का नाम है। इस प्रकार 'सत्यम्' ब्रह्म का ही नाम है। ईश्वर प्राप्ति के लिए सत्य का सहारा लो। सत्य बोलो, सत्य मानो और सत्य करो।

उपदेश

आगे कहा गया है कि :—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"वह सब का पालन-पोषण करने वाला है, न्यायकारी है।"

शिक्षा यह है कि जिन साधनों से दुःख हुआ करता है उनसे हमें दूर करायें, जिनसे कल्याण हो वे प्राप्त करायें।

हे प्रभु, आप कल्याणकारी हैं, परन्तु हम आपके उस रूप को तभी तक देख पायेंगे जब दुःख के साधनों से रहित हो जायेंगे।

इस प्रकार आठ मन्त्रों का तीसरा भाग है।

इस भाग में शिक्षा यह दी गई है कि ज्ञान प्राप्त करो और उसके अनुकूल आचरण करो तथा मृत्यु को पार करके अमरता प्राप्त करो। तुम्हारे सब कर्त्तव्यों में सत्यता होनी चाहिए और उनका अनुष्ठान दुःख को दूर करके अन्तिम गति को प्राप्त करने वाला हो। मतलब यह है कि अपने को श्रेष्ठ बनाओ।

अन्तिम उपदेश

मनुष्य के कर्त्तव्य विधान और चेतावनी देने के बाद उपनिषद् ने फिर उसे याद दिला दिया कि उसका अन्तिम उद्देश्य ईश्वर-प्राप्ति होना चाहिए, जिससे उसके कर्त्तव्य दूसरी ओर न जा सकें।

कहा गया है : —

"शरीर में आने-जाने वाला जीव अमर है, परन्तु यह शरीर केवल भस्म पयन्त है। इसलिए अन्त समय में हे जीव ! ओ३म् का स्मरण कर, बल प्राप्ति के लिए स्मरण कर और अपने किए हुए का स्मरण कर।"

छान्दोग्योपनिषद् में एक स्थान पर एक प्रकरण है। कृष्ण आंगिरस घोर ऋषि के पास शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। उक्त ऋषि ने कृष्ण को आखिरी बात यह बतलाई कि जब आदमी मरता हो, तब उसके मुख से ये तीन वाक्य निकलने चाहिये—

१. हे ईश्वर ! आप एकरस रहने वाले हैं।

२. हे ईश्वर ! आप अविनाशी हैं।

३. हे ईश्वर ! आप सर्शजीवनप्रद सूक्ष्मतम हैं।

इन्हीं का उच्चारण करते हुए दुए दुनिया से रुख्सत हो जाना चाहिए। कृष्ण इस शिक्षा को सुनकर अपिपासु हो गये। कृष्ण ने क्यों यह समझा कि वे अपिपासु हो गये ? यह मृत्यु समय का कर्त्तव्य है। जब हम इस बात पर विचार करते हैं, तब हमारे सामने मन्त्र का यह भाग कि 'तुम मृत्यु समय पर ओ३म् का स्मरण करो' आता है।

वेद के सब मंत्रों को हम एक दृष्टि से दो भागों में बांट सकते हैं। एक 'उपदेश' भाग और दूसरा 'नियम' भाग है। ब्रह्मचर्य पालन इत्यादि उपदेश हैं। इनका करना हमारे अधीन है, परन्तु हम नियमों का उल्लंघन नहीं कर सकते। यह हमारे अधीन नहीं हैं। ऊपर के मन्त्र में उपदेश रूप में 'उनको याद कर' कहा है और 'अपने किए हुए को याद कर' नियम के रूप में है। हम इसका उल्लंघन नहीं कर सकते।

मनुष्य जीवन के दो भाग

मनुष्य जीवन दो भागों में बंटा हुआ है। वे दो भाग ये हैं—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१. मृत्यु से पूर्व का।
२. मृत्यु-शय्या का।

जब मनुष्य पहले भाग में होता है, तब उसे कर्म करने की पूरी स्वतंत्रता होती है लेकिन जब वह मृत्यु शय्या पर होता है, तब यह स्वतंत्रता छिन जाती है। दूसरा भाग वस्तुतः पहले भाग का चित्र होता है अर्थात् मृत्यु से पूर्व की परिस्थितियों और प्रभावों का मृत्यु शय्या का भाग फोटो होता है और यही फोटो दुनिया के सामने आ जाया करता है। अतः स्पष्ट मालूम हुआ कि जीवन के पहले भाग में अर्थात् मृत्यु से पूर्व अच्छे कर्म करने चाहियें। देखना यह है कि इस सिद्धान्त के सम्बन्ध में दुनिया का अमल कैसा है? यदि यह अमल में आ रहा हो तब तो इसकी परवाह करनी चाहिए। इसकी जांच के लिए हम ऐतिहासिक दुनिया में बैठते हैं।

कतिपय ऐतिहासिक उदाहरण

१. महमूद गजनवी गजनी का राजा था। उसने भारत पर कई बार चढ़ाई की थी। उसके जीवन का उद्देश्य उचित और अनुचित किसी भी रीति से धन संग्रह करना था। उसने गजनी को सोने-चान्दी से भर दिया था। यहां उसके जीवन का पहला भाग खत्म होता है। अब हम उसे दूसरे भाग में अर्थात् मृत्यु-शय्या पर पड़ा देखते हैं। वह मरते समय सोने-चान्दी के ढेर अपने सामने लगवाता है। उस ढेर पर दृष्टि दौड़ाता है। उसी क्षण उसके मन में एक विचार उठता है कि मेरी ही आज्ञा से यें ढेर लगे हैं। परन्तु अब यदि मैं चाहूं तो इस ढ़ेर में से जरा भी अपने साथ नहीं ले जा सकता। जब मजबूरी देखी तो रो पड़ता है और धन पर दृष्टि रखे हुए ही यहां से रुखसत हो जाता है। सारांश यह कि जिस प्रकार जीवन पर्यन्त उसकी दृष्टि धन पर ही रही इसी प्रकार अन्तिम समय में भी धन पर ही रही।

२. फ्रांस का राजा पीटर था। उन दिनों फ्रांस छोटी-छोटी रियासतों में बंटा था। एकतन्त्र राज्य न था। वह धर्मात्मा था। यह वह समय था जब यरूशलम प्राप्ति के लिये ईसाई लोग धर्म युद्ध कर रहे थे। पीटर भी यरूशलम की प्राप्ति के लिए कई लड़ाइयां लड़ चुका था। परन्तु सब में हार गया था। उसके जीवन का उद्देश्य यरूशलम की प्राप्ति था। उसके जीवन का पहला भाग खत्म हो जाता है। वह मृत्यु शय्या पर पड़ा है। उसे उस समय मुल्क की चिन्ता न थी। उत्तराधिकारी की भी न थी। उसे चिन्ता थी तो एक थी और वह थी यरूशलम की। वह तीन बार 'यरूशलम' का उच्चारण करते-करते दुनिया से रुखसत हो गया। सार यह है कि मृत्यु-शय्या पर दुनिया के सामने उसके पूर्व भाग का पूरा-पूरा फोटो आ गया था।

३. महाराणा प्रताप भारत के एक चमकते हुए रत्न थे। भारत के इतिहास में उनका नाम सदैव स्वर्णाक्षरों में लिखा जायगा। चित्तौड़ और उदयपुर उनके अधिकार से निकल चुके थे। उनकी प्राप्ति के लिए उन्होंने अनुपम त्याग किया, अकबर से युद्ध किया, सुन्दर रीति से अपने कर्त्तव्य का पालन किया और अन्त में चित्तौड़ और उदयपुर प्राप्त किये। यहीं उनके जीवन का पहला भाग समाप्त होता है। वे मृत्यु-शय्या पर पड़े थे। उनके निकट सरदारगण खड़े थे। उन्होंने उस समय एक बड़ी आश्चर्यजनक बात देखी और वह यह थी कि उन्हें महाराणा प्रताप की हालत एक लोभी व्यक्ति की हालत के सदृश दीख पड़ी। सरदार परेशान थे। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या बात है जिसकी वजह से महाराणा प्रताप के प्राण अच्छी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तरह नहीं निकल रहे हैं। सरदारों ने पूछा, "महाराज ! क्या हाल है ?" महाराणा प्रताप कहते हैं—

'सरदारो ! मुझे विश्वास दिलाओ कि मेवाड़ उसी प्रकार स्वतन्त्र रहेगा जिस प्रकार मैंने स्वतन्त्र रक्खा है।' सरदारों ने महाराणा प्रताप को विश्वास दिलाया। ज्यों ही विश्वास दिलाया त्योंही उनकी आत्मा निकल गई।

४. स्वामी दयानन्द का चौथा उदाहरण है। उनका उद्देश्य वेद का प्रचार और प्रजा को आस्तिक बना देना था। उन्होंने सब कष्ट इसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए सहे और हर प्रकार का उत्कृष्ट त्याग किया। वे मृत्यु-शय्या पर पड़े हैं। लोग दूर-दूर से आये हुए हैं। उन्हीं में पं० गुरुदत्त भी हैं। स्वामी जी सब को अपनी आंखों के पीछे कर देते हैं। पं० गुरुदत्त स्वामी जी का अन्तिम समय देखने के लिए उत्सुक हैं। वे ऐसी जगह खड़े हो जाते हैं जहां से वे स्वामी जी को भली प्रकार देख सकें, परन्तु स्वामी जी उन्हें न देख सकें। स्वामी जी बेदमन्त्रों का उच्चारण करते हैं, गायत्री का पाठ करते हैं। गुरुदत्त की दृष्टि स्वामी जी के चेहरे पर है। स्वामी जी प्रसन्नवंदन हैं। गुरुदत्त पक्के नास्तिक थे। उनके दिमाग में ला प्लास जैसे वैज्ञानिक घर किये हुए थे जो ईश्वर को नहीं मानते थे और कहते थे कि उन्हें अपनी सफल से सफल रचनाओं और आविष्कारों में ईश्वर की कहीं जरूरत ही महसूस नहीं हुई। प्राण त्यागने से पूर्व स्वामी जी के चेहरे पर एक मुस्कराहट आती है। यह मुस्कराहट दिव्य थी। उसी मुस्कराहट पर गुरुदत्त मुग्ध हो जाते है और उनके हृदय से नास्तिकता तिरोहित हो जाती है। स्वामी दयानन्द 'प्रभो ! तेरी इच्छा पूर्ण हो' यह कहकर प्राण त्याग देते हैं।

इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि यह सिद्धान्त केवल सिद्धान्त ही नहीं वरन् दुनिया के अमल में भी आता रहता है। वह समय परीक्षा का होता है। यह परीक्षा मृत्युरूपी परीक्षा है। इसमें सफलता प्राप्त करना मनुष्य के लिए जरूरी है। इसके लिए उसे पूरी पूरी तैयारी करनी चाहिए। शिक्षा यह है कि जब अन्त समय आवे तब दुनियां के लोग मनुष्य को उस मृत्यु रूपी परीक्षा में उत्तीर्ण होते हुए देखें। उसमें उत्तीर्ण होने के लिए उसके स्मरण की शर्त जरूरी है। यदि ऐसा हुआ तो उत्तीर्ण हुआ समझो। यह तब ही सम्भव है जब मनुष्य उपनिषद् की उस शिक्षा का जो उसके कर्त्तव्यों के सम्बन्ध में ऊपर दी है ठीक-ठीक रीति से पालन करे। यदि उस शिक्षा पर न चलेगा तो कभी भी 'ओ३म्' का स्मरण न कर सकेगा। इसलिए प्रत्येक स्त्री-पुरुष का कर्त्तव्य है कि इस प्रकार का यत्न करे जिससे जब परीक्षा का समय आये तो वह उसमें पास हो। यहां यह उपनिषद् एक प्रार्थना के साथ समाप्त हो जाती है।

"हे प्रकाश स्वरूप तेजस्वी प्रभु ! ऐश्वर्य प्राप्ति के लिए अच्छे मार्ग से हमको चलाइये। आप हमारे सम्पूर्ण कर्मों को जानने वाले हैं। हमें उल्टे मार्ग पर चलने रूप पाप से बचाइए; इस लिए आपको बार-बार नमस्कार है।"

यह उपनिषद् का अन्तिम मन्त्र है। आर्ष शैली के अनुसार सारा यत्न करने के बाद मनुष्य को ईश्वर ही की दया का आश्रय लेना चाहिए। इसी के अनुसार इस प्रार्थना विधायक मन्त्र के साथ उपनिषद् समाप्त होती है। मन्त्र में पाप का कैसा सुन्दर लक्षण कर दिया है। पाप क्या है ? उल्टे मार्ग पर चलना ! इस उल्टे और पाप के मार्ग पर न चलकर सीधे और पुण्य पथ का पथिक बनने के लिए ईश्वर का ही पथ-प्रदर्शन आवश्यक है। वही आदि गुरु है। वही महान् शिक्षक है। उसी का सहारा लेने से बेड़ा पार हो सकता है। इसलिए सब यत्न करके भी अन्त में उसी का आश्रय लेना चाहिए। ●

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपने ग्राम-नगर में हिन्दू रक्षा समिति स्थापित कीजिए

सबसे पहले आप समिति के उद्देश्य और मांगें पढ़ डालिए। यदि आप उनसे सहमत हों तो कम से कम अपने १९ साथी और बनाइए। इस प्रकार २० सदस्य बनाकर उनके फार्म तथा उनके पूरे शुल्क का ड्राफ्ट "अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति" के नाम का बनाकर केन्द्रीय कार्यालय, नई दिल्ली को भेजिए। साथ ही स्वीकृति के लिए पत्र भी लिखें।

स्वीकृति प्राप्त होने पर आप में से जिन्हें संयोजक बनाया जाए—वे एक अस्थायी कोषाध्यक्ष व मंत्री नियुक्त कर लें तथा अपने यहां विधिवत् कार्यालय बना, लेटर-हैड, रसीद बुक छपवा लें। स्थापना के दो माह के भीतर आप एक कार्यकर्त्ता सम्मेलन बुलाएं और रात्रि को सार्वजनिक सभा हिन्दू रक्षा सम्मेलन के रूप में रखें।

आपका लक्ष्य अधिक से अधिक सदस्य बनाना हो। अपने सदस्यता शुल्क व दान से सम्मेलन कीजिए। साहित्य वांटिए, पोस्टर लगाइए और संगठन को सुदृढ़ बनाइए।

२० सदस्यों के बाद बने सदस्यों का चौथाई शुल्क आप केन्द्र को भेजेंगे। दान रूप में एकत्र सम्पूर्ण धन आप अपने क्षेत्र में व्यय कर सकेंगे। किन्तु सारा हिसाब आपको नियमानुसार रखना होगा।

केन्द्र कभी भी आपके आय-व्यय को जांच कर सकेगा और केन्द्र को यह भी अधिकार होगा कि वह अनियमितता प्रतीत होने पर आपकी समिति भंगकर नयी समिति गठित कर सके।

हिन्दू रक्षा समिति वस्तुतः राष्ट्र की गौरव, परम्परा, इतिहास और स्वतंत्रता की रक्षा के लिए कृतसंकल्प सर्वस्व-समर्पित देशभक्तों का संगठन है। अतः सभी इसी दिशा में सोचते हुए सभी कार्य सम्पन्न करेंगे, ताकि सफलता मिल सके।

हम किसी भी संकट में सेवा के लिए सदा प्रस्तुत हैं—

(प्रो०) धर्मवीर
प्रधान मंत्री

अ० भा० हिन्दू रक्षा समिति, करौलबाग, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"देसी काजल आंखों के लिए लाभकारी है।"

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के नेत्र विशेषज्ञ डाक्टर का कहना है।

भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त

भीमसेनी काजल

(एला युक्त)

आंखों को निरोग और शीतल रखता है।

मुरारी ब्रदर्स

(इंडिया) प्रा० लि०

जी-7, माडल टाउन, दिल्ली-110009

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जनता की बेहद मांग पर

जन-ज्ञान का

आजीवन शुल्क ३१-३-८२ तक
३०१) स्वीकार किया जाएगा

साथ में ५१) का साहित्य
उपहार में मिलेगा

५ सदस्य बनाकर आप
उनका शुल्क १००) भी
३१ मार्च तक भेज सकते हैं।
शीघ्रता करें—आगे बढ़ें।

—प्रबन्धक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हकीकत के बलिदान की गौरवगाथा: सिर कटवाया पर मुसलमान न बना

—चमनलाल क्षत्रिय

स्यालकोट के पुरी क्षत्रिय परिवार के प्रख्यात दान शूर श्री भागमल के यहां हकीकत राय का जन्म हुआ। उसके माता-पिता धार्मिक प्रवृति के कट्टर हिन्दू थे। अपने सम्बधियों, जानकारों व पड़ोसियों तक के लिए प्रत्येक पल घड़ी आर्थिक रूप में वे सहर्ष उपयोगी होते रहते थे। सौ हाथों से कमाओ। हजार हाथों से दो की वैठिक (हिन्दू) धारणा करके अंग अंग में समाई हुई थी। हकीकत के माता-पिता की शिष्टता व दानशूरता का सभी गुणगान करते थे।

नेक कमाई—नेक संतान की उक्ति की साक्षात् मूर्ति था उन का बेटा हकीकत राय। वह धर्म रक्षक के रूप में चमका। हकीकत धर्म-वीरता और पावन बलिदान की हकीकत सिद्ध हुआ। उसने सर दिया। अमर हो गया।

हकीकत राय के माता-पिता प्रातः ४ बजे उठते। उनके साथ ही वह उठ जाता। वह रामायण की चौपाईयाँ, गीता के श्लोक तथा ईश वन्दना के गीत जब प्रातःकाल के मन मोहक समय में गाते – तो हकीकत राय भी अपनी तोतली जबान में गाता। उन्हीं के साथ प्रति दिवस मन्दिर जाता।

धनुष धारी श्री राम-सुदर्शन चक्रधारी श्रीकृष्ण महाराज, अस्त्रों-शस्त्रों से सुसज्जित मां दुर्गा की जब वह परिक्रमा करता तो उसके मन में वीरता के भाव उमडते। मन्दिर का पुजारी धर्मप्रिय व कुल पुरोहित हिन्दुत्व स्नेही थे। दोनों ही वीर प्रवृति के थे। अपने यजमानों की सन्तान को योग्य-विद्वान् तथा बलवान बनाना कर्त्तव्य समझते थे। दोनों जहां धर्माचार्य थे, वहां कुश्ती लड़ने में प्रवीण व बड़ें-बड़ों से टकरा जाने में भी सक्षम थे।

हकीकत राय का कण्ठ मधुर व रसीला था। जब किसी मन्दिर में कीर्तन होता तो हकीकत को विशेष रूप से आमन्त्रित किया जाता। हकीकत के मधुर कण्ठ से रामायण का शुद्ध उच्चारण युक्त चौपाइयों तथा प्रभु भक्ति भजनों को सुनने जनता टूट पड़ती। मन्दिर के पुजारी व हकीकत के कुल पुरोहित ने हकीकत को अखाड़े जाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने हकीकत को कुश्ती के सभी दाव पेचों में निपुण कर दिया।

हकीकत राय मस्जिद में पढ़ता था। उसको जो भी पाठ दिया जाता, दूसरे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दिवस अर्थों सहित शुद्ध उच्चारण सहित सुना देता। मुल्ला ने उसे क्लास का मॉनिटर नियुक्त कर दिया। हकीकत की लेखनी मोतियों की भान्ति आकर्षक थी। लोग हकीकत राय को प्यार से सर्वगुण सम्पन्न कहा करते थे। हकीकत राय का अपने से बड़ों को राम-राम के अभिवादन का ढंग प्रिय आकर्षक व स्तुत्य था।

हकीकत राय के मुल्ला अध्यापक की आर्थिक स्थिति कमजोर थी। हकीकत के पिता भागमल जी आए दिन उसकी सहर्ष सहायता करते रहते थे। मुल्ला जी प्रसन्न थे। सर्वत्र हकीकत के पढ़ने, लिखने व उसके शिष्टतापूर्ण बोलचाल तथा उसके पिता की दानवीरता के गीत गाते थे।

एक दिवस मुल्ला जी कार्यवश पाठशाला से बाहर गए। छात्रों ने उत्पात करना आरम्भ कर दिया। स्यालकोट के कुख्यात गुण्डे इनायत उल्ला के बेटे हमीद ने हकीकत को घसीटने का दुष्प्रयास किया। हकीकत राय कोई मिट्टी का खिलौना तो था नहीं, जो वह उसे खींच लेता। हकीकत ने हमीद को पकड़ा। मारा धोबी पाट। वह कूल्हे के बल जा गिरा। हाय-हाय मर गया चिल्लाया। पाठशाला के पच्चासों मुस्लिम छात्र हकीकत पर टूट पड़े। हकीकत ने लिखने वाली फट्टी उठाई खूब उनकी कर दी ठुकाई-पिटाई।

मुल्ला जी आए तो लड़ाई चल रही थी। उसने देखा हकीकत अकेला लड़ रहा है पचास मुस्लिम छात्रों से। किसी का नाक, किसी का कान इसने जखमी कर दिया है। कईयों के चेहरे तखती की पिटाई से विगाड़ दिये हैं। अकेले ही शरारतियों से नीपट लेने की वीरता के कारण हकीकत को प्रोत्साहित करने और शरारती। लड़कों को डांटने के स्थान पर उस ने हकीकत को मुक्कों, थपड़ों और लातों से मार-मार कर अर्धमूर्छित कर दिया। हकीकत राय चिल्लाया नहीं उसने क्षमा याचना नहीं की।

मुहम्मद और कुरान पर जो आस्था न रखे. वह काफिर हैं—काफिर कतल किया जाए की धारण में मुल्ला जी ग्रस्त थे। इसी इस्लामिक कट्टरता के जोश में हकीकत राय को काजी के पास ले गए।

काजी से बोले इसने फातमा बीबी को गाली दी है। इसे मृत्यु दन्ड दिया जाए। यह काफिर है। यह बात सन् १७१९ की हैं। उस समय मुसलमान फर्रुख सियर का शासन था। इसी ने बन्दा वीर वैरागी का बन्द-बन्द कटवाया था।

काजी ने मुल्ला की सब बातें सुनी। उसने सोचा कि बच्चों-बच्चों की लड़ाई है। डांट डपट कर या कुछ जुर्माना कर के हकीकत को छोड़ दिया जाए। पर मुल्ला जी ने नसें फुला, अपनी लाल-लाल आंखें दिखा काजी को धमका दिया। काजी ने बला गला से उतारने हेतु केस लाहौर की बड़ी कोर्ट में भेज दिया।

हकीकत राय के वृद्ध माता पिता व कुछ निर्भीक सम्बन्धी इस्लामीक आतंक के बावजूद लाहौर पहुंचे। कर्तव्यभाव से उन्होंने लाहौर के हाकिम की कोर्ट में केस

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लड़ा। लोग हकीकत के पिता से मिलते, सहानुभूति प्रकट करते हुए कहते—तुम बड़े भाग्यशाली हो। तुम्हें प्रभु ने वीर बेटा दिया है। मृत्यु को मुंह खोले समक्ष खड़ा देख कर भी यह डटा हुआ है। भय तो इस में है ही नहीं।

लाहौर का हाकिम जाने के लिए जैसे ही अपने गृह से निकला, उसके कानों में समीप के मन्दिर से ब्राह्मण कथा वाचक का यह उपदेश पड़ा।

बन्दया बन्दा बन। अत्याचार और अन्याय कर दे बन्द। जो करेगा, उसे भरना पड़ेगा। अत्याचार व अन्याय करना अपनी अपनी आत्मा का हनन् करना है। अपनी वाणी और लेखनी से न्याय की बात कहना व लिखना ही ईश वन्दना है।

उपरोक्त शब्दों नें हाकिम लाहौर को झंझोड़ दिया। उसने निर्णय कर लिया कि वह हकीकत राय को मृत्युदण्ड न देगा।

हकीकत राय को कोर्ट में पेश किया गया। हकीकत के चेहरे की अलौकिक आभा, गठीले शरीर, गले में सफेद चमकते यज्ञोपवीत तथा गायत्री मंत्र से गठित शिखा को देख मुस्लिम हाकिम हकीकत की धार्मिक व सभ्य प्रवृति से प्रभावित हुआ।

मुस्लिम हाकिम को हकीकत का प्रेरक उत्तर

हाकिम ने अतयन्त ही प्यार भरे शब्दों में हकीकत से कहा—

'तुम मुसलमान बन जाओ। जीते रहोगे, तुम्हारे वृद्ध माता-पिता तुम्हें देख लिया करेंगे। मैं अपनी एक मात्र लड़की से तुम्हारा विवाह कर दूंगा। तुम मेरी समूची सम्पत्ति के मालिक बनोगे। अल्लाह ताला तुम पर प्रसन्न होगा।

बालक हकीकत राय ने प्रत्युत्तर में कहा कि हिन्दू मरता नहीं। केवल शरीर छोड़ता है। बिना विलम्ब तुरन्त उसे सुन्दर स्वस्थ शरीर मिल जाता हैं। मुसलमान बन जाने पर मैं मरूंगा नहीं, आप आश्वासन दे सकते हैं? स्त्री और धन प्रलोभन में मैं फंसने का नहीं हूं। मैं हिन्दू हूं। विषय विकारों से मुक्त होना है हमने। अपनी पत्नी के अतिरिक्त प्रत्येक औरत हमारे लिए पूजनीय है, भोग्य नहीं। लक्ष्य पूर्ति हेतु ही हमारे हां प्रत्येक दिवस प्रातः व सायं ईश से याचना की जाती है — विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा।

हिन्दूपन जागे

शिवा की भवानी फिर से भवानी बने आज,
वीरता के भाव सारे भारत में छा जाएं।
अंग-अंग पुलके और वीर रस छलके,
सभी जन जागें शौर्य धारा में नहा जाएं।
गंगा बहे पावन शुद्र, ज्ञान और दर्शन की,
संगठन के गीत धरती को भा जाएं।
हिन्दूपन जागे, अब वीरता भी जाग जाए,
भारत के सुदिन प्रभु जल्दी ही आजाएं।

— वेदभिक्षु

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेदः निर्वचन पद्धति का आदि स्रोत

—प्रोफेसर मनुदेव बन्धु

विश्व साहित्य में वेदों से प्राचीन कोई वाङ्मय नहीं है। वेदों के विश्व साहित्य के मध्य गौरव का कारण उनकी उच्चस्तरीय ज्ञान-विज्ञान की पराकाष्ठा है। उनमें वर्णित ज्ञान-स्तर के समक्ष आज सभ्य और विकसित कहे जाने वाले इस युग का उन्नत साहित्य सिन्धु का स्थान बड़ी कठिनता से रखता है।

मैक्समूलर ने कहा था—"संसार के समस्त पुस्तकालयों में ऋग्वेद सबसे प्राचीन पुस्तक है"। इतने प्राचीन और गम्भीरतम साहित्य का कालान्तर में क्रमशः अस्पष्ट होते जाना आश्चर्य की बात नहीं। जब मानव शनैः शनैः वेदार्थ को कम समझने लगा तब हमारे ऋषियों और मनीषियों ने वेदार्थ स्पष्ट करने, वेदाध्ययन और अध्यापन के संरक्षणार्थ षडङ्गे का निर्माण किया। जिनमें निर्वचन शास्त्र (निरुक्त) का महत्त्वपूर्ण स्थान है। मनीषियों ने "निरुक्त श्रोत्रमुच्यते" कह कर निरुक्त को श्रोत्र से उपमित किया है। यह नितान्त सत्य है कि हम बिना निरुक्त ज्ञान के वेद को किञ्चिदपि नहीं समझ सकते। निरुक्त का आदि आचार्य शिपिविष्ट को मानते हैं। आचार्य शिपिविष्ट से लेकर आचार्य यास्क तक निर्वचन शास्त्र का विकास तथा प्रचार होता रहा। आचार्य यास्क के पश्चात् निरुक्त से सम्बन्धित किसी मौलिक ग्रन्थ का प्रणयन नहीं हो सका। केवल मात्र यास्क प्रणीत निरुक्त पर विभिन्न आचार्यों ने अपनी-अपनी टीकाये लिखी।

अब प्रश्न यह उठता है कि इतने महत्त्वपर्ण निर्वचन पद्धति का आदि स्रोत क्या है? क्या यह शब्द निर्वचन की शैली ऋषियों की अपनी मेधा की उपलब्धि है या उन्होंने कहीं अन्यत्र से इस शैली को ग्रहण किया है। वेदों को अपौरुषेय स्वीकृत करते हुए वैदिक चिन्तन सन्तति ने विश्व की समस्त विद्याओं का आदि स्रोत स्वीकार किया है। इस दृष्टि से वेदों का अवलोकन और मन्थन किया जाय तो वस्तुत वेदों में गणित, ज्योतिष, रसायन, जीवविज्ञान भौतिक शास्त्र तथा निरुक्तादि का मूल उपलब्ध होता है। तात्पर्य यह है कि निरुक्त की निर्वचन पद्धति ऋषियों की अपनी मेधा की उपज नहीं कही जा सकती। क्योंकि इस पद्धति का मूल वेदों में स्पष्ट तथा उपलब्ध होता है। परन्तु मात्र संक्षिप्त संकेत को प्राप्त कर उसके आधार पर एक विशाल और विकसित शास्त्र का निर्माण साधारण मेधा के वश की बात नहीं थी। इसके लिए भी ऋषित्व ही अपेक्षित था। हमारे ऋषियों और आचार्यों ने वेदों में तर्कयुक्त सरल शब्द निर्वचन पद्धति को देखकर एक विशिष्ट शब्दार्थ शैली को प्रस्थापित किया। जिनका संकलन निरुक्त नाम से प्रसिद्ध हुआ। सम्पति आचार्य यास्क का ही निरुक्त उपलब्ध होता है। यास्क के विषय में काल की दृष्टि से विद्वानों में मत वैविध्य है। परन्तु यह तो निश्चित है कि यास्क महाभारत के पूर्व ही प्रतिष्ठित होते हैं। इन आचार्यों का यह प्रयास वेदार्थ समझ में और समझाने में स्वाध्यायकर्त्ताओं और विद्वानों के लिए वरदान सिद्ध हुआ है।

यहां स्थाली पुलाक न्याय से वेदों के कुछ ही अतिस्पष्ट उदाहरण देना चाहते हैं जिनसे यह प्रमाणित होता है कि निरुक्त का आदि स्रोत वेद ही है। उदाहरणार्थ ऋग्वेद १-३४-१० में "हविः" शब्द का निर्वचन करते हुए लिखा है—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"हूयते हविः"। इसी प्रकार १.६.६ में ' ऋग्मियम्" की निरुक्ति में लिखा है—गीभिर्गृणान्त ऋग्मियम्" अर्थात् वाणी से जिसकी स्तुति या अर्चना की जाय वह "ऋग्मियम्=अर्चनीय परमेश्वर है। यास्क ने" "ऋग्मियम् की निरुक्ति वेद के अनुसार ही की है—"ऋग्मियम् ऋग्मन्तम् इतिवा अर्चनीयमितिवा" अर्थात् ऋचावान् या पूजनीय अर्थ हुआ।

अथर्ववेद ३.१३ में नदी और जल के अनेक पर्यायवाची शब्दों का निर्वचन अत्यन्त ही मनोरम किया है। नदी शब्द की निरुक्ति कितनी स्वभाविक की गई है—

यददः सम्प्रयन्तीरहावनदता हते।

तस्मादा नद्यो नामस्थ ता वो नामानि सिन्धवः। अर्थात् है। (सिन्धवः) बहने वाली नदियों! (सम्प्रयन्तीः) मिलकर आगे बढ़ती हुई तुमने (अहो हते) मेघ के ताड़ने पर (अरः यत्) वह जो। अनदत्) नाद किया (तस्माद+आ) इसलिए ही (नद्यः) नाद करने वाली नदी (नामस्थ) तुम हो।

यास्क ने भी नदी शब्द की यही निरुक्ति की है—"नद्यः कस्मात्? नदना इमा भवन्तिः शब्दवत्यः" अर्थात् बहती हुई नदी से आवाज या नाद होता है। अतः उसे नदी कहते हैं।

जल के पर्यायवाची "आप" शब्द का निर्वचन अत्यन्त ही रमणीय ढंग से किया गया है—

"आरन्नोदिन्द्रों को यतीस्तमादायो अनुष्ठन"। अर्थात् इन्द्र ने तुमको चलते हुए "आरनोत्" प्राप्त किया 'तस्मादापः' इसलिए तुम्हारा नाम 'आप' है।

"वार" शब्द की निरुक्ति भी वेद की कितनी हृदयगम्य है—

"अप कामं स्यन्द माना अवीवरत् वो हि कम्।
इन्द्रो व. शक्तिभिर्देवी स्तस्माद् वार्नाम वो हितम्॥

इन्द्र अर्थात् राजा ने तुमको व्यर्थ बहते हुए अपनी शक्ति से "अवीवरत्" वरण किया। "तस्माद वार्नाम्" इसलिए तुम्हें वार् नाम से पुकारा जाता है।

"उदकम्" शब्द की निरुक्ति में तो वेद भगवान् ने चमत्कार उत्पन्न कर दिया है—"उदानिषुर्म हीरिति तस्मादुदकमुच्यते"॥ अर्थात् "उदानिषुः" ऊपर की ओर श्वास ली अर्थात् उछाला। "तस्मादुदकमुच्यते" इससे उदक कहा जाता है।

इस प्रका' अनेक दृष्टान्त प्रमाण में दिये जा सकते हैं। ऋग्वेद संहिता में में लगभग बारह सौ से भी अधिक एक ही धातु से निष्पन्न नाम और आख्यातों के इस प्रकार के प्रयोग मिलते हैं। वेद के उपर्युक्त उदाहरणों से यह स्पष्ट सिद्ध होता है कि निरुक्ति पद्धति के विकास की प्रेरणा हमारे ऋषि-मनिषियों को वेद से ही मिलती है। उन्होंने वेद की शब्द निर्वचन शैली को ग्रहन कर "निरुक्त', जैसे वेदार्थ ज्ञापक ग्रन्थ का प्रणयन किया। अतः निश्चित् रूप से कहा जा सकता है कि निरुक्त पद्धति का आदि स्रोत वेद ही हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गीता की समत्वदृष्टि

—डा० कृष्ण लाल

संस्कृत-विद्वानों की गोष्ठी। विषय—शास्त्रों में समत्वभावना! एक विद्वान् बोले कि शास्त्रों में वेद, महाभारत, मनुस्मृति आदि में सर्वत्र शूद्रों, चाण्डालों को गर्हित बताया गया है। स्त्री और शूद्र को वेदाध्ययन का अधिकार नहीं दिया गया। गीता में स्त्री, शूद्र और वैश्य को पापयोनि कहा गया है। अतः इन शास्त्रों को छोड़कर स्वतन्त्र रूप में आधुनिक युग में 'छुआछूत छोड़ने की बात करनी चाहिये। एक अन्य विद्वान् ने कहा कि गीता में जो 'शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः' (विद्वान् लोग कुत्ते में और चाण्डाल में भी समान दृष्टि रखते हैं) कहा गया है, उसका समाधान आप क्या करेंगे? छूटते ही एक दूसरे रूढ़िवादी विद्वान् बोले कि नहीं, गीता के इस श्लोक में जो समदर्शिनः शब्द आया है उसमें समान व्यवहार की तो बात ही नहीं, केवल समान दर्शन की ही बात है। दूसरी ओर सम शब्द यहां पर बहुत-से विद्वानों के अनुसार 'समान' के अर्थ में माना ही नहीं गया। वे इसे ब्रह्म का वाचक मानते हैं, अतः यहां भाव सब जीवों में सर्वव्यापी ब्रह्म को देखने का है, समान व्यवहार का नहीं। उन्होंने प्रथम विद्वान् की इस बात की भी पुष्टि की कि गीता में स्त्री, शूद्र और वैश्य को पापयोनि अर्थात् निकृष्ट ही बताया गया है और स्वाध्याय के बिना ईश्वर द्वारा उनके भी उद्धार की बात कही गई है।

विद्वानों से यह सुनकर मेरा मन आवोड़ित हो उठा। मैं सोचने लगा कि जिन शास्त्रों में वास्तव में ऐसी विषमतामूलक बातें हैं, उन्हें तो छोड़ना ही श्रेयस्कर है। कुछ ऐसे भी ग्रन्थ हैं जिनमें दोनों प्रकार की भावनायें विभिन्न प्रसंगों में व्यक्त की गई हैं। क्या लोककल्याण की दृष्टि से विद्वानों का यह कर्तव्य नहीं हो जाता कि जो बातें समता की पोषक हैं, उन्हें उभार कर प्रकाश में लाया जाये? इसके साथ यह उससे भी आवश्यक है कि इस प्रकार विषमता आदि दुर्भावों की पोषक प्रतीत होने वाली बातों का गम्भीर अध्ययन करके वास्तविक तथ्य सबके सम्मुख प्रकट किये जायें। केवल स्वार्थी और पुराणपन्थी पण्डितों के भाष्यों, टीकाओं, मन्तव्यों का अन्धानुकरण न करके उनसे ऊपर उठकर गम्भीर विचार कर अपने मान्य ग्रन्थों को ठीक-ठीक समझसमझा कर उन्हें मिथ्या लाइन से मुक्त किया जाये।

गीता जैसे विश्ववन्द्य महान् समन्वयात्मक ग्रन्थ में ऐसी बात पर विश्वास नहीं हुआ। उपर्युक्त गोष्ठी से आकर जिज्ञासावश मैंने गीता के दोनों प्रसंग देखे। एक तो पांचवें अध्याय का अठारहवां श्लोक इस प्रकार है—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि ।
शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः ॥

अर्थात् ज्ञानी लोग विद्या और शिष्टाचार से युक्त ब्राह्मण (विद्वान्) के प्रति, गौ, हाथी, कुत्ते के प्रति और चाण्डाल के प्रति भी समान दृष्टि वाले होते हैं ।

समान दृष्टि शब्द यहां बहुत स्पष्ट है और यह समान भावना का ही द्योतक है । गीता की समग्र भावना के भी यह सर्वथा अनुकूल है । यहां जिस प्रकार पशुओं में पूज्य गौ, मध्यम कोटि के हाथी और निकृष्ट पशु कुत्ते की तुलना करके सब में ज्ञानी की समभावना बताई गई है, उसी प्रकार समाज में विद्या दान करने वाले सबसे सम्माननीय और दूसरी ओर कर्म की दृष्टि से पूजनीय न माने जाने वाले चाण्डाल आदि के प्रति भी समभावना बताई गई है । यहां समभावना का जिस प्रकार यह अर्थ नहीं हो सकता कि कुत्ते को गाय और गाय को कुत्ता माना जाये उसी प्रकार ब्राह्मण-कर्म करने वाले और चाण्डाल-कर्म करने वाले का गुणानुसारी और कर्मगत भेद तो रहेगा, परन्तु दोनों शरीर से एक समान हैं, दोनों की शारीरिक आवश्यकतायें एक-सी हैं, दोनों को आत्मोन्नति के लिये ईश्वरोपासना आदि में स्वतन्त्रता रहनी चाहिये—इस प्रकार दोनों के प्रति समभाव अभिप्रेत है। और यहां 'सम' का यह तात्पर्य गीता के उस स्थल के प्रसंग से भी बहुत स्पष्ट है। ऊपर उद्धृत श्लोक से ही अगले श्लोक में कहा गया है— 'इहैव तैर्जितः सर्गो येषां साम्ये स्थितं मनः" (उन ज्ञानियों ने यहां अर्थात् इस जन्म में ही सम्पूर्ण संसार जीत लिया है जिनका मन समभाव में स्थित है) ।

इसमें सन्देह नहीं कि इसी श्लोक की द्वितीय पंक्ति में ब्रह्म को निर्दोष और सम बताया गया है (निर्दोषं हि समं ब्रह्म) और तदनुसार कुछ विद्वान् सम का अर्थ ब्रह्म लेते हैं । परन्तु सम का अर्थ ब्रह्म मानने पर भी अर्थ में कोई अंतर नहीं पड़ता। सबमें ब्रह्म का दर्शन करना भी सबमें समभावना रखने जैसा ही है । षष्ठ अध्याय में भी इसी प्रकार समान दर्शन वाले योगी के विषय में कहा है कि वह आत्मा को सम्पूर्ण प्राणियों में स्थित और सम्पूर्ण प्राणियों को आत्मा में स्थित देखता है --

सर्वभूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि ।
ईक्षते योगयुक्तात्मा सर्वत्र समदर्शनः ॥ (६-२९)

यहां यह भी ध्यान रखना चाहिये कि दर्शन (देखना) का अर्थ स्थूल नेत्रों से देखना नहीं है । यदि ऐसा माना जाये तो यह कथन निरर्थक हो जाता है, क्योंकि आत्मा तो अदृश्य है । वास्तव में दर्शन का अर्थ 'विचार' है जैसा दर्शनशास्त्र में दर्शन का अर्थ होता है । इसी भाव को आगे और स्पष्ट करके बताया गया है कि जो पुरुष एकीभाव में स्थित होकर मुझ सब प्राणियों में स्थित का भजन करता है, वह योगी सब प्रकार से रहता हुआ भी मुझमें ही रहता है—

सर्वभूतस्थितं यो मां भजत्येकत्वमास्थितः ।
सर्वथा वर्तमानोऽपि स योगी मयि वर्तते ॥ (६-३१)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गीता में ऐसा अस्वाभाविक उपदेश कभी नहीं हो सकता कि सब प्राणियों में एक एवं सम आत्मा एवं ब्रह्म को अनुभव करो और उनमें से कुछ के प्रति घृणा, तिरस्कार और निर्दयता का व्यवहार करो।

गीता का दूसरा विचारणीय श्लोक निम्नलिखित है—

मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्युः पापयोनयः।
स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यान्ति परां गतिम् ॥ (९३२)

(हे अर्जुन, जितने भी पापयोनि वाले जन्तु हैं तथा स्त्रियां, वैश्य और शूद्र भी मेरा आश्रय लेकर परम गति अर्थात् मोक्ष को प्राप्त होते हैं।)

यहां पहली बात तो स्मरण रखने योग्य यह है कि पापयोनयः शब्द उत्तरार्ध के स्त्रियः, शूद्राः, वैश्याः का विशेषण नहीं हो सकता। कारण यह है कि योनि अथवा जन्म की दृष्टि से गीता ने सबको एक मनुष्य माना है। जन्म से जातिगत भेद माने होते तो गीता में यह न कहा गया होता कि 'मैंने चारों वर्णों की सृष्टि उनके गुणों और कर्मों के विभागानुसार की है (चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्म-विभागशः)। पूर्वजन्म के पापों के अनुसार अगले जन्म में निकृष्ट जीवजन्तुओं, अचर पेड़-पौधों आदि की योनि से यहां पापयोनि का अभिप्राय है। चारों वर्णों के कर्मानुसार विभाग के ही आधार पर दूसरी बात यह स्पष्ट हो जाती है कि गीता की दृष्टि में स्त्री, शूद्र को वेद पढ़ने का कोई निषेध नहीं। यदि ऐसा होता तो उनके साथ यहां वैश्य की गणना न होती, क्योंकि धर्मशास्त्रों में जहां स्त्री-शूद्र को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं दिया गया, वहीं वैश्य को द्विज बताया गया है और तदनुसार उसे स्पष्ट ही वेद पढ़ने का अधिकार प्राप्त है।

अब प्रश्न यह है कि सभी मनुष्यों में स्त्रियों, वैश्यों तथा शूद्रों को अलग निकाल कर केवल उनके विषय में विशेष रूप से क्यों कहा गया कि वे भी परमेश्वर का आश्रय लेकर उसकी उपासना द्वारा परम गति को प्राप्त होते हैं और अगले श्लोक में पुण्य ब्राह्मणों और भक्त राजर्षियों के विषय में यह कहा कि उनके विषय में तो कहना ही क्या अर्थात् उन्हें तो परमगति और भी अधिक सुलभ है—

किं पुनर्ब्राह्मणाः पुण्या भक्ता राजर्षयस्तथा। (९-३३)

इससे यह संदेह अवश्य होता है कि ब्राह्मणों और क्षत्रियों को अलग करके केवल उन्हें ही वेद पढ़ने का तथा विशिष्ट स्थिति का अधिकार प्रदान किया गया है। परन्तु यहां एक तो ब्राह्मणों का 'पुण्याः' (पवित्र) और क्षत्रियों का 'राजर्षयः' (ऋषि स्वभाव के राजा) तथा 'भक्ताः' विशेषण ध्यान देने योग्य है। अर्थात् ब्राह्मणों में भी अत्यन्त सच्चरित्र, पवित्र और क्षत्रियों में भी तत्त्ववेत्ता भक्तजनों को परम गति सुलभ है। अन्यथा भी गुणकर्म से (केवल जन्म से नहीं) जो वास्तविक ब्राह्मण-क्षत्रिय होते हैं उनमें क्रमशः सत्त्व और रजोगुण की प्रधानता होती है। दूसरी और द्विज होते हुए भी वैश्य का कर्म कुछ ऐसा है जिसमें एक स्थान से दूसरे पर जाना आना और बहुत व्यस्त रहना पड़ता है। व्यापार शब्द का अर्थ ही

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

व्यस्तता है। इस कारण उसका स्वाध्याय और पुण्य दोनों बाधित होते हैं। गुणकर्म की दृष्टि से यही बात बहुत-कुछ शूद्रों के साथ रहती है। वे भी कर्म के कारण अधिकतर तमोगुण में पड़े रहते हैं। स्त्रियों को प्रकृति ने मातृत्व और गृहिणी की विशेष परिस्थिति में रखा है। आज भी हम देखते हैं कि गृहस्थ का सम्यक् संचालन करते हुए पढ़ी-लिखी गृहिणी का भी स्वाध्याय नियमित रूप से चलाना कितना कठिन होता है अधिकांशतया असम्भव हो जाता है। सार यह कि सर्वत्र समभाव मानने वाली गीता में यहां कहीं भी जन्मगत वर्णव्यवस्था और तद-नुसार विशेषाधिकार अथवा अधिकारवंचना या अस्पृश्यता आदि अभिप्रेत नहीं है। अधिकार सबके समान हैं, परन्तु अपने-अपने कार्य की विशेष प्रकृति के कारण किसी को आत्मिक सुख-शान्ति सुलभ होती है, किसी को नहीं।

गीता के प्रबुद्ध व्याख्याकार रामगोपाल मोहता के अनुसार गीता की मूल भावना को इन शब्दों में प्रस्तुत किया जा सकता है—

"सबकी एकता को सच्ची और अनेकता को झूठी समझकर, भिन्न-भिन्न प्रतीत होने वाले शरीरों के साथ उनके गुणों को पृथक्-पृथक् योग्यतानुसार यथायोग्य व्यवहार करना, और ऐसा करते हुए भी सबकी आपस की वास्तविक एकता का सदा समरण रखते हुए, अन्तःकरण में किसी के साथ राग, द्वेष, ईर्ष्या, घृणा, तिर-स्कार आदि भाव न रखना और किसी को वस्तुतः ऊंचा, नीचा, पवित्र, मलिन, अच्छा, बड़ा, छोटा आदि न समझना तथा किसी पर अत्याचार न करना, किसी को न दबाना, किसी के स्वाभाविक अधिकार न छीनना यह गीता-प्रतिपादित समत्वयोग है।" (गीता का व्यवहारदर्शन, पृ० २५३)

गुरु तेगबहादुर की वाणी

हमारा धर्म हिन्दू है। इसके समान और ऊंचा कोई धर्म नहीं—मैं इस प्यारे धर्म को नहीं छोड़ सकता, जान देकर भी इसे जग में कायम रखूंगा—

शहीद गुरु तेगबहादुर का औरंगजेब को उत्तर—"

पढ़िये सूरज प्रकाश—गुरुजी के शब्दों में

'उत्तर भयो धर्म हम हिन्दू अति प्रिय को किम करे लकन्द,
लोक परलोक दीखे सुख दानी आगमन षायत याहे समानी।
मत नयन मुख मत जाई इसको त्यागे पा मर सोई,
हिन्दू धर्म रखे जग माहीं तुमरे करे बिन्शे यह नाहीं।

गुरु तेगबहादुर जी ने अपना हिन्दू धर्म कायम रखने के लिये अपने नौ वर्षीय बालक गोबिन्द सिंह के कहने पर अपनी कमिती जान वार दी वे लोग जो कहते हैं कि हम हिन्दू नहीं, अलग कौम हैं—वह गुरु तेगबहादुर और गुरु गोबिन्द सिंह जी के सिख कहलाने के हकदार हैं? क्या उन्होंने गुरु तेगबहादुर जी के ये अन्तिम शब्द पढ़े हैं जो पुकार पुकार कर कह रहे हैं कि वे अपने इस हिन्दू धर्म को कायम रखने के लिए जान निछावर कर रहे हैं—क्या गुरु जी के अन्तिम शब्दों की मौजूदगी में अपने आपको अलग कौम मान कर कोई भी भाई अपने आपको गुरुओं का सच्चा सिख कह सकता है? फिर ये भाई अपने स्वार्थ में अन्धे होकर विदेशियों के बहकावे में आकर अपने को अलग कौम मानने लगे हैं और अपने पूर्वजों के प्रति क्यों द्रोह कर रहे हैं?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मुस्लिम साम्प्रदायिकता का असली चेहरा

—ज़हीर नियाज़ी

भारत में मुसलमानों की वर्तमान तसवीर, १९८०-८१ के हालात की रोशनी में, यह है कि जब पूरे देश की जनसंख्या बढ़ी, तब स्वाभाविक रूप में मुस्लिमों की भी बढ़ी। इन दिनों देश की आबादी ६८.३९ करोड़ और मुस्लिम आबादी करीब १० करोड़ है। वैसे राजनैतिक उद्देश्य से बढ़ा-चढ़ाकर ही बताया जाता है मुस्लिम राजनीतिबाजों द्वारा। ७ मार्च, १९७८ को पटना में सय्यद अब्दुल्ला बुखारी ने अपने बयान में कहा था कि भारत में मुसलमानों की आबादी २४ करोड़ से भी अधिक है। (सरकारी आंकड़ों के अनुसार १९८१ की जनगणना में देश की आबादी थी ६८,३९,९७,५१२ और मुस्लिम आबादी १० करोड़ से अधिक)।

परिवार नियोजन को बहुतेरे मुसलमानों ने अपनाया है और बेशुमार लोग अब भी अपनाना चाहते हैं पर मुस्लिम राजनीतिबाज अपने स्वार्थों की खातिर मज़हबी मुल्लओं से फतवा दिलाते हैं कि इसे न अपनाओ, यह धर्म के खिलाफ है और इससे मुस्लिम आबादी घट जाएगी। जबकि इसे न अपनाएंगे तो और सम्प्रदायों के मुकाबले हमारी आबादी बढ़ जाएगी और हमारी हैसियत होगी।

मुस्लिम राजनीतिक पार्टियों का जहां तक सम्बन्ध है, केवल जमाते इस्लामी ही ऐसी पार्टी है, जो हर दृष्टि से मजबूत और सुसंगठित है। डा० सैयद महमूद के निधन के बाद मजलिसे मुशाविरत टूट-सी गयी, डा० फरीदी के बाद मुस्लिम मजलिस भी यतीम हो गयी। अंजुमन इत्तेहादुल मुस्लिमीन हैदराबाद और कुछ खास क्षेत्रों तक ही सीमित है। मुस्लिम लीग के नाम और काम से तो हमारे देश की साधारण जनता भी परिचित है। इसका नम्बर जमाते इस्लामी के बाद ही आता है।

मुसलमानों के लिए ये पार्टियां जिन खास मुद्दों-प्रश्नों को उछालती हैं, उनमें से प्रमुख हैं—उर्दू, मुस्लिम यूनिवर्सिटी और फिरक़ावाराना फिसाद। उर्दू को ये राजनीतिबाज इस्लामी संस्कृति की रक्षा वाली भाषा के रूप में उछालते हैं, मुस्लिम यूनिवर्सिटी को मुसलमानों के इदारे के रूप में और फिरकावाराना फिसाद (सांप्रदायिक दंगा) को इस रूप में प्रचारित करते हैं कि इन फ़िसादों को योजनाबद्ध तरीके से कराया जाता है, ताकि मुस्लिम कौम आहिस्ता-आहिस्ता मिटकर रह जाए, उसका खात्मा हो जाए, इत्यादि-इत्यादि।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इन बातों के अलावा ये राजनीतिबाज बार-बार इस तरह का रोना भी रोते हैं कि 'हमें दूसरे दर्जे का शहरी समझा जाता है, हमें हमारी आबादी के अनुपात से सरकारी सेवाओं में प्रतिनिधित्व नहीं मिलता और हमारा मजहब और हमारी जान-माल इस मुल्क में महफूज़ नहीं।'

इसी पृष्ठभूमि में जमाते इस्लामी ने कश्मीर में जुलाई-अगस्त १९८० में 'पाकिस्तान जिन्दाबाद' के नारे बुलन्द किये। इसी के सहयोगियों ने मुरादाबाद से रामपुर तक एक मुस्लिमलैंड का मानचित्र तक तैयार किया। फरवरी, ८१ में 'वादिए हुदा' नामक एक इस्लामी बस्ती बसायी (हैदराबाद के निकट), जमाते इस्लामी के छठे अखिल भारतीय अधिवेशन के अवसर पर। उस अधिवेशन के शुरू होने से एक दिन पूर्व १९ फरवरी १९८१ को मीनाक्षीपुरम् में भारी संख्या में हरिजन हिन्दुओं को मुसलमान बनाया गया। अधिवेशन में सऊदी अरब और कुवेत की ओर से यह घोषणा की गयी कि इस तरह के इस्लामी कामों के लिए पूरे विश्व में जमाते इस्लामी की करीब ४० सहयोगी संस्थाएं काम कर रही हैं और इस काम में पैसों की कोई कमी न रहने दी जाएगी।

इस अधिवेशन के तुरन्त बाद एक ओर तो धर्मांतरण का चक्र चल पड़ा, दूसरी ओर पृथक् मुस्लिम होमलैंड का पोस्टर तक हैदराबाद की दीवारों पर नजर आया। तो इस तरह की तसवीर नजर आई १९८०-८१ में भारतीय मुसलमानों को भारत के 'इस्लामीकरण' की साजिश रचने वाली, इस्लामिस्तान की स्थापना यानी हुकूमते इलाहिया कायम करने का पक्का व निश्चित मंसूबा रखने वाली जमात—जमाते इस्लामी द्वारा।

यही सबसे खतरनाक राष्ट्रद्रोही संगठन है, जो मुसलमानों को हर तरह राष्ट्रीय धारा से काटकर रखता है, राष्ट्र का अहित करता है और खुले शब्दों में यह कि हर हाल में अपनी अक्षम्य हरकतों से सारे मुसलमानों का बेड़ा गर्क करता है—सी०आई०ए०, के०जी०बी० या अपने अन्य विदेशी आकाओं से शह, शक्ति, सहयोग और संरक्षण पाकर।

मध्यावधि चुनाव में शर्मनाक भूमिका

भारतीय मुसलमानों के एक वर्ग ने बांगलादेश में हो रहे अमानुषिक अत्याचार और नरसंहार के दिनों (१९७१) में एक जबरदस्त ऐतिहासिक भूल की थी—पाकिस्तान के खूंखार हुक्मरानों का पुरजोर समर्थन करके। तब उनकी इस शर्मनाक हरकत पर मैं चीख उठा था, नतीजे में इन धर्मांधों ने मेरा जीना हराम कर दिया था (आज भी……)।

इन धर्मांधों ने तीसरी (पहली पाकिस्तान को जन्म देने की !) ऐतिहासिक भूल की लोकसभा के मध्यावधि चुनाव (जनवरी १९८०) के सिलसिले में अपनी शर्मनाक और बेगैरती भरी भूमिका अदा करके। **'लगाकर खून का टीका हम पाकिस्तान ले लेंगे।'** जैसा शोर और जोर भरा अभियान १९४६-४७ में चला था, इस मौके पर भी वैसी ही फिज़ा चीखती-चिंघाड़ती-सी नजर आई मानो बुखारी का हर मुरीद एक मुजाहिद हो और वह हमारे बचपन के बशारत क़व्वाल और उन जैसे अन्य क़व्वालों के से ही स्वर में—'लगाकर खून का टीका हम पाकिस्तान ले लेंगे' की जगह इतरा-इतरा कर, इठला-इठला कर कहना चाहता हो—बुखारी की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इमामत में हम हिन्दुस्तान ले लेंगे !' देशभर की पत्र-पत्रिकाओं में ढेरों खुराफाती बातों का पर्दाफाश हुआ है, और खुशी की बात है कि बदनाम हो चुके हमीद दलवाई या जहीर नियाजी की कलम से नहीं बल्कि तटस्थ कहलाने वाले फीरोज अशरफ और मुनीर नियाजी की कलम से तथा अन्य मुसलमानों के ही जबान व बयान के जरियों पर देशवासियों को शायद इस बात की जानकारी नहीं कि सत्यनारायण कथा की तरह मुसलमान जो मीलाद कराते हैं जिसमें राजनीति या जहरीली बात की इस्लाम इजाजत नहीं देता, वैसे मीलाद बिना अवसर, बिना जरूरत के ही भारत के विभिन्न क्षेत्रों में आयोजित बड़े पैमाने पर किए गए और उन मीलाद महफिलों में तथाकथित इमाम बुखारी के चेलों-चमचों (मुरीदों) ने सीधे-सादे मुसलमानों के बीच यह जहरीला भाषण दिया कि 'हम कोई मामूली कौम नहीं। हमने ११०० साल हिन्दुस्तान पर हुकूमत की है और हमें यह हक आज भी मिल सकता है, अगर हम बुखारी को अपना इमाम मानकर अपनी किस्मत का फैसला उन्हीं को सौंप दें !' तो यह था बुखारी के मुरीदों का रोल।

इस शर्मनाक और अपराधपूर्ण रोल की रोशनी में ही मैंने यह खरी, सच्ची और बेबाक बात कहने की जुर्रत की कि भारतीय मुसलमानों के एक वर्ग से तीसरी बार अपराधपूर्ण ऐतिहासिक भूल हुई है, जो पिछली सारी भूलों पर भारी है और अत्यन्त भयानक भी—खुद उनके लिए ही।

अखंड भारत को खंडित करने का जो अपराध मुसलमानों के एक वर्ग विशेष ने किया था, उस भूल की सजा तो नाहक भुगतनी पड़ रही थी इस उपमहाद्वीप के ढेर सारे सीधे-सादे और आम मुसलमानों को; अब यह नया बीज बोकर क्या मुसलमानों की आने वाली पीढ़ी को भी नारकीय और कांटों भरा जीवन जीने जैसी बात नहीं की बुखारी जैसे नाआकबत-अंदेशों ने ?

दिल खून के आंसू रोता है, पर कैसी विडम्बना है कि कोई बात—कोई आवाज पब्लिक तक पहुंचाने के लिए आज पैसा चाहिये। (बुखारी के आका की तरह अब किसी गरीब लेखक के पास ५,००० जीपें और करोड़ों रुपये कहां से आएं – पुरजोर प्रचार के लिए—अपनी आवाज को पब्लिक तक पहुंचाने के लिए !) मध्यावधि चुनाव अभियान के दिनों तथाकथित इमाम बुखारी के एक मुरीद ने एक जोरदार शेर पढ़ा। दूसरे ने कुछ और तर्रारी से लुक़मा दिया—पंडित की जगह और है मुल्ला की जगह और ! सारी सभा जैसे इस किस्म के बेहूदा और अदूरदर्शिता भरे नारों से पागल हो रही थी। कई लोग तालियों की इस शोर भरी धुन पर नाचने लगे ! मन को जबरदस्त ठेस लगी। एक बार तो विशाल भारत को खंडित करके इन अदूरदर्शियों ने पाकिस्तान नाम के एक नासूर को इस उपमहाद्वीप में जन्म देकर करोड़ों लोगों की जिन्दगी जहन्नुम बना दी। अब ये लोग और कितने पाकिस्तान बनाएंगे ? कितने टुकड़े करवाएंगे भारत माता के ?

सभा का शोर जब कुछ थमा तो इमाम भक्त ने फरमाया—'हमारे बुजुर्गों की रूह तड़प रही है कि उन्होंने अपनी लियाकत से हिन्दुस्तान पर पूरे ग्यारह सौ साल हुकूमत की और आज हम इतने नालायक हैं कि उर्दू को उसका हक नहीं दिला सकते ? अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी को उसका अकलियती किरदार नहीं दिला सकते ? हुकूमत में, पुलिस में और सरकारी नौकरियों में अपनी सीटें तक रिजर्व नहीं करा सकते ? यहां तक कि फिसाद के मौके पर अपनी बहू-बेटियों की इज्जत और अपनी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जान-माल की हिफाजत का हक तक अदा नहीं कर सकते ? धिक्कार है हमारी कौम पर ! आपको अपना सिर बुलंद करना है, अपनी कौम का नाम रोशन करना है तो आइए डटकर मैदान में आ जाइए और कौम के रहनुमा इमाम बुखारी की इमामत कबूल कर लीजिये।'

फिर वही दो-कौमी नजरिया

'कौम' का यह अलगाववादी नारा एक बार तो विष घोल ही चुका है हमारे राष्ट्रीय जीवन में—अब और कितनी बार घोलेगा ?

और बुखारी को इमाम कबूल करने की बात ? जाहिर हुआ कि आम मुसलमानों ने इस तथाकथित शाही इमाम की इमामी कभी क़बूल नहीं की। करते भी क्योंकर, जबकि ऐसा करने के लिए कोई इस्लामी आदेश नहीं था, धार्मिक अनिवार्यता न थी। फिर बुखारी के चेले-चमचे क्या इस तथ्य पर पर्दा डालना चाहते थे कि बुखारी का खुद अपना कोई चरित्र नहीं ? मस्जिद धर्म-कर्म के लिए होती है, जबकि बुखारी ने अपने राजनीतिक बुखार की रौ में पवित्र मस्जिद को अपवित्र करके उसे राजनीति का अड्डा बनाया—और वह भी गंदी और षड्यंत्रकारी राजनीति का अड्डा। बुखारी ने जनता पार्टी की सभा में कहा था—'हमने जालिम व जाबिर हुकूमत को उखाड़ फेंककर ही दम लिया।' अब उन्हीं जालिमों को वे अपनी तथाकथित मुस्लिम कौम का निजातदहिंदा (मुक्तिदाता) करार देते नजर आयेंगे ! क्या उन जालिमों के जुल्म के पाप को बुखारी ने धो दिया था ?

ऐसे अनेकों ज्वलंत प्रश्न हैं, जिन्हें हमारे लोग पूछना चाहेंगे। हमारी आगामी पीढ़ी पूछना चाहेगी—बुखारी से और उनके खरीदे हुए मुल्ले-मौलवियों से कि भाई, हमें तो आप मुल्ला लोग यही धर्म घुट्टी पिलाते और बताते रहे हैं कि इस्लाम सच बोलना सिखाता है, तो क्या सच यही है कि हम भारतीय मुसलमानों की कौम अलग है ? और क्या यह सच है कि हमारी कौमी शान को ये लोग बुलंद कर सकते हैं, जो बरसों जालिम रहे (आप ही के शब्दों में) और रातोंरात उनके सारे पाप धुल गये और वे हमारे मुक्तिदाता बन बैठे ?

मुस्लिम पर्सनल लॉ

कोई भी सरकार समता के आधार पर सिविल कोड लागू करके और मुसलमानों के पर्सनल लॉ में हस्तक्षेप करके मुसलमानों को बागी बनाना पसंद नहीं करेगी और यदि वह ऐसा करेगी तो यह उसकी निरी मूर्खता होगी !"

यह आवाज बुलंद की गई मेरठ में, मुस्लिम पर्सनल लॉ संबंधी एक ऐसी कान्फ्रेंस में जिसका सिलसिला शुरू हुआ था नगीना (बिजनौर) से और उस सिलसिले की तान टूटी थी ताज के शहर आगरा में। इस तरह की बागियाना आवाज बुलंद करने वालों ने स्व० डा० अम्बेडकर के नाम का सहारा लिया और कहा कि यह कथन स्व० डा० अम्बेडकर का है, और इसी कथन को हम जोरदार शब्दों में ऐलानिया दुहराना और सरकार को चेतावनी देना चाहते हैं कि 'मुस्लिम पर्सनल लॉ में हस्तक्षेप न किया जाये वरन मुसलमान बगावत का झंडा बुलंद करने में नहीं हिचकिचायेंगे !'

औरतों की कॉन्फ्रेंस, औरतों का कारवां !

भारतीय उपमहाद्वीप में अपने ढंग की यह सबसे पहली कान्फ्रेंस थी जो ४ नवम्बर, ७३ को नगीना में शुरू हुई थी और १८ नवम्बर को आगरा में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ख़त्म हुई थी। नगीना के बाद सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, मेरठ, बुलंदशहर, अलीगढ़ और तब आगरा। इन कान्फ्रेंसों का आयोजन जमाअते इस्लामी ने 'हलका मगरबी (पश्चिमी) यू० पी०' के लिए 'बतौर खास' किया था जिसमें महिलायें ही महिलायें थी। जमाअत की महिला विभाग की प्रबंधक कैसर बेगम नियाजी इन कान्फ्रेंसों की 'रूहे रवां' या 'जान' थीं। महिलाओं को लिखित भाषण दे दिए गये थे और उनके नामों के साथ उनकी डिग्रियों का भी माइक पर बड़े फख्र से ऐलान होता था कि जनता पर 'जमाअत' का रौब तारी हो सके और लोग यह विचार सकें कि 'जमाअते इस्लामी' जरूर एक बेहतरीन जमाअत है तभी तो इसके प्लेटफार्म पर इतनी 'आलिम फाजिल और काबिल-काबिल औरतें तक नजर आती हैं!' जमाअत ने पोस्टर आदि द्वारा इतने व्यापक रूप में प्रचार किया था कि एक-एक कान्फ्रेंस में दस-दस हजार महिलाओं की बाढ़ नजर आई। बहुत बड़े पैमाने पर खर्च करके महिलाओं को आस-पास के इलाकों से ढो-ढो कर लाया गया (इस्लाम खतरे में है' की दुहाई दे-दे कर!)

एक ओर पर्सनल कान्फ्रेंस, दूसरी ओर उर्दू कान्फ्रेंस

इधर पर्सनल लॉ संबंधी मुस्लिम महिलाओं की कान्फ्रेंस, उधर उर्दू के गैर-मुस्लिम लेखकों की कान्फ्रेंस पहली कान्फ्रेंस। सरकार को धमकाने के लिए—हमारे मजहबी मामले में टांगें न अड़ाई जायें वर्ना। फिर साहब हमारी औरतें जब खुद राजी हैं और जोर दे देकर यह मांग कर रही हैं कि एक मुसलमान मर्द को एक वक्त में चार बीवियों के रखने का हक बरकरार रखा जाये, तो आप क्यों पीछे पड़े हैं हमारे पर्सनल लॉ के ?' और सरकार भी बेबसी भरा मुंह बनाकर भारतीय जनता से कहने का मौका निकल सके कि सरकार क्या करे जब मुस्लिम महिलायें खुद प्रगतिशील परिवर्तन नहीं चाहतीं ? दूसरी ओर वाली कान्फ्रेंस में कुछ सरकारी नुमाइंदों के इशारे पर कुछ वजीफाखोर साहित्यकार उर्दू को दूसरी सरकारी भाषा बनाने जैसी कोई दलील दें और तब सरकारी नुमाइंदे या सरकार यह तुक पेश करने में सफल हो सके कि जब इतने बड़े-बड़े 'गैर-मुस्लिम लिखाड़ी' भी उर्दू का इस जोरदार ढंग से समर्थन करते नजर आ रहे हैं तब बताइये सरकार क्या करे ? सरकार को उर्दू को कोई खास दर्जा देने पर विचारना ही होगा।

यह सरकारी नर्म गोशा किस लिए ?

जाहिर है कि इलेक्शन में अपनी कामयाबी के लिए! यदि ऐसा न हो तो महिलाओं की इन कान्फ्रेंसों को हर तरह से कामयाब होते हुए देखा न जाता—इन कान्फ्रेंसों में जमाअते इस्लामी को कांग्रेस समर्थक 'जमीअतुल उलेमा' जैसी राष्ट्रवादी पार्टी का सहयोग प्राप्त न होता और मेरठ में एक मुस्लिम एम० एल० ए० साहब का पूरा मकान इसके लिए खाली नहीं कर दिया जाता।

जमाअते इस्लामी के अलावा दूसरी जमाअतों—तबलीगी जमाअत, जमीअतुल उलेमा, शीआ, हनफी तथा 'अहलेहदीस' आदि को भी एक ही प्लेटफार्म पर देखा गया तो इसकी खास वजह यही थी कि पर्सनल लॉ के मसले को सबका मसला करार दिया गया। जमाअते इस्लामी वालों को इससे ज्यादा सुनहरा मौका मिल नहीं सकता था सो उसने इस मौके से खूब फायदा उठाया! मेरठ में तो जमाअत वालों से बढ़-चढ़कर मुस्लिम लीग और मुस्लिम मजलिस वाले नजर आये जिन्होंने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपनी लफ्फाज़ी व चरब जबानी से काम लेते हुए आम मुसलमानों से दमभर अपील की कि 'मुस्लिम परसनल लॉ का मसला सिर्फ जमाअते इसलामी का मसला नहीं बल्कि पूरे मुसलमानों का मसला है, अतः मुसलमानों जौक दर जौक आओ और इस कान्फ्रेंस को और इस अभियान को ज्यादा से ज्यादा कामयाव बनाओ !'

"उठो वगरना हश्र नहीं होगा फिर कभी।
दौड़ो जमाना चाल कयामत की चल गया !!"

कयामत की-सी चालें तो ये सांप्रदायिक राजनीतिवाज खुद चल रहे थे पर मुसलमानों में उठने और उठकर अपनी मांगें मनवाने की स्पिरिट भर रहे थे कि 'तुम नहीं उठे तो हश्र कभी न होगा, दौड़ो-दौड़ो कि जमाना कयामत की चाल चल गया। मेरठ में कान्फ्रेंस का स्वर काफी सख्त था। वहां सरकार को खुले शब्दों में चेतावनी दी गई कि 'वह ऐसी तमाम कोशिशों को तर्क कर दे जो मुस्लिम पर्सनल लॉ में हस्तक्षेप के समान हैं···सेक्युलरिज्म एक बकवास से ज्यादा कुछ नहीं···मुस्लिम पर्सनल लॉ में हस्तक्षेप वर्तमान युग की सबसे बड़ी विडम्बना है ! "अगर मुसलमानों ने मुस्लिम पर्सनल लॉ की हकीकत और जिन्दगी से इसके गहरे लगाव को अच्छी तरह समझ लिया और इसके तकाजों की तकमील में लग गये तो दुनिया की कोई ताकत मुस्लिम पर्सनल लॉ में मुदाखिलत (हस्तक्षेप) नहीं कर सकती !" ('दावत' १.१.'७४)

मौत और जिन्दगी का मसला ! नारा मुस्लिम महिलाओं का

जुनूनियों के जुनून की हद हो गई जब उन्होंने तथाकथित 'खासी तालीमयाफता खातीन' अर्थात् एम०ए०, बी०ए० की हुई, काफी पढ़ी हुई मुस्लिम महिलाओं की जुबान से यह नारा तक लगवा लिया—'मुस्लिम पर्सनल लॉ की रक्षा के लिए मुस्लिम महिलायें अपना सब कुछ कुरबान करने को तैयार हैं। यह मसला हमारी मौत और जिन्दगी का मसला है !" उन्होंने माइक पर बार-बार ऐलान किया कि मुस्लिम महिलायें अपने धर्म (शरीअते इस्लामिया) में कोई परिवर्तन कभी बर्दाश्त नहीं कर सकतीं। 'खातीन (महिलायें) अपने धर्म की रक्षा में मर्दों से पीछे नहीं और उनकी समस्त योग्यतायें 'खुदा के दीन' (इस्लाम) के लिए समर्पित रहेंगी ! **मुस्लिम पर्सनल लॉ में हस्क्षेप एक ऐसा साहस है जिसकी कोई मिसाल हिन्दुस्तान की तारीख (इतिहास) और दुनिया के किसी मुल्क में नहीं मिलती।** उछलकूद भरी तमाम कान्फ्रेंसों का खासुल खास उद्देश्य यही था कि तमाम मुस्लिम महिलाओं के दिमाग में यह बात भर दी जाये कि भारत सरकार तुम्हारा धर्म नष्ट कर देना चाहती है और इसे बर्दाश्त करने से अच्छा है कि तुम खुदकशी कर लो, डूब मरो।

हरी रिबन की पट्टियां और एक अनोखी प्रेस कान्फ्रेंस !

सहारपुर में पाकिस्तानी कौमी झंडे की निशानी हरी पट्टियां तो रजाकारों की बांहों पर थीं ही, वहां एक नयी बात यह भी नजर आई कि प्रेस कांफ्रेंस जो ७ बजे से (७.११,७३ को) हुई उसकी शुरुआत कुरान शरीफ की तलावत से हुई। यह शायद दुनिया की सबसे अनोखी 'सैक्युलर कान्फ्रेंस' थी जो इस्लामी ग्रंथ कुरान के पाठ से शुरू हुई थी ! प्रेस प्रतिनिधियों ने पूछा था कि जब कि सरकार ने बार-बार वायदे किए हैं कि मुस्लिम व्यक्तिगत कानून में हेरफेर का उसका कोई इरादा नहीं, फिर ये कान्फ्रेंसें आप लोग क्यों कर रहे हैं ?' जमाअत वालों ने झट से जवाब दिया 'क्योंकि हमें सरकार के किसी भी वायदे का एतबार नहीं !'

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—स्व० महात्मा आनन्द स्वामी

कुम्भ का प्रसाद

[यह लेख लगभग तीस वर्ष पूर्व लिखा गया था। कृपया उसी सन्दर्भ में पढ़ें।

—सम्पादक]

—क्या प्रसाद लिया है आपने ?

—प्रसाद तो अभी कुछ लिया नहीं। हां, विचार कर रहा हूं कि कोई ऐसी वस्तु ले चलूं, जो सब को प्रिय हो।

—कुम्भ के इस पुनीत अवसर पर इतने कष्ट सहन कर आये हो भाई! प्रसाद ऐसा ही ले जाने चाहिये जो सबको केवल प्रिय ही न हो अपितु सब का कल्याण करने वाला भी हो।

—मेरी पत्नी तो कह रही थी कि गंगा-जल ले जाएंगे, इससे उत्तम वस्तु और क्या होगी ?

—ठीक है, गंगा-जल बहुत अच्छा है किन्तु यह भी नाशवान् ही है, प्रसाद तो ऐसा लेना चाहिये जो सदा रहे और सेवन करने वालों को भी अमर बना दे।

—आप जानते हैं ना, आपकी भावज तो बड़ी चटोरी हैं, कह रही थीं कि यहां का वांस का अचार स्वादिष्ट होता है, वह ले चलेंगे, और उसकी बहिन उमा को मधुर चीजें पसन्द हैं, वह यहां की मिठाई की लिस्ट बना रही थीं, हमारे नन्हे कुकू जी तो खिलौने ही एकत्र कर रहे हैं। हाँ, माता जी कह रही हैं, कि उन्हें अब घर से छुट्टी मिल जाय तो हें यहीं भगवान् के भजन में शेष दिन व्यतीत कर दें।

—ओ मेरे भाई, अपने-अपने स्वभाव के अनुसार ही इच्छा की जाती है।

—तो फिर आपको सब से अच्छा प्रसाद क्या प्रतीत होती है ?

—मुझे तो कुम्भ का एक ही प्रसाद अच्छा प्रतीत हुआ है, यदि यह हम सब अपने साथ ले जायें तो हम सब का कल्याण हो जाय।

—क्या है वह प्रसाद ?

—सुनो, मैं गंगा- स्नान करके उधर ऋषिकेश की ओर भ्रमण करने जा रहा था, तो मोहन आश्रम में कुछ भक्त-जन बैठे वार्त्तालाप कर रहे थे। एक महानुभाव ने उठ कर कहा कि हमें कुम्भ पर आये कितने ही दिन हो गये। अब कुम्भ का पर्व समाप्त होने वाला है, हम सब यहां से चल देंगे। यहां से जाने से पूर्व कुम्भ का प्रसाद ले लेना चाहिये। तब उस महात्मा ने बतलाया कि कौन-सा प्रसाद यहां से ले जाना चाहिये। जब उस महात्मा ने ऐसा कहा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तो मेरी उत्सुकता बढ़ी और मैं अधीर होकर प्रतीक्षा करने लगा कि यह महात्मा किस प्रसाद का आदेश देते हैं।

तो हां, कौन सा प्रसाद उन्होंने बतलाया ?

—सुनो तो, वही बतलाने लगा हूं, ध्यान पूर्वक श्रवण करना, बहुत काम आने वाला प्रसाद है।

—जी हां, पूरे ध्यान से सुन रहा हूं।

उस महात्मा ने कथा सुनाई कि एक गुरु के समीप उसके शिष्य बैठे थे। उन्होंने न वेदन किया कि महाराज कौन-सा प्रसाद कुम्भ से ले जाना अच्छा होगा ! तो गुरुजी कहने लगे कि इस समय देश तथा संसार में अशान्ति का राज्य है। २४ वर्ष हुए जब हरिद्वार में कुम्भ हुआ था तो यह अवस्था न थी। पहले कुम्भ के पश्चात् विश्वव्यापी युद्ध हुआ और सारा संसार दुखी हो गया। कितने स्वतंत्र देश—जर्मनी, जापान जैसे परतंत्र हो गये और कितने ही भारत, बर्मा इत्यादि परतंत्र देश स्वतन्त्र हो गये, परन्तु स्वतन्त्रता आने पर भी शांति प्राप्त नहीं हुई। मन सब के दुखी हैं, संसार की इस भयंकर परिस्थित को कौन सुधारेगा ? इस बढ़ते हुए हाहाकार और अत्याचार को कौन रोकेगा ? संसार के जितने शक्तिशाली देश हैं वे तो अशांति को बढ़ाने ही की सामग्री एकत्र कर रहे हैं। वे अग्नि को भड़का ही रहे हैं, शान्त नहीं कर रहे। मायावाद और भोगवाद के इस तूफान में कोई यह विचार करता ही नहीं कि हम किस ओर जा रहे हैं ? यह मार्ग जिस पर आज संसारी लोग अग्रसर हैं यह तो सर्वनाश की ओर ही ले जाता है। ये जो एटम बम से २० हजार गुणा शक्तिशाली हाइड्रोजन बम अमरीका तथा रूस ने तैयार कर लिये हैं, क्या ये प्रलय न ले आयेंगे ? ऐसी अवस्था में यदि कोई प्रसाद अपने साथियों, सम्बन्धियों तथा संसारी जीवों के कल्याण के लिए यहां से ले जाना चाहते हो तो वह केवल एक ही प्रसाद है कि अपने मनको अपने वश में करो। जब तक मन ठीक नहीं होता तब तक स्वतंत्रता भी हमें कोई लाभ नहीं पहुंचा सकती।

जब गुरु जी इतना कह चुके तो एक भक्त ने कहा, महाराज ! आपने तो ऐसे प्रसाद का आदेश दे दिया जिसका मिलना बड़ा दुष्कर है। गीता में अर्जुन भी पुकार उठा था कि यह मन बड़ा प्रमाथी है, यह वश में नहीं आता, तब हमें यह प्रसाद कैसे प्राप्त होगा ?

गुरु जी कहने लगे—मेरे भक्त, निराश होने की कोई बात नहीं, पुरुषार्थ से सब कुछ प्राप्त हो जाता है।

भक्त ने पूछा, तो फिर वह रहस्य प्रकट क्यों नहीं कर देते ताकि दुखी जनता सुखी हो सके।

गुरु ने उत्तर में कहा स......स... स......स

चार बार......स......स......स...... स सुन भक्त-जन गुरुजी के मुख की ओर देखने लगे आर गुरुजी बार बार स...स...स...स ही कहते रहे।

भक्त ने अधीर होकर पूछा—भगवन् ! यह स...स...स...स का क्या प्रयोजन है ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गुरुजी ने कहा—यही है, यहां से ले जाने योग्य प्रसाद !

एक हंसोड़ भक्त भी वहाँ बैठा था, कहने लगा ठीक है आ गई समझ, स...स...स...स का प्रयोजन है चार चार साधु साथ ले जाओ, इस से बढ़िया प्रसाद कुम्भ का और क्या होगा !

गुरुजी हंस पड़े और कहने लगे, नहीं-नहीं इसका प्रयोजन यह नहीं।

भक्त ने निवेदन किया, तो महाराज फिर आप बतला क्यों नहीं देते ?

गुरुजी ने बहुत गंभीर होकर बड़े मधुर स्वर में कहा—सुनो, ये चार स मन को वश में करने और संसार को सुखी करने के सरल साधन हैं। जो लोग योगाभ्यास, प्राणायाम इत्यादि तप नहीं कर सकते, अनुभवी लोगों ने उनके लिए चार "स" निर्माण किये हैं—

पहला 'स'

सन्ध्या नित करो, प्रभु प्रेम के पवित्र मंत्रों का प्रातः-सायं अर्थसहित पाठ और गायत्री मन्त्र तथा ओ३म् का जाप करो। परन्तु सन्ध्या करने से पूर्व यह ज्ञान प्राप्त कर लो कि आपको किस के साथ सन्धि करनी है, संसार में तीन शक्तियां हैं, (१) परमात्मा (२) जीवात्मा और (३) प्रकृति। यदि प्रकृति की ओर झुकोंगे तो अन्त में पछताना होगा जैसे कि रूस अमरीका, यूरोप। यदि परमात्मा की ओर झुकोगे तो परम आनन्द पाओंगे। हां, प्रकृति को परमानन्द तक पहुंचने का एक साधन बना सकते हो, यह सारा दृश्यमान संसार परमात्मा का विराट् रूप है।

यह चमकता हुआ सूर्य, यह शीतल रश्मियों वाला चन्द्र, ये गरजते हुए मेघ और सागर, यह झर-झर करते निर्झर, यह लहलहाते खेत, वन तथा उपवन, यह हर-हर करती नदियां, यह सांय-सांय करते मरुस्थल, यह आकाश से बातें करने वाले गिरिशिखर, और यह सारा मन-मोहक सौन्दर्य, यह सब उसी भगवान् की ही कारीगरी है। इनको देख और प्रभु की महान् शक्ति का अनुभव कर के वेद मन्त्रों द्वारा उसके गुणों का गान करो।

जो ब्रह्माण्ड में देख रहे हो यही सब कुछ तुम्हारे शरीर के अन्दर भी है। वाहर के सारे प्राकृतिक दृश्य को देखकर अब अन्तःमुख हो जाओ। बाहर के द्वार बन्द कर लो, अन्दर चलो और वहां ज्योति देखो। श्वेताश्वेतरोपनिषद् में ऋषि ने स्पष्ट घोषणा की है कि—

वह देव सब का बनाने वाला, महान् आत्मा, सदा मनुष्यों के हृदय में रहता है। वह हृदय से, बुद्धि से, मन से प्रकाशित होता है, जो इसको जानते है, वह अमृत हो जाते हैं। (४१—७)

याद रखें परमात्मा है तो सर्व-व्यापक परन्तु उसके दर्शन केवल मनुष्य-शरीर में ही होते हैं, क्योंकि यही वह ब्रह्मपुरी है, यही वह मन्दिर है जहां भगवान् और उसका भक्त जीवात्मा इकट्ठे होते हैं। साक्षात् दर्शन के लिए और कोई स्थान नहीं, जब यह ज्ञान प्राप्त कर लिया तो अब उस भक्तवत्सल के सामने उसी की बोली में मीठे गीत गा, इसी को सन्ध्या कहते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दूसरा 'स'

दूसरा स है "स्वाध्याय" का। वेद उपनिषद् गीता, सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका तथा रामायण इत्यादि का नित्य पाठ। और इस का दूसरा भाव यह है कि प्रतिदिन अपना अध्ययन करना कि मैं किधर जा रहा हूं, क्या कर रहा हूं, और क्या बन रहा हूं। मनुष्य बन रहा हूं या राक्षस; प्रभु-मार्ग का यात्री हूं अथवा नरक का यात्री। इन दोनों बातों को समक्ष रख कर अपने जीवन का कार्यक्रम बनाना चाहिए।

स्वाध्याय का तीसरा प्रयोजन है ओ३म् का जप। हमारे पूर्वजों और ऋषियों ने स्वाध्याय की बड़ी महिमा गायन की है और इसका इतना बड़ा माहात्म्य बतलाया है कि शेष सारे जप, तप, दान, यज्ञ इससे नीचे रह जाते हैं।

'शतपथ ब्राह्मण' में लिखा है कि "मनुष्य इस सारी पृथ्वी को धन से भर कर देता हुआ जिस फल को भोगता है, इससे तिगुने फल को, अथवा उस से बड़े, अथवा अक्षय फल को वह भोगता है, जो ठीक-ठीक जानता हुआ प्रतिदिन स्वाध्याय करता है। इसलिये स्वाध्याय नियम से करना चाहिये।"

(श० ब्रा० ११-३-८-३)

ऋषि ने इतना बड़ा फल स्वाध्याय का लिखा है और फिर इस ग्रन्थ में यह भी लिखा है कि—

"स्वाध्याय (वेद का पढ़ना) और प्रवचन (वेद का प्रचार) ये दोनों ऋषियों के प्यारे कर्म हैं।"

(स्वाध्यायशील पुरुष) "एकाग्र-मन हो जाता है, पराधीन नहीं होता है, दिन-प्रति-दिन अपने प्रयोजनों को साधता है, अपने आपका परम चिकित्सक बन जाता है। इन्द्रियों का संयम, सदा एकरस रहना, ज्ञान की वृद्धि, यश, और लोगों को सुधारने और निपुण करने का काम यह सब फल स्वाध्याय और प्रवचन करने वालों को मिलते हैं।"

(श० ब्रा० ११-५-७-१)

क्या संसार की कोई वस्तु रह गई है जो स्वाध्याय से न मिलती हो। यही नहीं अपितु स्वाध्याय के संबंध में योग दर्शन के साधन पाद के ४४वें सूत्र में लिखा है कि स्वाध्याय से इष्ट देवता का सम्बन्ध— मेल साक्षात् होता है, और व्यास भाष्य में इसके सम्बन्ध में यह आदेश है कि देवता, ऋषि, और सिद्ध स्वाध्यायशील के दर्शन को जाते हैं और उस के कार्य में सहायक होते हैं। परन्तु शोक, महाशोक। आज हम स्वाध्याय की ओर ध्यान ही नहीं देते। हिन्दू जाति का और भारतवर्ष का सब से बड़ा रोग यही है कि हमने अपने पवित्र तथा ऋषि-प्रणीत ग्रन्थों का पढ़ना त्याग दिया है। हमारे अधःपतन का सब से बड़ा कारण स्वाध्याय को छोड़ देना है। स्वाध्याय छोड़ देने से हम अपनी संस्कृति को भूल गये और नाना प्रकार के खोटे छोटे विचारों ने हमारे मस्तिष्क में घेरा डाल लिया। इसलिये आज प्रतिज्ञा करो कि हम नित्य स्वाध्याय किया करेंगे। इस से आप बहुत ऊंचा जीवन प्राप्त कर लेंगे स्वाध्याय में कभी भी प्रमाद नहीं करना चाहिये। शतपथ में यह भी लिखा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है—जल, सूर्य, चन्द्र पृथ्वी, वायु सब चलते हैं, यदि यह रुक जायं तो प्रलय हो जाय। इसी प्रकार स्वाध्याय करने से रुक जायं तो मनुष्य का नाश हो जाता है। यदि चाहते हो कि हमारी प्राचीन संस्कृति, सभ्यता फैले और वैदिक संस्कृति का बोल-बाला हो तो इसका सब से बड़ा साधन यह है कि (१) वेद, उपनिषद्, गीता, रामायण, सत्यार्थप्रकाश का नित स्वाध्याय किया करो (२) प्रतिदिन देखो कि हमारी जीवन-यात्रा किस ओर जा रही है? (३) ओ३म् का जाप करना अपना स्वभाव बना लो।

स्वाध्यायात् योगमासीत
योगात् स्वाध्यायमामनेत्
स्वाध्याय योगसम्पत्त्या
परमात्मा प्रकाशते ॥

तीसरा 'स'

तीसरा "स" सत्संग की ओर संकेत करता है। सत्संग एक ऐसी ज्ञान-गंगा है जहां पापी भी पार उतर जाते हैं क्योंकि सत्संग किसी पाप को रहने ही नहीं देता।

एक भक्त ऊपर बैठा था, नीचे से संगतरे बेचने वाले ने आवाज दी 'ले लो अच्छे संगतरे।' भक्त पुकार उठा, तू ठीक कहता है, अच्छे के संग से ही तरा जा सकता है, लोहा नाव के संग तर जाता है। पापी भी महात्माओं की संगति से अपने पाप धो लेते हैं, जैसे लोगों के पास आप बैठेंगे वैसे ही आप भी बनते जायंगे—

संगति से गुण ऊपजे, संगति से गुण जाय।
जल बिन्दू मुक्ता बने, जहर होत अहि खाय ॥

जल की बिन्दु तो एक ही है परन्तु सीप में गई तो मोती का रूप धारण कर लिया और सांप ने पिया तो हलाहल विष बन गया। अतएव नीच की संगति कदापि न करना। सर्वदा अच्छे, नेक और पुण्यात्मा लोगों के पास बैठना। जहां हवन-यज्ञ, प्रभु कीर्तन, समाज सुधार, देशोद्धार की बातें हों वहाँ सौ काम छोड़ कर भी पहुंच जाना। सत्संगति की महिमा गायन करते हुए कवि ने ठीक ही कहा है—

तात, स्वर्ग-अपवर्ग सुख, धरिय तुला, इक अंग।
तुले न ताही सकल मिलि, जो सुख लव सत्संग ॥

भगवद्भक्तों का संग निःसन्देह मनुष्य को कुन्दन बना देता है। यदि सत्संग में जाते जाते बहुत दिन हो गये हैं और जीवन में पवित्रता नहीं आई तो घबराइये नहीं। अत्यन्त मैले वस्त्र को बहुत बार भट्ठी पर चढ़ाना पड़ता है तभी वह निर्मल हो सकता है।

चौथा 'स'

चौथे 'स' का प्रयोजन है सेवा। पहले जो तीन स कहे हैं इनको प्रयोग में लाने से मनुष्य में लौकिक तथा अलौकिक शक्ति आने लगती है। यदि इस

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शक्ति को दुखियों की सेवा में न लगाया जाय तो कुछ अभिमान तथा अहंकार का रोग उत्पन्न हो जाता है और जब अभिमान आ जाय तो समझो कि सारा किया कराया निष्फल हो गया। जैसे वृद्धावस्था रूप का, आशा धैर्य का, मृत्यु प्राणों का, क्रोध प्रेम का हरण कर लेता है, इसी प्रकार अभिमान सर्व गुणों तथा वलिदानों को हर लेता है। इस अभिमान से मन को बचाये रहने और नम्रता, माधुर्य तथा आनन्द को बढ़ाने के लिए सेवा एक अचूक साधन है। सन्ध्या स्वाध्याय और सत्संग से यदि हृदय विशाल नहीं हुआ तो फिर इनका क्या लाभ, और जो विशालहृदय हो गया तो वह फिर स्वयं नहीं खाता, दूसरों को खिला कर प्रसन्न होता है, और यदि विशाल हृदय बनने से एक डिगरी नीचे रहा तो उदार हृदय तो अवश्य बन जाता है और उदारहृदय वह है जो स्वयं भी खाता है और दूसरों को भी खिलाता है।

देखते नहीं हो अपने देश में भी और दूसरे देशों में भी कितना हाहाकार मचा हुआ है? कोई सुखी दिखलाई देता है? किसी का हृदय टटोलकर देखो, सब दुख के सागर में बहे चले जा रहे हैं, कितना चीत्कार है! भूख ने, प्यास ने, कष्टों ने, चिन्ताओं ने, मूर्खता, अज्ञान, लोभ, व्यभिचार, अनाचार ने कितनी आग भड़का रखी है! इसको शान्त करने के लिए तन-मन-धन से यत्न करो। यदि पल्ले कुछ भी नहीं तो दो मीठे वचन बोल कर ही किसी दुखिया को सन्तोष दे दो। जब आप किसी प्यासे को पानी, भूखे को भोजन देते हैं तो क्या आप के मन में प्रसन्नता नहीं होती, और जब संसार के दुखियों के दुख को देखते हैं तो क्या मन में करुणा का संचार नहीं होता? अतएव सेवा का कोई अवसर हाथ से नहीं जाने दो। मुझे आर्यसमाज का यह कार्य बहुत भला प्रतीत होता है कि उसने ईश्वरभक्ति के साथ दुखियों, पीड़ितों की सहायता, विधवाओं, अनाथों की रक्षा और अज्ञानियों को ज्ञान देने का कार्य जारी किया और उसको इस कार्य में संलग्न देख कर दूसरों ने भी उसका अनुसरण किया। इस समय देश को ऐसे सेवकों की आवश्यकता है जो अन्न, दूध, घी, वस्त्र इत्यादि की कमी को पूरा करें। गौओं की वृद्धि और रक्षा के विना यह उद्देश्य पूर्ण नहीं हो सकता। हर प्रान्त, हर जिले में आदर्श गोशालायें पंचायती ढंग से स्थापित करो, जहां से जनता को शुद्ध दूध, घी सस्ता मिल सके और कृषि के लिए अच्छे बैल मिल सकें। अब देश में लोकतंत्रीय राज्य है, हमारी अपनी सरकार है, वह तो इस सेवा में लगी ही है, परन्तु जब तक जनता स्वयं देश की त्रुटियों को पूरा नहीं करती, अकेली सरकार भी सफल नहीं हो सकती। अतएव सब मिल कर गोवृद्धि के यत्न में तत्पर हो जाओ। इस समय जो सज्जन इस सेवा को करेंगे, वह अक्षय पुण्य के भागी होंगे। दूसरी बड़ी सेवा यह है कि अपठित लोगों को हिन्दी पढ़ाओ, दिन को, रात्रि को, प्रातः सायं जब भी समय मिले, ग्राम-ग्राम में जाकर हिन्दी का प्रचार करो ताकि अगले कुम्भ पर भारत देश में कोई बाल वृद्ध युवा युवती ऐसा न हो जो हिन्दी पढ़ लिख न सके। इसी प्रकार घर से बेघर हुई पीड़ित जनता की हर प्रकार से सेवा करो। पीड़ितों को भी चाहिये कि वह निराशा छोड़ कर राष्ट्र निर्माण में सहायता दें। एक और अत्यन्त आवश्यक सेवा यह है कि देशवासियों को

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शराब, भंग, तम्बाकू इत्यादि नाश करने वाले नशों से बचाया जाय ताकि बुद्धि की रक्षा हो सके और धन बच सके।

जनता में यह भाव भी पैदा करना चाहिये कि हाथ से काम करने का स्वभाव हो जाय, कोई-न-कोई हुनर सीख कर देश का धन बढ़ाना चाहिये।

आज देश में चरित्र निर्माण के कार्य की भारी जरूरत है। सरकार तो भवन निर्माण में लगी है, आप चरित्र निर्माण में जुट जायें, यह बड़ी भारी सेवा है, एक बात न भूलना कि चरित्र निर्माण अध्यात्मवाद के बिना नहीं हो सकता, भौतिक उन्नति के साथ आत्मिक उन्नति का भी कार्य होना चाहिये। परन्तु अध्यात्मवाद के नाम पर और इस की आड़ में कितने ही संगठन बन रहे हैं। उनसे बचकर परमात्मा तथा आत्मा का वास्तविक ज्ञान, प्रभु की अनन्य भक्ति और आत्मनिरीक्षण का मार्ग अपना कर और दूसरों को प्रेरणा देकर आप बड़ी ऊंची सेवा करेंगे।

अब आप समझे, मैंने जो चार 'स' कहे थे उनका कितना बड़ा महत्त्व है, और क्या यही प्रसाद सर्वोत्तम नहीं है?

यह कह कर महात्मा मौन हो गये और श्रोतागण एक साथ पुकार उठे—सर्वोत्तम, सर्वोत्तम।

तो भय्या, मैंने तो यही प्रसाद कुम्भ के मेले से ले जाने का निश्चय कर लिया है।

निस्सन्देह, यदि ऐसा प्रसाद यह लाखों लोग, जो कुम्भ पर पधारे हैं, साथ ले जायं, तो फिर भंवर में पड़ी देश और संसार की नैया शीघ्र पार पहुंच जाय।

एक नया पोस्टर

जनवरी-फरवरी के जन-ज्ञान के मुखपृष्ठ पर जो चित्र छपा है, उसका ५१ × ७६ सेंटीमीटर साइज का तिरंगा पोस्टर हमने तैयार कराया है।

एक पोस्टर 'हम हिन्दू हैं' पहले भी तैयार है। पोस्टरों का मूल्य ८०) सैकड़ा है पर प्रचार के लिए १,०००पोस्टर-पुस्तकें मंगाने पर ४००) हजार दे रहे हैं।

अपने नगर में एक हजार पोस्टर लगवाइए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारत में विदेशी मुस्लिम षड्यंत्र

—कैप्टन देवरत्न आर्य

राजनीतिक दृष्टि से भारत के ईसाईकरण और इस्लामीकरण करने में विदेशी षड्यन्त्र क्रियारत हैं, और इस षड्यन्त्र को सफल बनाने के लिए अपार धनराशि विदेशों से आ रही है। भारत के ईसाईकरण की दिशा में विदेशी ईसाई मिशनों ने अब तक क्या किया है, अथवा उन्हें अब तक कितनी सफलता प्राप्त हुई है, इससे समूचा देश परिचित है। परन्तु विदेशी ईसाई षड्यन्त्र की सफलता से प्रभावित होकर एशिया के मुस्लिम अरब देशों द्वारा जो षड्यन्त्र भारत में चलाया गया है उससे देश की जनता सर्वथा अपरिचित है।

पान-इस्लामिक संघ

सन् १९७३ में मध्य एशिया के अरब देशों ने मिलकर 'पान' इस्लामिक संघ' नामक संस्था की स्थापना की और मरक्को से लगाकर इण्डोनेशिया तक समूचे देशों का इस्लामीकरण करना इसका लक्ष्य निर्धारित किया गया। इस लक्ष्य की पूर्ति के निमित्त पहली बैठक में ४००० करोड़ रुपया जमा किया गया। मलेशिया के भू० पू० प्रधानमंत्री श्री तुन्कु अब्दुल रहमान ने अपना मंत्री पद छोड़कर इसका महामंत्री बनना स्वीकार किया। तब से ही इस संगठन द्वारा भारत, बर्मा, थाईलैण्ड, फिलीपीन्स आदि देशों में योजनाबद्ध रूप में गुप्त रूप से कार्य हो रहा है। बर्मा, थाईलैण्ड। फिलीपीन्स आदि देशों में जहां अल्पसंख्यक मुसलमानों द्वारा अपने लिए अलग 'होमलैंड' की मांग की जा रही है, उनके पीछे भी इसी संगठन का हाथ है।

इसी संगठन की एक शाखा लन्दन, पेरिस आदि नगरों में 'इस्लामिक कल्चरल सेन्टर' के नाम से खोली गई, जो इस लक्ष्य की पूर्ति की दिशा में सक्रिय है। कुछ समय पूर्व लन्दन स्थित इस्लामिक सेन्टर ने एक मुस्लिम कान्फ्रेन्स का आयोजन अपने यहां किया था जिसमें २७ मुस्लिम देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

कान्फ्रेन्स में जो निर्णय लिया गया उसका आशय समाचारपत्रों में प्रकाशित हुआ जो इस प्रकार था कि उक्त सेन्टर संसार में इस्लाम धर्म के प्रचार की दिशा में उन देशों के मुसलमानों की सहायता करेगा जो वहां अल्पसंख्यक हैं और अपने लिए 'होमलैण्ड' की मांग कर रहे हैं, और कश्मीर में मुसलमानों को आत्मनिर्णय का अधिकार दिलाने का प्रयत्न करेगा।

इस्लामिक कल्चरल सैन्टर, लन्दन की भारत में नई गतिविधियों का भण्डाफोड़ कुवैत देश से प्रकाशित १९ जनवरी के 'अरब टाइम्स' के इस समाचार से हुआ कि कुवैत सरकार ने इस्लामिक सैन्टर द्वारा भारत में इस्लामीकरण कार्य की सहायतार्थ ५०,००० पौण्ड अर्थात् नौ लाख रुपया दिया है और पचास परिवारों को मुसलमान बनाकर उन्हें स्वावलम्बी बनाने के लिए कृषि योजना में बसा दिया गया है।

इस्लामिक सैन्टर लन्दन में डाइरेक्टर मुहम्मद अब्दुल खैर बदावी ने भारत का अध्ययन कर सैन्टर को अपनी रिपोर्ट देते हुए कहा है कि वर्तमान समय भारत के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हरिजनों को मुसलमान बनाकर यहां मुसलमानों की संख्या तुरन्त २० करोड़ बनायी जा सकती है। श्री बदावी का कहना है कि धर्मपरिवर्तन के लिए ऐसा सुनहरा अवसर फिर कभी हाथ नहीं आयेगा, इसलिए सैन्टर को उक्त कार्य के लिए तुरन्त उर्दू बोलने वाले अरब व्यक्तियों को भारत भेजना चाहिए, जो गुप्त रूप से इस कार्य को ऐसे ढंग से करें ताकि वहां लोगों को पता न लग सके। मुहम्मद बदावी के सुझावानुसार लन्दन सैन्टर ने तबलीग का कार्य गुप्त रूप से प्रारम्भ कर दिया। इनके कार्य का पता तब चला जबकि तमिलनाडु के मीनाक्षीपुरम् (तिनकाशी) में समस्त हरिजनों को मुसलमान बनाने का समाचार प्रकाशित हुआ। समाचार पाते ही आर्यसमाज की शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रतिनिधि-मण्डल वहां जांच के लिए सभा प्रधान रामगोपाल शालवाले की अध्यक्षता में पहुंचा। इस प्रतिनिधि मण्डल में सभा मंत्री ओम्प्रकाश त्यागी, हैदराबाद के प्रसिद्ध नेता श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम्, पंजाब के हरिजन नेता पृथ्वीसिंह आजाद, हैदराबाद के भू० पू० मेयर श्री किशनलाल और मद्रास के आर्य नेता श्री टी. नारायणन् मुख्य रूप से थे। प्रतिनिधि मण्डल को ज्ञात हुआ कि विदेशी धन के बल पर उन्हें लोभ-लालच के द्वारा मुसलमान बनाया गया है और धर्म परिवर्तन के समय चारों तरफ के सात हजार मुसलमान जमा हुए और बड़ी भारी दावत हुई। धर्मपरिवर्तन के समय अरब देश के प्रतिनिधि भी थे। बाद के समाचारों से ज्ञात हुआ है कि कई वर्षों से धर्म परिवर्तन का कार्य गुप्त रूप से चालू है, और मदुरै के समीप रामनाथपुरम जिले में अब तक हजारों हरिजनों को मुसलमान बनाया जा चुका है।

इण्डिया एब्राड—न्यूयार्क से प्रकाशित 'इण्डिया एब्राड' नामक पत्रिका के २२ फरवरी के अंक में प्रकाशित समाचारानुसार देवबन्द (सहारनपुर) स्थित दारूल उलूम के शताब्दी समारोह में अरब देश के प्रतिनिधियों ने भाग लिया और सऊदी अरब के प्रतिनिधि श्री शेख अब्दुल्लाह अब्दुल अलतुन्की ने संस्था को २२,६०० पौण्ड दान के रूप में देने की घोषणा की। इराक के प्रतिनिधि ने भारी मात्रा में दान देने की घोषणा की।

वैदिकधर्मियों से अपील

पहले भी विधर्मी आक्रमणकारियों ने आपके अस्तित्व को मिटाने की चेष्टा की परन्तु आपने उनके समस्त प्रयत्नों को असफल कर दिया। आज पुनः विदेशी शत्रुओं ने आपके अस्तित्व को चुनौती दी है। इस बार विदेशियों का आक्रमण पहिले की अपेक्षा अधिक खतरनाक है। पहिले तलवार का संघर्ष था, परन्तु अब धार्मिक और सांस्कृतिक संघर्ष है। इस संघर्ष में भी यदि धार्मिक सिद्धांतों की लड़ाई होती तो देखते-देखते शत्रु को धराशायी कर दिया जाता, परन्तु आज शत्रु आपके सामाजिक तथा आर्थिक दृष्टि से पिछड़े वर्ग का विदेशी अपार धनराशि के बल पर लोभ-लालच के द्वारा धर्म-परिवर्तन कर रहा है। हमारी छूत-छात जात-पात आदि सामाजिक कुरीतियां तथा निर्धनता ही प्रमुख रूप से हमारी मौत सिद्ध हो रही है। इसलिए अपनी सामाजिक कुरीतियों को दूर कर संघर्ष में उतर पड़ो, भारत में शक, हूण, मंगोल, तातार आदि लोग किसी दिन आपको मिटाने आये थे, परन्तु आपने उन सब को हजम कर उनका अस्तित्व ही मिटा दिया। उसी हाजमा शक्ति को पुनः जगाना होगा और 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का उद्घोष लगाकर स्वामी श्रद्धानन्द की भांति शुद्धि का बिगुल बजाना होगा। यदि आपने ऐसा किया तो समूचा भारत वैदिक धर्म के झण्डे के नीचे खड़ा होकर वैदिक धर्म की जय बोलेगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आपका स्वास्थ्य

टांसिल का इलाज

स्वरूप कथन

तालू की जड़ में गले में दोनों और दो ग्रन्थियाँ हैं। हैं तो हर नर व नारी के, पर सामान्यत: दीखतीं नहीं। जब ये फूलती हैं सूजन आती है तभी इनके होने का भान भी होता है। इसके भी कोई सूक्ष्म भेद हैं—ग्रन्थितन्तु में सूजन, कभी-कभी चारों ओर सूजन, आगे बढ़कर फोड़ा-सा बन जाना।

डाक्टर का विचार है १२ वर्ष तक की आयु में अधिकतर रहता है। पर मैंने प्रौढ़ावस्था में भी देखा है। गले में दर्द, बुखार लेकर आरम्भ होता है। बुखार भी १०३° से १०५° तक होता है। वेदना कान तक बढ़ जाती है। खाना कठिन हो जाता है। दोनों ग्रंथियां गल द्वार का अवरोध कर सकती, कर रही होती हैं कि भीतर कुछ न जाए। जीभ मैली व दुर्गन्धमय, श्वास, पेट की सड़ांद के सबूत देते हैं।

मूल कारण—आंतों में भयंकर मल का जमाव। आमाशय (स्टमक) पर दुष्पाच्य आहार का बोझा, विकृत रक्त, विजातीय द्रव्य से लदा शरीर।

निमित्त कारण—ठण्ड लगना, ठण्डी बर्फ वाली चीजें खाना।

सफल प्राकृतिक यौगिक उपचार—इसमें थोड़ा बदलकर चलना होगा। नेति वमन करने की दशा नहीं है क्योंकि पानी जाना भी कठिन, निकलना भी कठिन पर यदि भयंकर दशा न हो तो अवश्य करवा दें। स्टमक में पड़ा सड़ रहा विकार निकलते ही तनाव कम हो जायेगा। न कर सकने की दशा में पहले पेड़ू का ही उपचार आरम्भ करें। त्रिफले का एनिमा कर पेट को धो दें। गले पर भाप, हल्की मिट्टी पट्टी। कुछ देर बाद गरम-ठण्डा सेक १५-२० मिनट तक। भीतर लेने लायक स्थिति हो तो त्रिफला का पानी पिलाएं। सर्वोत्तम उपाय होगा अधिकाधिक घण्टे उपवास। पर प्राय: बच्चे इस रोग के रोगी होते हैं वे कितना मानते हैं। देना हो तो पपीता पका निचोड़ रस बनाकर दें, सब्जियों को उबाल मसल निचोड़ सूप थोड़ा गरम गरम। गले पर शहतूत के एरन्ड के पत्ते लगा गरम कर बांधें ऊपर से रुई से सेकें। त्रिफला या नीम उबाल गरारे करायें। आकाश बेल (अमरबेल लूत) कूट तेल मिला गरम कर बांधें। गरारे भी उसके पानी के करायें। इनमें से किसी चीज को उबाल मुंह खोलकर भाप लें। बाहर लेना सहज है पर गले के भीतर भाप का प्रकार होगा लोटे में उबलता पानी हो, भाप निकल रही हो, लोटे के मुंह पर चिलम रख दें या बोतल में डालने वाली पीक रखें, चादर ऊपर ले मुंह खोल भीतर भाप लगने दें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सुहागा फुला मधु मिला टांसिल पर मलें। ज्यों ही भयंकर दशा पार कर जायें तब साधारण स्थिति के लिए निम्न चूर्ण बना गले में टाँसिल को मलें, मुंह खुला रख नीचे लार बहाते चलें।

चूर्ण—अंगीठी की जली हुई मिट्टी पीस छानकर उसमें थोड़ा नमक मिला ज़रा सी सौंठ या काली मिर्च मिला रखें। हथेली पर रख थोड़ा अंगुली के अग्रभाग से टांसिल को मलें। चाहें नीबू रस की कुछ बूंदें मिला लें।

नमक, हल्दी, वायविडंग ६-६ ग्राम ले उबालकर कुल्ले करना।

सुपथ्य—पके पपीते का रस, अथवा कच्चा पपीता कस पकाकर रस, पत्ती-दार सब्जियां उबाल रस थोड़ा गरम गरम। चने का उबला पानी। भीगी मुनक्का, अंजीर, खुरमानी। मुनक्का, गुलाब जल की चटनी। चोकर मुनक्का की लप्सी।

पथ्य—मसूर का पानी, उबली सब्जियां, (केला, चीकू, अंगूर, शरीफा) छोड़ अन्य मौसम के फल। आगे चलकर रोटी सब्जी। रोटी चूर कर खाना।

अपथ्य—दूध, दही, डबल रोटी, चाय, दालें, मिठाइयां, विस्कुट आदि।

मेरी पथ्य अपथ्य की बात को इन वाक्यों से समझें

मैंने अपनी टांसिल वाली पुस्तक में लिखा—**सभ्य परिवारो का रोग टांसिल**—जिन परिवारों में अंग्रेजी ढंग के नाश्ते चलते हैं डबल रोटी, बिस्कुट, अंडा, मिठाइयां, मक्खन आदि अधिकार से अधिक मेदे में दुष्पाच्य आहार पहुंचाया जाता है।

दूसरी बात है—जब मैं बच्चों के इलाज के समय बातें करता हूं तो उनसे कहता हूं। दो प्रकार की दुकानें हैं १. ईश्वर की दुकान २. मनुष्य की दुकान। ईश्वर की दुकान में फल-सब्जियां हैं, जिन्हें भगवान ने बनाया। मनुष्य मिठाइयां चाट पकोड़ियां बनाता है, पक्वान्न बनाता है। आज से भगवान की दुकान से सम्बन्ध जोड़ो। इन्सान की दुकान से संबंध तोड़ो।

गलत उपचार व होने वाली हानियां—टांसिल का आप्रेशन कराना बहुत बड़ी भूल है। टांसिल अपने आप में रोग नहीं है वह तो पेट व मेदे की संड़ाद का उभार है। उसे न समझ पीड़ा पर काबू न पा ईश निर्मित अंग काट बाहर फेंकना नास्तिकता ही है। आप्रेशन हो जाने पर तेजी से न्यूमोनिया होने लगता है। टांसिल की उपमा कोठी के गेट पर खड़े हुए सिपाही या चौकीदार की है। सिपाही या चौकीदार को मार देना कोठी का द्वार चोर डाकू जैसे असामाजिक तत्व का भीतर प्रवेश होने देने की छूट देना है। टांसिल पहरेदार थे। मुंह और नाक के रास्ते आने वाले जीवाणुओं को रोकने के लिए। टांसिल के चारों ओर जो श्लैष्मिक आवरण रहता है, उसमें विभिन्न रोग जीवाणु अटक जाते हैं। इस यन्त्र के भीतर जो असंख्य श्वेत कणिकायें रहती हैं वे जीवाणुओं को ध्वंस कर देती हैं। इन दोनों को काटकर फेंक देने से जो प्रहरी सिपाही प्रकृति ने द्वार पर बैठा रखा था उसे विदा कर दिया जाता है। अब बाहर के जीवाणु अबाध गति से भीतर प्रवेश करते रहेंगे। यह है टांसिल का आप्रेशन। जिस सर्जरी की तरक्की का गुण गाते सरकार, समाज

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

व चिकित्सक थकते ही नहीं। केवल अकेले मेरठ नगर में मेरे द्वारा अनेक व्यक्ति ठीक हुए जो आप्रेशन के लिए जा रहे थे। स्थानीय डाक्टरों का एक स्वर से ही कहना था एक सप्ताह के भीतर आप्रेशन हो जाना चाहिये अन्यथा कैंसर हो जाने की आशंका है। मित्रों ने सलाह दे मेरी चिकित्सा कराने भेजा, परिणामतः आज बारह व सोलह वर्ष से तो उन्हें जीवित देख रहा हूं। यह कष्ट भी गया और वह कैंसर का डर भी समाप्त।

आयुर्वेद में एक स्थान पर स्पष्ट लिखा है जो रोग औषधि द्वारा ठीक नहीं हो पाते उन्हीं पर शल्य क्रिया होनी चाहिये। आज यह देखा व सोचा ही नहीं जाता। यह औषधि साध्य है या नहीं, अन्धाधुन्ध आप्रेशन किए जा रहे हैं। यह सर्जरी का एक महान अभिशाप ही है।

वनस्पतीनां स्वरस प्रयोगैः, सिद्धैः रसैश्चापि चिरं प्रयुक्तैः।
प्रयान्ति शांति न रुजस्तदैव, शल्यक्रियातत्र बुधैर्विधेया ॥

अर्थात् वनस्पतियों के प्रयोग से अन्य रसों के चिरकाल तक सेवन करने पर भी रोग जब ठीक नहीं होता तभी शल्यक्रिया आप्रेशन करना चाहिए।

राष्ट्रविरोधी कार्यों में संलग्न

विदेशी पादरियो भारत छोड़ो

सत्यज्ञान का सूर्य उगा है
उदय हुआ है स्वर्ण विहान,
रह न सकेगा आर्य देश में
ईसाई मत का अज्ञान॥

हिन्दू जागो ! देश बचाओ !!

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—डा० राजेश्वर

प्रश्न हिन्दुओं के अस्तित्व की रक्षा का है

अभी हिन्दुस्थान में हिन्दुओं की जो बिखरी सामाजिक स्थिति है, राजनीति में जो तुष्टीकरण की नीति है एवं तथाकथित अल्पसंख्यकों की जो दुरभिसन्धियां हैं, उन्हें देखते हुए ऐसा लगता है कि हिन्दू राष्ट्र का भविष्य अंधकारमय है, संकटों से घिरा है। हिन्दू जाति को हिन्दू संस्कृति को, तथा इस देश को दुहरे आक्रमण का सामना है। एक ओर तो तथाकथित अल्पसंख्यक अनुकूल स्थिति का लाभ उठाकर जनबल, धनबल तथा शस्त्रबल की वृद्धि में सामूहिक रूप से तत्पर हैं, दूसरी ओर देश के राजनीतिक दल तथा हिन्दू प्रतीत होने वाले इसके नेता, जिनकी चेतना का लगाव देश, जाति तथा संस्कृति से न होकर सीधे स्वार्थ से है, इस हिन्दू राष्ट्र को सही दिशा का ज्ञान तक नहीं होने देते।

जब इतिहास पर ध्यान जाता है, रोंगटे खड़े हो जाते हैं। जब भविष्य पर दृष्टिपात करता हूं, सघन अंधकार के सिवा कुछ दिखलाई नहीं देता। विश्वविख्यात कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर के अनुसार बंगाल हिन्दू बहुल प्रान्त था। मुसलमानों ने तरह-तरह से जनबल में वृद्धि की, पर हिन्दू सोए रहे—इस मद में कि हम तो बहुसंख्यक हैं। विभाजन के समय तक लाहौर स्पष्टतः हिन्दूबहुल नगर था, फिर भी वह पाकिस्तान में चला गया। शायद आप भूल चुके होंगे, अतः याद कर लीजिए। विभाजन काल में मुसलमानों की गृद्धदृष्टि कलकत्ता पर भी थी। **हजारों हजार वर्षों के इस देश के इतिहास में देश का विभाजन हिन्दू तेजस्विता की सबसे बड़ी हार है।** पिछले हजार वर्षों तक कटते-मरते भी हमने देश के किसी भाग का नाम न बदलने दिया था, संस्कृति न बदलने दी थी। पर इस बार हम सोए रहे—अफीम की गोलियां खाकर, जिसका पहला परिणाम हुआ देश का विभाजन, जो अब तक कभी न हुआ था। दूसरा परिणाम हमारा क्रूर नरसंहार, जिसका विश्व इतिहास में दूसरा उदाहरण नहीं। तीसरा परिणाम हुआ हमारी मां-बहनों के साथ वह पैशाचिक अत्याचार जिसे देख सुनकर पृथ्वी पर की जंगली से जंगली सभ्यता भी लज्जित हो सकती है। सच पूछिए तो यह सब हमारी तुष्टीकरण की नीति के कारण हुआ।

ऐसी बात भी नहीं कि विभाजनकाल से पूर्व हमारे समाज में इस दुःखद भविष्य से परिचित कोई दूरदर्शी व्यक्ति था ही नहीं। भाई परमानन्द तथा स्वातन्त्र्यवीर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सावरकर ने हिन्दू ससाज को इस सम्बन्ध में अनेक चेतावनियां दी थीं। काले पानी की सजा से लौटने के बाद भाई परमानन्द ने कहा था—"मैं व्यक्तिगत रूप से गांधी जी का कृतज्ञ हूं, क्योंकि उन्होंने मेरे परिवार के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित की थी, जब मैं अंडमान में था। मैं यह भी स्वीकार करता हूं कि कांग्रेस सशक्त संस्था है। किन्तु मुझ में हिन्दू रक्षा के प्रति विशेष आदर का भाव है। राष्ट्र का स्थान व्यक्तियों एवं संस्थाओं से ऊंचा होता है। अतः मैं हिन्दुओं को चेतावनी देता हूं कि यदि वे चाहते हैं कि हिन्दू राष्ट्र जीवित रहे तो उन्हें गांधी जी द्वारा बतलाये मार्ग का परित्याग कर देना चाहिए, अन्यथा उनका अस्तित्व ही खतरे में है।"

(Personally I am indebted to Gandhiji because he sytmpathised with my family while I was in the Andawans. Again I admil that the Congrcss is a powerful organisation. But I have greater regord to the Hindu Nation. A nation has higher place than individuals and groups. I, there fore, warn the Hindus that if they want to see their nation living they should shun the way shown by Gandhiji, otherwise their exitsence is in jepardy.)

ऐसी और भी अनेक चेतावनियां उन्होंने इतने ही स्पष्ट शब्दों में दी थीं, किन्तु हिन्दू समाज में चेतना नहीं आयी तथा उसे भयंकर परिणाम भुगतने पड़े। यह सचमुच आश्चर्य की बात लगती है कि इस समाज ने ऐसे लोगों की चेतावनियों पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया, जो इसके सच्चे हितैषी थे, किन्तु इसने ऐसे लोगों की पूजा की, जिनसे इसकी अपार क्षति हुई तथा जिनकी अदूरदर्शी नीतियों के कारण इसका अस्तित्व ही संकटों से घिर गया है।

जब मैं ये बातें करता हूं, मुझे उन मित्रों की बातें याद आ जाती हैं, जो कहते हैं कि ये सब साम्प्रदायिकता की बातें हैं। वे कहते हैं कि हिन्दू एवं मुसलमान दोनों ही साम्प्रदायिक हैं। वे कहते हैं कि दंगे दोनों ओर के गुंडों के कारण होते हैं। उन मित्रों की बातों की याद से कई प्रश्न चेतना को झकझोरने लगते हैं। साम्प्रदायिकता का मूल अर्थ है धार्मिक विचारों में संकीर्णता। तब क्या हिन्दू दर्शन की दृष्टि से अथवा धार्मिक विचारों की दृष्टि से संकीर्ण हैं, अनुदार हैं? इतिहास बतलाता है कि इतनी उदार जाति—इतना उदार जीवन-दर्शन—दूसरों के साथ इतना उदार व्यवहार तो पृथ्वी पर खोजने से न मिलेगा। आक्रमणकारी को सत्रह-सत्रह बार क्षमा करने का संस्कार किसी अनुदार धर्म अथवा संकीर्ण संस्कृति से प्राप्त नहीं हो सकता।

यदि सचमुच हिन्दू भी साम्प्रदायिक हैं तो हिन्दूबहुल क्षेत्रों में दंगे क्यों नहीं आरम्भ होते? हिन्दुस्तान के किसी भी छोटे-बड़े मन्दिर में अब तक बम बिस्फोट क्यों नहीं हुआ, शस्त्रों का भंडार क्यों नहीं मिला? अब तक किसी मंदिर अथवा देवालय में बम बनाने के कारखाने अथवा तोप बरामद क्यों नहीं हुई? जब दंगों में दोनों ओर के गुंडों का ही हाथ होवा है, तो क्यों मुस्लिमबहुल क्षेत्रों में ही ऐसा होता है? क्यों मुस्लिमबहुल क्षेत्रों में ही हिन्दूसमाज में भी गुंडे उत्पन्न हो जाते हैं? क्या सन् १९४६ में बंगाल तथा पंजाब-सिंध में दंगे गुंडों के ही कारण हुए थे? क्या पाकिस्तान का निर्माण गुंडों ने ही कर दिया? वस्तुतः ये सारी बातें इस्लामीकरण की प्रक्रिया के अंग हैं तथा इन्हें अनुकूल परिस्थितियां उपलब्ध हुई हैं हमारी तुष्टीकरण की नीति के कारण।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विशेष चिन्ता की बात यह है कि जिस तुष्टीकरण की नीति के कारण हिन्दू समाज की अपरिमित हानि हुई, उस तुष्टीकरण की नीति को अब सभी राजनीतिक दलों ने अपना मूलमंत्र बना लिया है।

भारतीय जनता पार्टी भी। जिसे हिन्दू जन-मानस ने पुराने जनसंघ का ही पर्याय तथा हिन्दुओं का प्रतिनिधि दल मान रखा है। बड़ी तेजी से इस मूलमंत्र की ओर लपक पड़ी है। मुरादाबाद के दंगे के सन्दर्भ में अटलबिहारी वाजपेयी का यह कहना कि सरकार ने मुरादाबाद में सेना भेजकर गलती की, वस्तुत: मुसलमानों को सन्न रखने वाली तुष्टीकरण की नीति का ही व्यावहारिक पक्ष है। जब पाकिस्तान एक ओर आधुनिकतम अस्त्र-शस्त्रों का अम्बार लगा रहा है तथा दूसरी ओर भारत सरकार को युद्ध-वर्जन संधि के लिए आमंत्रित कर रहा है, तब यहां के सामान्य लोगों को भी यह स्पष्ट हो जाता है कि वह धोखेबाजी से काम ले रहा है। किन्तु जब यहां की सत्तासीन सरकार पाकिस्तान के उस निमंत्रण को अस्वीकार कर देती है तो वाजपेयी जी कहते हैं कि सरकार ने पाकिस्तान की युद्ध-वर्जन सन्धि को अस्वीकार करके गलती की—यहां तक कि जब बंगला देश से हिन्दुस्थान में घुस आने वाले मुसलमानों का प्रश्न लेकर इन्दिरा सरकार अड़ती है, तब भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता तथाकथित बिहारी मुसलमानों की मानवता के नाम पर सिफारिश करते हैं। यहाँ यह याद रखने योग्य है कि ये बिहारी मुसलमान वे ही लोग हैं, जिन्होंने देश विभाजन के लिए पूर्वांचल के हिन्दुओं पर वहां के बंगाली मुसलमानों की अपेक्षा अत्यधिक अत्याचार किया था तथा जब बंगला देश की मुक्ति का हमारी सरकार समर्थन कर रही थी, उस समय ये बिहारी मुसलमान वहां के बंगाली मुसलमानों के विरुद्ध पाकिस्तानी सेना का साथ दे रहे थे।

ये सारी बातें गंभीर रूप से विचारणीय हैं। **प्रश्न पेट का नहीं, प्रश्न अस्तित्व रक्षा का है।** यदि हिन्दू जगा नहीं, यदि इसने इस पर विचार नहीं किया, यदि इसने अपने को संगठित नहीं किया, यदि इसने आंखें बन्द करके मुट्ठी भर राजनीतिक लोगों के हाथ में अपने भाग्य को सौंप दिया, तो शेष हिन्दुस्थान में भी वह उसी प्रकार लुट-मिट जायेगा, जिस प्रकार ढाका, नोआखाली, नारायणगंज, लाहौर, कराची आदि स्थानों में लुट-पिट गया।

हिन्दुओं को सोचना चाहिए कि क्यों सभी राजनीतिक दल कुछ मुट्ठी भर मुसलमानों को खुश करना चाहते हैं, लेकिन अस्सी प्रतिशत हिन्दुओं की चिन्ता नहीं करते। क्या अपने को हिन्दुओं के प्रतिनिधि बतलाने वाले दलों ने भी आत्मविश्वास खो दिया है ? क्या वे हमें अपना नहीं बना सकते ? क्या उनका इस हिन्दू समाज में विश्वास नहीं रह गया ? तो फिर यह समाज किस प्रकार उस नेतृवर्ग पर अपनी आस्था टिकाकर आश्वस्त रह सकता है ?

हिन्दुओं को नितान्त नए ढंग से सोचना होगा। उन्हें एक मंच पर आने के लिए भरपूर प्रयत्न करना होगा। वह मंच नवीन भी हो सकता है, और यदि विश्वसनीय मंच मिल जाए तो प्राचीन भी। किन्तु उस मंच की विशेषता यह होगी कि वह दूसरे समाज का मुखापेक्षी नहीं होगा। उस मंच को प्रेरणा लेनी होगी संकल्प से, सत्ता से नहीं। यदि वह मंच नवीन हो तो उसका निर्माण हिन्दू-जन-मानस करेगा, यदि प्राचीन हो तो उसका विन्यास हिन्दुओं का श्रम-स्वेद करेगा। ●

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वैदिक वर्णव्यवस्था का जात-पांत के साथ कोई सम्बन्ध नहीं

वैदिक धर्म और आर्यसमाज जिस वर्ण व्यवस्था के तत्त्वों का प्रचार करते हैं, उनका वर्तमान जात-पांत के साथ किसी प्रकार का कोई सम्बन्ध नहीं, क्योंकि वह जन्म पर नहीं अपितु केवल गुण कर्म स्वभाव पर आश्रित है, जिसके अन्दर सत्य, दया, क्षमाशीलता आदि उत्तम गुण पाये जाते हैं।

न कुलेन न जात्या वा, क्रियाभिः ब्राह्मणो भवेत।
चाण्डालोऽपि हि वृत्तस्थो ब्राह्मणो यज्ञपुंगव ॥

अर्थात् ब्राह्मण कुल में जन्म लेने से कोई ब्राह्मण नहीं बन जाता किन्तु ब्राह्मणोचित कर्मों से ही मनुष्य ब्राह्मण वन सकता है। जो चांडाल कुल में उत्पन्न होकर भी सदाचारी तथा धर्मात्मा हो, वह ब्राह्मण ही है। इस प्रकार वैदिक धर्म अस्पृश्यता पर कुठाराघात करता है। मांतंग ऋषि चांडाल कुल में उत्पन्न होकर भी महर्षि कहलाये। पाराशर चांडाली पुत्र होकर भी सर्वमान्य ऋषि पदवी को प्राप्त हुए। वेदव्यास मल्लाह की पुत्री सत्यवती के पुत्र होकर भी लोकमान्य ऋषि हुए। ऐसे ही वसिष्ठ मन्दपाल, आदि के सैकड़ों उदाहरण वर्ण परिवर्तन के पुराने इतिहास से महाभारत पुराणादि के अनुसार दिए जा सकते हैं।

भविष्य पुराण प्रतिसर्ग पर्व में से एक घटना का उल्लेख करना यहां अनुचित न होगा, जिसमें बताया गया है कि कण्व, कश्यपादि मुनि सरस्वती की आज्ञा से मिश्र देश (Egypt) में गए। वहां जाकर उन्होंने १० हजार म्लेच्छों को शुद्ध किया और उनमें से कुछ को शूद्र, वैश्य और क्षत्रिय वर्ण गुण, कर्मानुसार देकर एक हजार को ब्राह्मण बनाया।

जब जन्म से म्लेच्छों को भी हमारे पूर्वज ब्राह्मण बनाने को तैयार थे तो अपने ही भाइयों को उच्च से उच्च ब्राह्मण बनाने और मानने में आक्षेप ही क्या हो सकता है?

—सुनीता आर्य

'विदेशी मिशनरियो, भारत छोड़ो।'

"विदेशी मिशनरियों के सम्बन्ध में मैं और कुछ न कहकर इतना ही लिखना उचित समझता हूं कि वे कभी भारत की सेवा नहीं कर सकते और न सेवा भाव से ही यहां आए हैं। वे तो कालेजों और अस्पतलाओं द्वारा ईसाइयत का प्रचार करते हैं। इस वास्ते जितना जल्द भारत छोड़ें तो अच्छा होगा। मेरे राष्ट्र और उसकी सनातन संस्कृति को किसी दूसरे मानव के बनाए मत की कतई जरूरत नहीं।"

—महात्मा गांधी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मेरा दृष्टिकोण

—प्रो० रामसिंह

हिन्दू समाज शिकंजे में

महाभारत के पश्चात् केन्द्रीय अथवा सार्वभौम आर्य राज्य की सत्ता छिन्न-भिन्न हो गई। विश्व में अनेकों राज्य खड़े हो गये, जो सर्वथा स्वतंत्र थे। पारस्परिक सम्पर्क के साधन कम हो गये। फलस्वरूप भारत एक ऐसी इकाई बन गया, जिसके उत्तर में हिमालय और दक्षिण, पूर्व और पश्चिम में समुद्र रह गया। भारत को छोड़कर अन्य देश भी भौगोलिक आधार पर कट-छंट गये। ईसा के प्रादुर्भाव के पश्चात् पूर्वी देशों में ईसाइयत के प्रचार के लिए अनेक यत्न होने लगे। राज्याश्रय पाकर अनेक संघर्षों और युद्धों के पश्चात् यूरोप में ईसाइयत का वर्चस्व हो गया। दूसरी ओर भारत में बौद्धमत जनता को बौद्ध बनाने के प्रयास में लगा रहा। यदि महाराजा अशोक का राजकीय संरक्षण बौद्ध प्रचारकों को प्राप्त न होता, तो बौद्ध मत पूर्व और पश्चिम के देशों में इतनी द्रुतगति से न फैल पाता। दुर्भाग्य से पश्चिम में में इस्लाम का भी प्रादुर्भाव हुआ। इस्लाम आध्यात्मिक स्तर पर धर्म नहीं कहा जा सकता। इस्लाम का मौलिक सिद्धान्त भौतिक है। युद्ध से, छल बल से अपना प्रचार और प्रसार करना इसका मुख्य उद्देश्य है। इसीलिए इस्लाम के अनुयायियों ने तलवार के बल पर पूर्व में पहले बौद्धमत को नष्ट किया। राजसत्ता प्राप्त करने के बाद अरवों ने ईसायत से भी लोहा लेना आरम्भ किया और पुर्त-गाल व स्पेन तक आक्रमण करके अपने राज्य स्थापित किये।

यद्यपि इंग्लैंड के ईसाई राजाओं ने निरन्तर युद्ध करके यूरोप से इस्लाम को खदेड़ दिया तथापि पूर्व के दर्जनों देशों में इस्लामी राज्य बने रहे। अफगानिस्तान और ईरान के मुस्लिम बादशाहों ने भारत पर अनेक आक्रमण किये, लेकिन यहां के राजाओं ने प्रवल प्रतिरोध किया। यह इतिहास की एक सुपरिचित गाथा है कि भारत में लग-भग २५० वर्ष तक अधिकतर भू-भाग पर मुगलों और पठानों का राज्य बना रहा। यदि सोलहवीं शताब्दी के बाद अंग्रेजों का राज्य स्थापित न होता, तो हिन्दू राजा भी मुस्लिम शासन का अन्त कर सकते थे और उनके द्वारा जो अन्याय और बलात् धर्मान्तिरण हुआ, उसका सवल और सफल प्रतिकार कर सकते थे। लेकिन अंग्रेजी शासन के स्थापित होने पर यहां धर्मान्तरित हुए-हुए लोग मुसलमान बने रहे। उनकी कुछ रियासतें भी वनी रहीं।

विधि की विडम्बना यह है कि हिन्दू राजाओं और हिन्दू धर्माचार्यों ने अपने धर्म का प्रचार और प्रसार सर्वथा वन्द कर दिया। हालत यह हो गई है कि आज सामान्य जनता वैदिक (हिन्दू) धर्म को न जानती है और न समझती है। केवल रूढ़िगत परम्पराओं पर चलते हुए मूर्तिपूजा, देवस्थानों और पर्वों-त्यौहारों के बल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पर हिन्दुत्व जीवनशेष है। दूसरी ओर इस्लाम में आज भी संसारभर में अपना शासन स्थापित करने और सारे संसार को मुसलमान बनाने का वही तेरह सौ वर्ष पुराना जोश कायम है। तलवार से, धोखा-धड़ी से, लोभ से, लालच से—जैसे भी हो, सारे संसार को मुसलमान बनाना उनका लक्ष्य है।

अरब देश आधुनिक शिक्षा-दीक्षा प्राप्त न कर सकने के कारण पिछड़े हुए थे। उनके पास आधुनिक युद्ध सामग्री भी न थी। उनकी भूमि उर्वर न थी। जलादि साधनों का भी अभाव था। लेकिन लगभग सत्तर-अस्सी वर्ष पूर्व यूरोप की कुछ कम्पनियों ने इन खाड़ी देशों में तेल निकालना प्रारम्भ किया। इससे ईरान समेत सब अरब देश (भूमध्य सागर तक) तेल के उत्पादन से अरबपति बन गये। एक ओर जहां उन्होंने अपने-अपने देशों को समृद्धिशाली बना लिया, वहां यूरोप के देशों में, भारत, चीन और जापान नक को अपना ऋणी बना लिया। अरब देशों के इस प्रकार मालामाल होने के दो भीषण परिणाम इस समय हमारे सामने हैं। एक यह कि तेल लेने की खातिर हम किसी भी रूप में उनका विरोध नहीं कर सकते। तेल की यह कूटनीति हर अवसर पर भारत के आड़े आती है। हालत इतनी बिगड़ चुकी है कि हमारी प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी दिन-रात पाकिस्तान को कोसती रहती हैं कि उसने अमरीका से आधुनिकतम शस्त्रास्त्र लेकर भारत की रक्षा के लिए एक विकट संकट पैदा कर दिया है, लेकिन वे सऊदी अरब के विरूद्ध एक शब्द भी मुंह से निकालने में हिचकिचाती हैं—यह जानते हुए भी कि पाकिस्तान को युद्ध सामग्री (एफ-१६ विमानों समेत) का पूरा व्यय सऊदी अरब ने चुकाया है। भारत के लिए तेल की कूटनीति का दूसरा भयानक परिणाम यह हुआ कि सऊदी अरब ने अन्य मुस्लिम देशों के साथ मिलकर एक संगठन (मुस्लिम विदेश मंत्री सम्मेलन) बनाया है, जिसका उद्देश्य विश्व-भर में इस्लामी शासन स्थापित करना है। उसका मुख्य उद्देश्य इस्लामी पुनरुत्थानवाद आन्दोलन को पूरे बल से चलाना है। इसके लिए ब्रितानिया में इस्लामिक कल्चरल सैंटर स्थापित किया गया और अनेक मुस्लिम देशों में उसकी शाखायें स्थापित की गई।

पिछले वर्ष कुवैत के एक समाचारपत्र द्वारा उक्त इस्लामिक सैंटर की नीतिविधियों का विवरण प्रकाशित किया कि किस प्रकार भारत में हरिजनों और पिछड़ी जातियों को मुसलमान बनाया जाये। इस आशय का समाचार प्रकाशित होने पर, जैसा स्वभाविक था, भारत में और विशेषतः हिन्दुओं में कुछ खलबली उत्पन्न हुई। अन्वेषण के बाद पता चला कि दक्षिण में मल्लापुरम्, तिरुनेलवेली, मदुरै, रामनाथपुरम् आदि जिलों में अनेक मुस्लिम एजेंसियां वर्षो से काम कर रही हैं और लगभग ८० हजार हिन्दुओं को मुसलमान बना चुकी हैं। अभी-अभी यह भयावह समाचार मिला है कि खाड़ी के देशों के मुस्लिम देश (सऊदी अरब, कुवैत आदि) खुलकर सामने आये हैं और मजहब के बलबूते पर भारत के हरिजनों और कमजोर वर्गों के लोगों को मुसलमान बनाने पर उतारू हैं। उनकी योजना यह है कि आगामी तीन वर्षो में तीन करोड़ के लगभग हरिजनों का धर्मान्तिरण किया जाये। वे इस सम्बन्ध में सरकार की कमजोरी भी भांप चुके हैं। उन्हें पता चल गया है कि पाकिस्थान को हथियार खरीदने के लिए अरबों रुपये देने पर भी न तो प्रधानमंत्री ने और न सरकारी अधिकारियों ने अपनी जवान खोली। पता चला है कि एक ओर मंत्रि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मंडलीय सचिव, गृहसचिव और इंटैलिजेंन्स ब्रांच के निदेशक सारी स्थिति पर विचार कर रहे हैं और दूसरी ओर गृहमंत्री, गृहराज्यमंत्री और गृहमंत्रालय के अन्य अधिकारी भी स्थिति पर नजर रख रहे हैं। लेकिन सरकारी स्तर पर धर्मान्तरण की रोकथाम के लिए तत्काल कोई पग नहीं उठाया जा रहा। ऐसे मामले में सरकार की ढिलमिल नीति इस रूप में प्रकट ही रही है कि कुछ सरकारी समितियां गठित कर दी गई हैं और कुछ सरकारी बोर्डों से पूछा गया है कि वे पता लगायें कि किस देश से कितना धन इस काम के लिए भारत में आ रहा है। २. सुझाव दें कि धर्मान्तरित अर्थात् मुसलमान बनाये गये हरिजनों को वे रिआयतें मिलती रह सकती हैं या नहीं, जो उन्हें हरिजन होने के प्राप्त थीं। ३. भारत में कौन-कौन-सी मुस्लिम एजेंन्सियां इस्लामीकरण अभियान में लगी हैं।

यह लिखने की आवश्यकता नहीं कि सरकार को जानकारी देने के लिए ऐसी रिपोर्टें तैयार करने में बहुत समय लगता है। रिपोर्ट आने पर भी सरकार छानबीन करने के बाद कुछ प्रभावशाली पग उठा सकेगी अथवा नहीं, यह सन्देहास्पद है। सरकार की ओर से इस प्रकार धर्मान्तरण की रोकथाम दिया जाना असम्भव-साही प्रतीत होता है।

दूसरी ओर इस गम्भीर समस्या के प्रति हिन्दुओं की उदासीनता स्पष्टतः परिलक्षित हो रही है। पिछले वर्ष आर्यसमाज, विश्व हिन्दू परिषद्, हिन्दू महासभा आदि के कुछ कार्यकर्त्ता मीनाक्षीपुरम् गये थे। कुछ अन्य व्यक्तियों ने भी इस स्थिति पर चिन्ता प्रकट करते हुए अपने-अपने ढंग से कार्य करने की घोषणा की। पता चला है कि अनेक स्थानों पर हरिजनों को वापस हिन्दू धर्म में ले लिया गया है। धर्मान्तरण की इन घटनाओं को लेकर उत्तर भारत में कुछ मुसलमानों और ईसाइयों की शुद्धि करके उन्हें हिन्दू समाज में सम्मिलित किया गया। लेकिन हिन्दू समाज का अधिकाधिक उत्साह हिन्दू सम्नेलन करने तक ही सीमित रहा है। विश्व हिन्दू परिषद् ने पांच करोड़ रुपये की अपील की है, ताकि ताकि इस्लामीकरण की रोकथाम सुनियोजित ढंग से की जा सके। यदि आर्यसमाज, विराट् हिन्दूसमाज, हिन्दू महासभा और हिन्दू रक्षा समिति मिलकर सुचारु रूप से कार्य करें, तो इस्लामीकरण को रोका जा सकता है। इन हिन्दू संगठनों को यह योजना भी बनानी होगी कि वे अपने कार्य के केन्द्र दक्षिण में ही बनायें—विशेषतः मद्रास, बंगलूर, त्रिवेन्द्रम् और हैदराबाद में। इन स्थानों पर कार्यकर्त्ताओं के शिविर आयोजित किए जायें। इस बात का भी ध्यान रखना होगा कि यह कार्यक्रम निरन्तर अप्रत्याहत गति से चलता रहे।

थोड़ी-सी रूई

एक धनाढ्य व्यक्ति ने रूई धुनने की मशीन लगाई। वह मशीन रूई धुन सकती थी परन्तु रूई को लिहाफों में नहीं भर सकती थी। इस काम के लिये एक मजदूर को रखा गया और उसे यह बताया गया कि उसे प्रतिदिन पांच रुपये और थोड़ी-सी रूई मिलेगी। तभी उसे यह अहसास हो गया था कि इस बार उसके लिहाफ में भी कुछ रूई पड़ जायेगी।

शाम को जब उसे पांच रुपये बतौर मजदूरी दिये गए तो उसने थोड़ी-सी रूई की याद दिलायी। नियोक्ता ने उसे स्पष्ट करते हुए कहा—"हमने तुम्हें पहले ही ही बता दिया था, क्योंकि हम जानते थे कि तुम यहां काम करोगे तो काम के दौरान साँस भी लोगे और साँस के साथ थोड़ी-सी रूई भी लोगे।

—वीरसिंह शर्मा 'अशोक' (गाजियाबाद)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—शिवराजवती आर्य

'सत्यार्थ प्रकाश' का महत्त्व

सत्यार्थप्रकाश एक अद्भुत और लासानी ग्रंथ है। इस ग्रंथ में आर्ष ग्रंथों के प्रमाणों की भरमार है। आर्ष ग्रंथों के जितने प्रमाण महर्षि दयानन्द ने इस ग्रंथ में दिये हैं, उतने आचार्य कहलाने वाले किसी ने भी नहीं दिये।

आग को ऐसा सहेजा, क्रान्ति फूंकी थी निराली,
वेद की जलती ऋचा से, जिन्दगी ऐसी जला ली।
साधना आलोक की, अभिव्यक्तियों में लय हुई थी,
वेद की आशा-प्रभा से सत्य को ही जय हुई थी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सत्यार्थ प्रकाश को जो कोई स्वाध्यायशील व्यक्ति पढ़े तो उसे पता लगेगा कि ऋषि दयानन्द का कितना बड़ा अध्ययन था और कितना बड़ा ज्ञान था।

कोई व्यक्ति इसको पक्षपात रहित होकर पढ़े तो इससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। हितोपदेश में एक श्लोक है जिसका अर्थ है—'अनेक संशयों और शंकाओं का जड़ से उखाड़ देता है ऐसा शास्त्र मनुष्यों की आंख के सामन है'—जिसकी यह आंख नहीं है वह अन्धा है।

सत्यार्थ प्रकाश पर यह श्लोक पूर्ण रूप से लगता है। सत्यार्थ प्रकाश के पढ़ने से अनेकों गुप्त रहस्य खुल जाते हैं। वेदादि सत्य शास्त्रों का जो सार इस ग्रंथ में है वह कहीं नहीं है।

सत्यार्थ प्रकाश ने जीवन बदल दिये

१. मौलाना मौलवी हैदरअली बड़े आलिम फाजिल थे। वह श्री पण्डित भोजदत्त जी आर्य मुसाफिर के पास दो मास रहे और उनसे सत्यार्थ प्रकाश का १४वां समुल्लास कुरान से मिलाकर पढ़ा।

दो मास के पश्चात् अपने सन्दूक से एक बड़ा छुरा निकालकर पंडित जी की धर्म-पत्नी के चरणों में रखकर कहा कि मैं यह छुरा पंडित जी को मारने के लिए लाया था, परन्तु साथ ही मैं सच्चाई की तलाश में था। सच्ची हकीकत इस ग्रंथ के साथ न देखता तो इनको मार देता। उनके मुंह से सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर मैं हकीकत में कायल हो गया हूं। अब यह छुरा आपके कदमों में रखता हूं। अब आप मेरी मां हैं। यह मौलवी साहव शुद्ध हुए और उनका नाम पं० सत्यदेव जी रखा गया और उन्होंने कई पुस्तकें कुरान के सम्वन्ध में लिखीं।

२. मौलवी मुहम्मदअली कुरैशी अरवी के बहुत बड़े विद्वान् थे। सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर उन्होंने इस्लाम छोड़ दिया। शुद्ध होकर वह पंडित शांतिस्वरूप बने। कुरान बहुत अच्छी पढ़ते थे। फरूखावाद और हरदोई में रहे। सारे देश में प्रचार किया। शास्त्रार्थ किये। ९० वर्ष की आयु तक आर्यसमाज का कार्य किया।

३. गुजरांवाला (पंजाव) के मुस्लिम हाईस्कूल के हैडमास्टर अब्दूल गफूर सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर आर्य बने, इनका नाम धर्मपाल रखा गया। धर्मपाल जी ने 'तर्क-ए-इस्लाम' और 'नखले इस्लाम' नाम की बड़े महत्त्व की पुस्तकें लिखीं।

४. ईरानी नौजवान पठान अकवर खां वीकानेर में सब-इन्स्पैक्टर पुलिस थे। ठाकुर महावीर सिंह जी पुलिस आफिसर थे। श्री पं० भोजदत्त जी आर्य मुसाफिर के पास आये। पंडित जी ने शुद्ध करके उनका नाम ठाकुर उत्तमसिंह रख दिया। पीला यज्ञोपवीत पहन कर वह वीकानेर गये। उनकी माता उर्दू बोलना नहीं जानती थीं। जनेऊ पहन अकवर खां को बोली—'अकवर, तू काफिर हो गया। जनेऊ रखता है।' जवाव में उसका वेटा वोला—'मैं काफिर नहीं हुआ, बल्कि कुफ्र से बाहर निकला हूं।' थानेदारी छोड़ दी और आगरा में मुसाफिर अखवार के प्रबन्धक बन कर रहे।

५. सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर एक मारवाड़ी युवक जगत्बन्धु को घर छोड़कर जाना पड़ा। पिता ने कहा, सत्यार्थ प्रकाश क्यों पढ़ता है? युवक ने अमृतसर के हाल वाजार की सिलाई की मशीन की सूइयां बेचीं, फिर मशीनें बेचीं और सेठ जगत्बन्धु

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बने। आर्यसमाज लोहगढ़—अमृतसर के वर्षों तक प्रधान रहे और स्वयं अपनी कहानी सुनाया करते थे।

६. श्री रामप्रसाद बिस्मिल ने अपनी आत्मकथा में स्वयं लिखा है, मैं सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर ही इस रूप में आया हूं।

७. सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर दीन मुहम्मद स्वामी विज्ञानानन्द सरस्वती बने और ९२ वर्ष की आयु तक घोर तप और त्याग के साथ आर्यसमाज की सेवा की।

८. घोर पौराणिक पं० लीलाधर शास्त्री को ठाकुर अमरसिंह जी ने सत्यार्थ प्रकाश और ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका दो पुस्तकें दीं। उनको पढ़कर वह आर्यसमाजी बने और आर्यसमाज ग्वालियर के वर्षों तक प्रधान रहे।

बाइबल का रूपान्तर हो गया और कुरान के अर्थ बदल गये। सत्यार्थ प्रकाश को पढ़े बिना और समझे बिना कोई आर्यसमाजी सिद्धान्ती नहीं बन सकता।

सत्यार्थ प्रकाश को जिसने पढ़ लिया और समझ लिया वह ऐसा सिद्धान्ती बना है कि कभी डगमगा नहीं सकता। इसलिए हर व्यक्ति को सत्यार्थ प्रकाश को बार-बार पढ़ने तथा औरों का पढ़ाने का यत्न करना चाहिये।

केरल के ईसाई अपने को हिन्दू समझते हैं

मैं ईसाई होते हुए भी अपने को हिन्दू मानता हूं : टी जॉर्ज जोजफ

गाजियाबाद। केरल के ईसाई भारतीय संस्कृति एवं हिन्दू रीति-रिवाजों से बहुत प्रभावित हैं तथा वे एक हिन्दुस्तानी होने के नाते अपने को हिन्दू ही समझते हैं।

गाजियाबाद के जिलाधीश श्री टी. जार्ज जोजफ ने यहां से प्रकाशित साप्ताहिक हिन्ट को दी गयी अपनी एक भेंटवार्ता में उक्त विचार व्यक्त किये।

श्री जोजफ ने कहा कि मैं एक ईसाई होते हुए भी अपने को हिन्दू मानता हूं। क्योंकि प्रत्येक हिन्दूस्तानी हिन्दू है। केरल के ईसाइयों ने बहुत-सी हिन्दू नीतियों को अपना लिया है।

उन्होंने कहा कि केरल के ईसाई बहुत पुराने हैं। इतिहास बताता है कि ईसा के कुछ शिष्य ५२वीं ईसवी में केरल आये थे। उन्होंने यहाँ ईसाई धर्म का प्रचार किया। दो हजार साल पहले जब सांस्कृतिक मिश्रण का सिलसिला शुरू हुआ तो वहां हिन्दुओं और ईसाइयों की जीवन पद्धति के बीच अन्तर कम हो गया। परन्तु अन्तर्जातीय विवाह वहां भी विशेष प्रचलित नहीं हैं।

उत्तर में रहने वाले ईसाई अधिकतर ऐसे है, जो धर्म परिवर्तन द्वारा अंग्रेजी राज्य में ईसाई बने, इसलिये उनका रहन-सहन का ढंग हिन्दुओं से अलग है।

केरल का विद्यार्थी उत्तर भारतीय से भी अधिक हिन्दू या माइथलोजी के बारे में जानता है, क्योंकि वहाँ के स्कूलों में इसे पढ़ाया जाता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हमारे भी हैं मेहरबां कैसे-कैसे !

दयानन्द संस्थान की पुस्तिकाओं के विरुद्ध ब्लिट्ज़ (उर्दू संस्करण) की बौखलाहट

बम्बई के ब्लिट्ज़ (उर्दू संस्करण) ने अपने ३० जनवरी १९८२ के अंक के मध्यवर्ती पृष्ठों पर दयानन्द संस्थान की चार पुस्तिकाओं के विरुद्ध विषवमन किया है। इसका संक्षिप्त विवरण आप जन-ज्ञान के पिछले अंक में पढ़ चुके हैं। इस बार हम ब्लिट्ज़ का वह फीचर ज्यों का त्यों प्रकाशित कर रहे हैं।

अल्पसंख्यकों को लहू-लहू करने वाले साम्प्रदायिकों को ये पुस्तिकाए

—एम० कोठियावी राही

गोरखपुर। एक ओर सांदायिक मेल-जोल के लिए देश के कोने-कोने में भरपूर प्रयत्न हो रहे हैं, तो दूसरी ओर स्थान स्थान पर सांप्रदायिकता का विष फैलाया जा रहा है। आश्चय है कि सरकारी मशीनरी फासिस्टों के विरुद्ध कुछ नहीं कर पा रही है।

आजकल देश में आनन्दमार्ग और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का कारोबार जोर पकड़ रहा है। अब इन खूनी और हत्यारे दलों ने पढ़े-लिखे मासूम लोगों में ऐसे साहित्य का वितरण प्रारम्भ कर दिया है, जिसका प्रत्येक शब्द विष में बुझे हुए तीर की हैसियत रखता है। उल्लेखनीय बात तो यह है कि इस खतरनाक साहित्य के मुद्रण और प्रकाशन का काम देश की राजधानी नई दिल्ली में हो रहा है। लेकिन किसी को भी इस खतरनाक षड्यन्त्र पता नहीं या अगर पता है भी तो किसी विशेष "नीति" के कारण चुप्पी साध ली गई है।

यहां की इन्दिरा कांग्रेस के अल्पसंख्यक सैल के युवा वर्ग ने इस प्रकार के खतरनाक ओर देशव्यापी षड्यन्त्र का पता लगाया है। इस षड्यन्त्र के विषैलेपन ने यहां के अल्पसंख्यक सम्प्रदाय से सम्बन्ध रखने वालों में जबर्दस्त डर और चिन्ता पैदा कर दी है।

पिछले दिसम्बर में रातोंरात वांटी गयी इन चार खतरनाक पुस्तिकाओं के बारे में जगह-जगह बातें हो रही हैं, जो दयानन्द संस्थान, वेदमन्दिर, नई दिल्ली ने मुद्रित और प्रकाशित की हैं। इन पर प्रकाशक के नाते किसी महिला पंडिता राकेशरानी का नाम है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इन विषैली पुस्तिकाओं के नाम ये हैं—

१. हिन्दुओं को चेतावनी २. इस्लामिस्तान की तैयारियां ३. भारत के मुसलमानों का क्या किया जाये और ४. इस्लाम क्या है ?

जरा ये विषैले उद्धरण देखिये—

क्या है इस्लाम ?

आखिर इस्लाम है क्या ? क्या है उसका इतिहास ? कौन नहीं जानता कि जिस इतिहास का हर शब्द हकीकत राय जैसे हजारों बेगुनाह बच्चों के कटे हुए सिरों से चुना गया हो, जिसकी हर पंक्ति सीता और सावित्री की बेटियों के नग्न शरीरों में चुभी संगीनों पर टिकी हो, जिसका हर पृष्ठ गुरु गोविन्दसिंह के केवल चार नहीं, हजारों बेटों के खून से रंगा गया हो—वह इतिहास किसी धर्म का नहीं हो सकता—वह पाप का और शैतानियत का इतिहास है, जिसके रहते एकता की बात चलाना हवाई किले बनाने से ज्यादा कुछ नहीं है और सबसे बड़ी बिडम्बना तो यह है कि यह इतिहास जिस शिक्षा का परिणाम है—जिस किताब से मुसलमानों ने अनाचार का यह बीभत्स ताण्डव सीखा है, उस कुरान के रहते हम एकता का नाटक कर रहे हैं।

मैं पूछती हूं कि जिस किताब ने शिखा न कटाने वालों के सिर काटने की तालीम दी है, जनेऊ न तोड़ने वालों के सीने चीर देना और कलमा न पढ़ने वालों के सिर पर आरे चलाना सिखलाया हो, वह किताब आज भी दुनिया की इतनी बड़ी आबादी का धर्मग्रंथ है, समूची मानवता के लिए इससे बड़ा कलंक क्या होगा ?

जिन धर्मालयों की सीढ़ियाँ हिन्दू, जैन और बौद्ध देवी-देवताओं की मूर्तियों के सिरों को तोड़ कर बनाई गई हों, वे स्थान धर्मालय कदापि नहीं हो सकते। जिन भवनों का हर पत्थर घृणा, द्वेष और अत्याचार की कहानी कहता हो, वे सिर्फ शस्त्रागार ही हो सकते हैं।

राष्ट्रीयता का सवाल

यहाँ एक अहम सवाल है कि क्या भारत में रहनेवाला कोई मुसलमान राष्ट्रीय हो सकता है ? अपवाद को छोड़कर देखा जाय, तो इसका जवाब होगा कि मुसलमान राष्ट्रवादी नहीं हो सकता, और अगर राष्ट्रवादी है तो वह मजहबी मुसलमान नहीं है ।

कोई मुसलमान यह मानने को तैयार नहीं कि वह इसी मिट्टी की संतान है—यही धरती उसकी मातृभूमि है। यह दूसरी बात है कि हजारों में एकाध मुसलमान भी मुश्किल से मिलेगा, जिसके पूर्वज अरब से आए थे।

पिछले दिनों मुरादाबाद के साम्प्रदायिक दंगों के दौरान और फिर हाल ही में हैदराबाद में हुए इस्लामी सम्मेलन के दौरान लगे नारे, हँस के लिया था पाकिस्तान, लड़ के लेंगे हिन्दुस्तान, क्या इस बात के जीते-जागते प्रमाण नहीं हैं कि कल का लुटेरा आज भी नहीं बदला है। मुसलमान की इसी मनोवृत्ति ने भारत माता के टुकड़े करवाये हैं और जब तक आक्रामकता का जहर उसके दिलो-दिमाग से नहीं निकल जाएगा, कश्मीर, अलीगढ़, मुरादाबाद और हैदराबाद को लाहौर या ढाका

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

बनने से नहीं रोका जा सकता। जहाँ थोड़ा सा भी वस चलता है, इस्लाम के ये बन्दे धरती के उस हिस्से पर अपनी बपौती जताने लगते हैं।

पंडिता राकेशरानी का इस प्रकार का विषवमन उनकी इन चार पुस्तिकाओं में बन्द है और ये पुस्तिकाएं रहस्यमय ढंग से गोरखपुर के नागरिकों (बहुसंख्यक वर्ग) में मुफ्त बंटवाई गई हैं। ब्लिट्ज़ ने अपने सूत्रों से ये पुस्तिकाएं प्राप्त कीं और जिला मजिस्ट्रेट श्री बृजमहोन बोहरा से तुरन्त सम्पर्क स्थापित किया। श्री बोहरा ने जहां एक ओर यह कहा कि उन्हें इस बात की जानकारी नहीं, वहां दूसरी ओर इस पर अपनी चिन्ता भी प्रकट की। उन्होंने ब्लिट्ज़ को बताया कि हम अपनी ओर से भी इस षड्यन्त्र का पता लगायेंगे।" उन्होंने साम्प्रदायिक एकता छिन्न-भिन्न करने का नापाक इरादा रखने वालों का पता लगाने में पत्रकारों का सहयोग भी मांगा है और इन नाम मात्र की पुस्तिकाओं को कोई महत्त्व न देने की अपील भी की है। शहर और जिले की कानून-व्यवस्था अक्षुण्ण रखने के लिए सी० आई० डी० और पुलिस को समय रहते चौकन्ना हो जाने के आदेश भी जारी कर दिये हैं। लेकिन ये पंक्तियां लिखे जाने तक समाज के शत्रु इन तत्त्वों का पता नहीं लग सका है, जिनकी सहायता से पुस्तिकाएं यहां पहुंची और रातोंरात मुफ्त बंटवाई गई। नगर युवा (इन्दिरा) कांग्रेस के अल्पसंख्यक सैल के अध्यक्ष ख्वाजा वजीहद्दीन ने दावा किया है कि ये विषैली पुस्तिकाएं सबसे पहले उन्होंने अपने साथियों की सहायता से प्राप्त कीं। इन लोगों ने उत्तरप्रदेश की गृहमन्त्री रानी स्वरूपकुमारी बख्शी को भी इस बात की सूचना दी और मांग की कि तुरन्त जांच कराकर अपराधियों को शीघ्रतिशीघ्र गिरफ्तार करा जाये, जिन्होंने न केवल गोरखपुर अपितु सारे देश के मुसलमानों की मजहबी भावनाओं को ठेस पहुंचाई है और कलाम पाक का अपमान किया है।

ख्वाजा वजीहद्दीन ने ब्लिट्ज़ को बताया कि यह एक संगठित षड्यन्त्र है, जिससे देश में जबर्दस्त साम्प्रदायिक दंगे फूट पड़ने की आशंका है। वे इस सिलसिले में शीघ्र ही एक शिष्टमण्डल के साथ मुख्यमन्त्री विश्वनाथ प्रतापसिंह, केन्द्रीय गृहमन्त्री ज्ञानी जैलसिंह और प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी से मुलाकात करेंगे।

डा० फकीरचन्द के विवाह की हीरक जयन्ती

डा० फकीरचन्द सूद और उनकी धर्म पत्नी श्रीमती प्रतिमादेवी सूद ने २४ दिसम्बर १९८१ को ऐलोरा रेस्तारां में भोज और धन्यवाद समारोह का आयोजन करके अपने विवाह की हीरक जयन्ती मनाई। उनका विवाह भारत में २५ दिसम्बर को हुआ था। दस वर्ष पूर्व कालगरी आने से पहले उन्होंने ४६ वर्ष तक केन्या में चिकित्सा कार्य किया। उक्त समारोह में उनके सब पुत्रों, पौत्रों, लगभग १५० सम्बन्धियों और मित्रों ने भाग लिया। पति-पत्नी के आदर्श जीवन के सम्बन्ध में अनेक वक्ताओं ने अपनी सुमनांजलियां अर्पित कीं।

डा० सूद कालगरी आने के बाद से हिन्दू समाज के कार्यों में सक्रिय रुचि लेते रहे हैं।

इस अवसर पर इंडिया-कनाडा असोशियेशन, रानी एलिजाबेथ, कनाडा के गवर्नर-जनरल व प्रधानमन्त्री और अनेक मित्रों ने उन्हें बधाई सन्देश भेजे।

डा० सूद जन-ज्ञान में लिखते रहते हैं। उन्होंने खुशी के इस मौके पर दयानन्द संस्थान को १००० रु० भेंट किये।

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समाजसेविका स्वर्गीया श्रीमती सत्या सेठ को आर्य (हिन्दू) नेताओं की भावभीनी श्रद्धांजलि

नई दिल्ली। १४ फरवरी रविवार को कीर्तिनगर में समाजसेविका व धार्मिक कृतियों में सक्रिय भूमिका निभाने वाली महिला श्रीमती सत्या सेठ (धर्मपत्नी श्री श्याम-सुन्दर सेठ संचालक पश्चिम दिल्ली आर्यवीर दल व मन्त्री अ० भा० जनसंघ) के देहान्त पर एक शोकसभा महात्मा वेदभिक्षु: संचालक दयानन्द संस्थान व अध्यक्ष अ० भा० हिन्दू रक्षा समिति की अध्यक्षता में हुई, जिसमें सर्वश्री सरदारीलाल वर्मा प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य नेता सोमनाथ मरवाह एडवोकेट, महाशय धर्मपाल प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा, ओम्प्रकाश आर्य मन्त्री महाशय चुन्नीलाल धर्मार्थ ट्रस्ट, डा० वेदप्रकाश (देहरादून), प्रो० बलराज मधोक, प्रो० राम सिंह, पी० के० हरिवंश पत्रकार, दिल्ली प्रदेश स्वतन्त्रता सेनानी संघ के प्रधान श्री राम लुभाया चानना, श्री हरदयाल देवगुण भूतपूर्व सांसद, आचार्य हरिदेव आदि विभिन्न आर्यसमाजों व संस्थाओं के प्रधानों और मन्त्रियों ने श्रद्धांजलि प्रकट की।

शहीद-ए-आजम व महान् क्रान्तिकारी भगतसिंह के भाई श्री कुलवीरसिंह पूर्व विधायक व उनके भतीजे श्री जोरावर सिंह आदि अनेक नेताओं ने दिवंगतआत्मा की तुलना "देवी" से करते हुए उनके व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डाला। देश-भर से दूर दराज समाज सेवी संस्थाओं, राजनीतिक दलों के नेताओं व कार्यकर्ताओं ने शोक सभा में पहुंचकर समवेदना प्रकट की। हजारों नरनारियों ने सम्मिलित होकर दिवंगतआत्मा को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। अनेक केन्द्रीय मन्त्रियों, सांसदों, वरिष्ठ उद्योगपतियों और व्यवसायिओं ने शोक सन्देश भेजे।

प्रत्येक हिन्दू संगठित होकर राष्ट्र रक्षा का संकल्प लें

मुद्रक-प्रकाशक, सम्पादक—पण्डिता राकेशरानी के लिए आर्यधन प्रिंटिंग एजेन्सी द्वारा सैनी प्रिन्टर्स, पहाड़ी धीरज, दिल्ली-११०००६ से प्रकाशित।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi